सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 217, नई दिल्ली, मंगलवार 14 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

आत्म-विश्वास : अपने अंदर की प्रतिभा और क्षमताओं पर विश्वास रखें, क्योंकि यह सफलता की पहली सीढ़ी है।

03 स्पेस मिशन–2025' का हुआ औपचारिक उद्घाटन

06 कपास: पर्यावरण लचीलापन के साथ समृद्धि बुनाई

08 पंजाब सरकार ने निभाया वादा, सिर्फ़ 30 दिनों में सबसे ज़्यादा मुआवजा देकर रचा इतिहास

दिल्ली परिवहन विभाग दिल्ली में सब्सिडी स्कीम लागू होने के बावजूद पिछले 4 सालों से ई वाहन खरीदने वाले वाहन मालिकों को सब्सिडी के तहत मिलने वाली राशि नहीं दे रहा, आखिर क्यों ?

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली में ई वाहनों को प्रमोट करने के उद्देश्य से दिल्ली सरकार द्वारा ई वाहन पर सरकार की तरफ से सब्सिडी राशि घोषित की हुई है और उसके बावजूद पहले हजारों मालिकों को वह सब्सिडी राशि यह कहकर परिवहन विभाग ने नहीं दी थी की सब्सिडी राशि देने वाला विभाग बदल गया है और पूर्व विभाग जिसे सब्सिडी राशि देनी थी उससे राशि प्राप्त नहीं होने के कारण यह राशि नहीं दी गई जब की ई वाहन खरीदने वाले की इसमें क्या गलती है यह भी नहीं सोचा और समझा।

उसके बाद फिर से नए ई वाहन खरीदने वालों को सब्सिडी राशि देनी शुरू की और फिर कुछ महीनों बाद फिर से अपना रंग दिखा कर सब्सिडी राशि देना रोक लिया।

दिल्ली सरकार की तरफ से सब्सिडी स्कीम लागू है और सब्सिडी देने वाला विभाग भी इस बार बदला नहीं गया तो फिर जनता को सरकार द्वारा स्कीम के तहत मिले सब्सिडी राशि का भुगतान क्यों नहीं किया जा रहा।

क्या सरकार झूठी सब्सिडी स्कीम की घोषणा करके ई वाहनों को बिकवाने में सलग्न है जिसकी आशा कम होती हैं तो फिर कौन है जिम्मेदार उन जनता को धोखा देने वाला या उनकी सब्सिडी राशि ना देने वाला, बड़ा सवाल जिसकी जांच आवश्यक हैं।

दिल्ली में दो पहिया ई वाहन और ई रिक्शा के साथ ई कार्ट लोडिंग खरीदने वाले वो अधिकतर लोग हैं जिन्हें उस सब्सिडी राशि का लालच ने घेरा और मन ई वाहन खरीदने पर बनवाया और

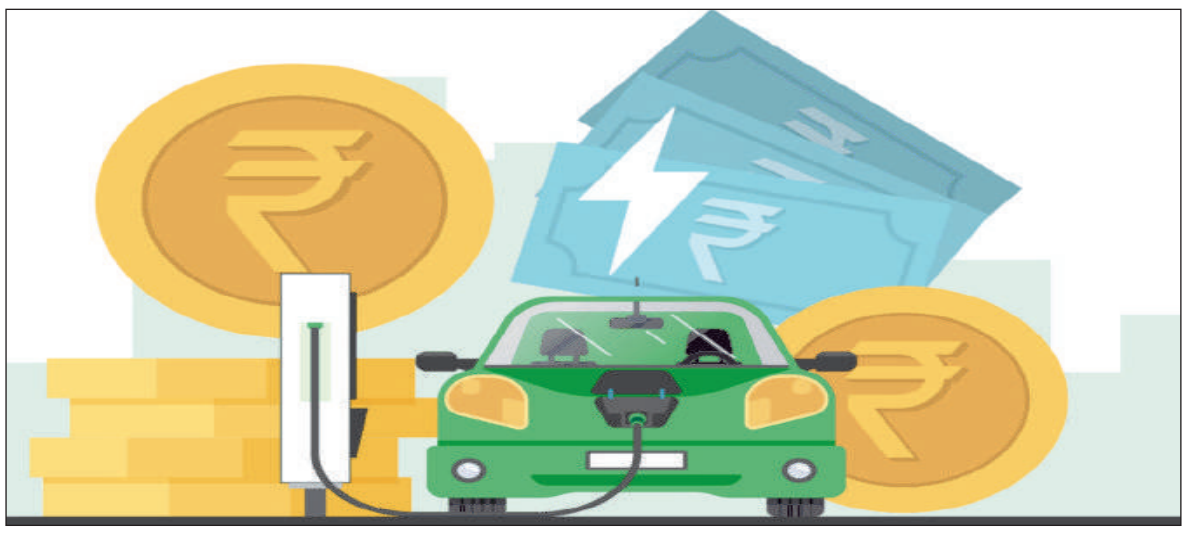

परिवहन विभाग द्वारा उनको वह सब्सिडी राशि ही नहीं दी गई।

दिल्ली में एक दो पहिया ई वाहन ओला कंपनी से खरीदा जिसका नंबर डी एल 4जीडी 9006 है के द्वारा जिस दिन से वाहन खरीदा है वह सब्सिडी के लिए आवेदन करने का प्रयास कर रहा है और साथ ही बार बार विभाग को मेल द्वारा अपनी शिकायत दर्ज करवा रहा है। उसके द्वारा अभी तक की अंतिम शिकायत एलजी पोर्टल पर 22 सितंबर 2025 दर्ज कराई गई जिसका नंबर 2025021613 है। जिसके **जवाब में वाहन मालिक को परिवहन विभाग द्वारा सुचित किया गया की दिल्ली ईवी खरीद प्रोत्साहन पोर्टल के अनुसार वाहन संख्या DL -4GD - 9006 के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं मिली है। आवेदक को सलाह दी जाती हैं की वह ईवी खरीद प्रोत्साहन पोर्टल पर आवेदन करने हेतू डीलर से संपर्क करें**

अब सवाल यह उठता हैं की जब परिवहन विभाग द्वारा ईवी खरीद प्रोत्साहन पोर्टल को ही स्कीम की घोषणा के बावजूद बन्द कर रखा है तो उस पर आवेदन हो कैसे सकता है और जिन ई वाहन मालिकों ने उस पर जब वह पोर्टल कार्यरत था तब आवेदन कर दिया था तो उनको भी अब तक सब्सिडी राशि क्यों नहीं पहुंची ?

दिल्ली की जनता के साथ विश्वासघात और धोखा दोनों एक साथ किया जा रहा है और देखने सुनने और पूछने वाला कोई नहीं, आखिर क्यों ?

उपराज्यपाल शिकायत पोर्टल पर दर्ज शिकायत यह सिद्ध करने के लिए क्या काफी नहीं की जानकारी दिल्ली उपराज्यपाल तक है फिर भी परिवहन विभाग द्वारा ऐसा कृत्य वह जनता और जनता के विश्वाश के साथ।

कहा जाए जनता जब दिल्ली सरकार और दिल्ली के उपराज्यपाल ही स्वयं मूक बन जाए तो।

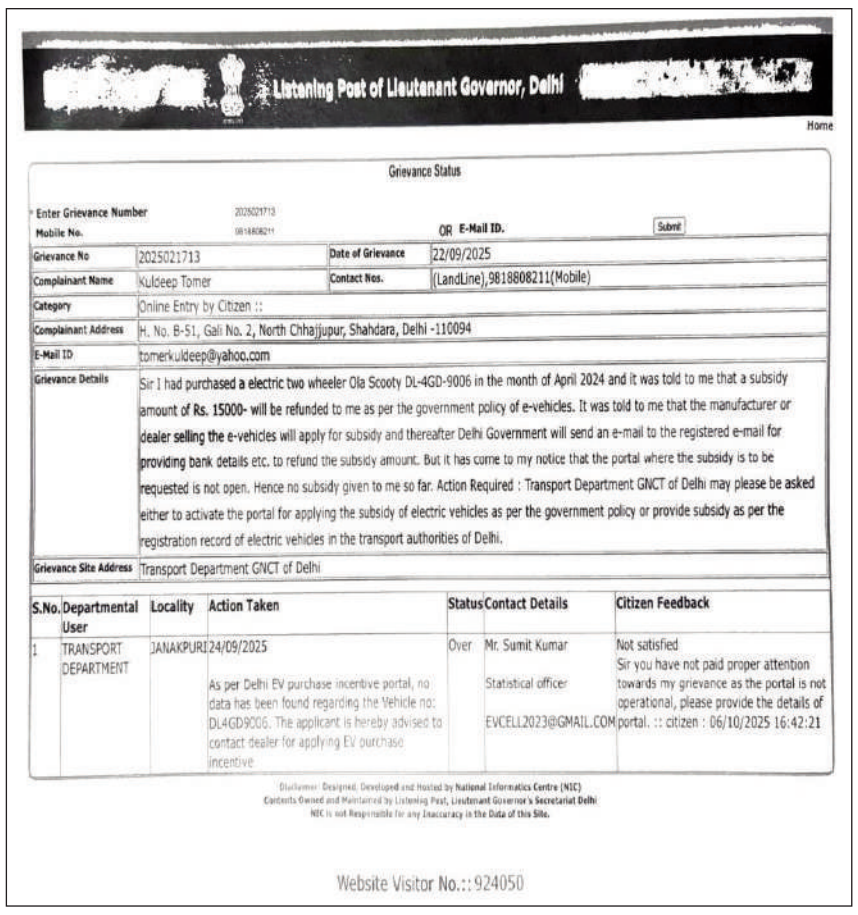

ड्राइवर आयोग और बॉर्डर पर हो रही अवैध वसूली के संबंध में कराया अवगत

परिवहन विशेष न्यूज

सड़क परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी जी के सचिव श्री कुणाल जी को पत्राचार के माध्यम से ड्राइवर आयोग और बॉर्डर पर हो रही अवैध वसूली के संबंध में सूचित किया गया। पत्र में यह अवगत कराया गया कि अवैध वसूली को तत्काल बंद किया जाए।

इस अवसर पर झारखंड, छत्तीसगढ़, बिहार, असम, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, दिल्ली NCR सहित सभी प्रदेशों की ड्राइवरों से जुड़ी समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की गई। यह जानकारी सहयोगी साथियों द्वारा अपने संगठन के लेटर पैड पर प्रस्तुत की गई थी।

राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति ने स्वयं निरीक्षण कर पाया कि खवासा बॉर्डर, जबलपुर बॉर्डर, रीवा बॉर्डर, हनुमाना बॉर्डर, चारघाट बॉर्डर, बिहार का मोहनिया बॉर्डर, डोभी बॉर्डर, महाराष्ट्र बॉर्डर समेत कई स्थानों पर ड्राइवरों के साथ खुलेआम शोषण और लूट-पाट हो रही है।

ड्राइवरों को मुख्य रूप से निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है:

1. मनमानी वसूली: विभिन्न राज्यों से लगने वाले बॉर्डर चेकपोस्ट पर ड्राइवरों से अनावश्यक वसूली की जाती है।

2. पुलिस की लापरवाही: पुलिस की उचित कार्रवाई न होने के कारण ड्राइवरों की सुरक्षा प्रभावित होती है।

3. लूट और चोरी: रात के समय बदमाश खुलेआम चोरी और लूटपाट करते हैं।

4. सुविधाओं की कमी: प्लांट एरिया और बॉर्डर पर ड्राइवरों के लिए पार्किंग और अन्य आवश्यक सुविधाओं का अभाव है।

5. ओनरों की मनमानी: वाहन मालिक समय पर वेतन का भुगतान नहीं करते, और हाजिरी/तनख्वाह के कोई निश्चित नियम नहीं होते।

6. गाड़ियों की खराब स्थिति: ड्राइवरों को खराब स्थिति में वाहन चलाने के लिए मजबूर किया जाता है।

इन समस्याओं के समाधान और ड्राइवरों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति सक्रिय रूप से सरकार और संबंधित अधिकारियों से संवाद कर रही है।

राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति

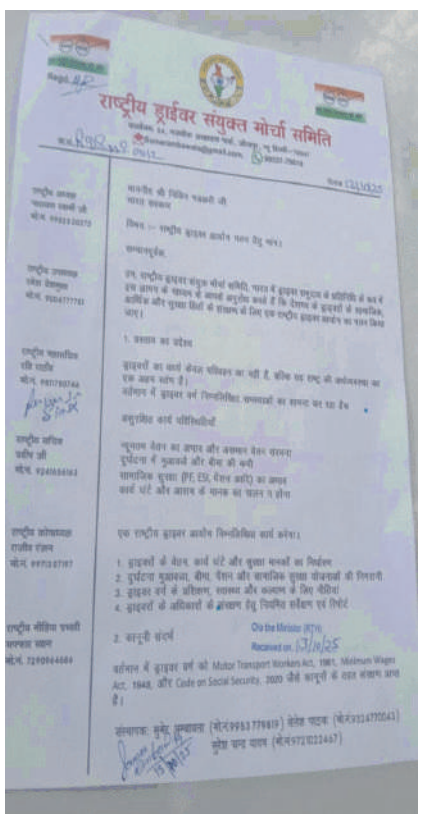

"DTC बचाओ अभियान" आठवां दिन

नई दिल्ली संवाददाता - पंकज शर्मा

DTC बचाओ अभियान के आठवें दिन सोमवार को भारतीय मजदूर संघ के पदाधिकारी व अन्य कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों के द्वारा दिल्ली के सभी 70 विधायकों को डीटीसी कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों की मांगों का ज्ञापन देने की कड़ी में आज मुस्तफाबाद विधानसभा से विधायक श्री मोहन सिंह बिष्ट जी एवं शाहदरा विधानसभा क्षेत्र से विधायक श्री संजय गोयल जी ज्ञापन देकर समस्याओं से अवगत कराया गया,

आज दिल्ली परिवहन निगम के बेड़े में बसें समाप्त हो चुकी हैं, दिल्ली की पब्लिक के लिए समस्या विकट होती जा रही है, घंटों सड़कों पर लोग इंतजार कर रहे हैं BMS द्वारा परिवहन निगम तथा DTC कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों के लिए यह सराहनीय कार्य किया जा रहा है, डीटीसी के सभी कांटेक्ट कर्मचारी यह पत्र जल्दी से जल्दी निपटाना चाहते हैं एवं यूनियन के पदाधिकारी द्वारा सभी कर्मचारियों को सूचना दी गई कि जल्द से जल्द अपनी विधानसभा में जाकर अपने क्षेत्र के विधायकों को यह पत्र देने का कार्य पूर्ण किया जाए, दिल्ली के सभी 7 सांसद एवं 70 विधानसभा के विधायको को पत्र ज्ञापन सौंपने के 10 दिन तक अगर दिल्ली

सरकार कोई भी ठोस कदम DTC कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों की मांगों के लिए नही उठाती है तो DTC की सभी यूनियन BMS यूनियन के साथ आर पार की लड़ाई के लिए तैयार है, यूनियन द्वारा सरकार को बार-बार चेताए जाने के बावजूद भी सरकार मामले को संज्ञान नहीं ले रही है, मजबूरन अपनी मांगों को लेकर धरने पर बैठने की चेतावनी देते हुए पदाधिकारी द्वारा कहा गया कि परिवहन विभाग में कार्य कर रहे सभी कांटेक्ट कर्मचारी धरने पर जाने से परिवहन निगम ठप हो जाएगी और लगभग 40 लाख लोगों पर प्रभाव पड़ेगा इसलिए नहीं चाहते कोई भी ऐसा कदम उठाना पड़े !

दिल्ली परिवहन मजदूर संघ प्रदेश कार्यालय अजमेरी गेट दिल्ली 110006

1. अध्यक्षः गूगन सिंह
2. महामंत्रीः भानु भास्कर

केएमपी एक्सप्रेसवे की जर्जर हालत और अनुचित उच्च टोल वसूली के खिलाफ उफ्तत्सा राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा का कड़ा विरोध; तत्काल सुधार की मांग के साथ सख्त चेतावनी जारी

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: उफ्तत्सा राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने आज कुंडली- मानेसर-पलवल (केएमपी) एक्सप्रेसवे की दयनीय दुरावस्था और अनुचित रूप से उच्च टोल वसूली को लेकर तीव्र विरोध दर्ज कराया है। यह 136 किलोमीटर लंबा एक्सप्रेसवे, जो दिल्ली के आसपास का एक महत्वपूर्ण बाईपास मार्ग है, वर्ष 2016 से चालू होने के बावजूद अब गड्ढों, दरारों और खराब रखरखाव की वजह से मौत का जाल बन चुका है। विशेष रूप से मानेसर से पलवल तक का 53 किलोमीटर स्ट्रेच सबसे जर्जर है, जहां सड़क जगह-जगह धंस गई है, अवैध कट्स मौजूद हैं और बड़े-बड़े गड्ढे 4-5 फिट तक लम्बे चौड़े वाहनों के लिए घातक साबित हो रहे हैं। डॉ. यादव ने इस मुद्दे पर एक कड़ी चेतावनी जारी करते हुए कहा कि यदि संबंधित अधिकारी, जैसे एनएचएआई और ठेकेदार, तत्काल सुधार नहीं करते, तो मोर्चा राष्ट्रव्यापी आंदोलन छेड़ने को बाध्य होगा, जिसमें ट्रक परिवहन पूरी तरह ठप हो सकता है और देश की आपूर्ति श्रृंखला प्रभावित होगी।

डॉ. राजकुमार यादव ने प्रेस विज्ञप्ति में विस्तार से बताया, ₹केएमपी एक्सप्रेसवे, जो सोनीपत से पलवल तक फैला है, ट्रक चालकों और परिवहन कर्मियों के लिए रोजाना चुनौती बना हुआ है। हाल के महीनों में, विशेषकर गुरुग्राम से पलवल की ओर, सड़क की हालत इतनी खराब है कि वाहन चालक गड्ढों से बचने की कोशिश में दुर्घटनाओं का शिकार हो रहे हैं।

रिपोर्ट्स के अनुसार, इस मार्ग पर चोरी हुई बैरियर, अवैध ढाबे और रेस्ट एरिया की कमी के कारण घातक दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं, जिससे मौतों की संख्या में वृद्धि हो रही है। उदाहरण के लिए, 2023 से अब तक की रिपोर्ट्स में साफ है कि खराब रखरखाव के कारण सड़क क्षतिग्रस्त हो गई है, जबकि भारी टोल फीस वसूली जा रही है। ऊपर से, टोल रेट्स अनुचित रूप से ऊंचे हैं – ट्रकों के लिए एक तरफा यात्रा पर 700 रुपये से अधिक का टोल लिया जा रहा है, लेकिन सड़क की गुणवत्ता इसके अनुरूप नहीं है। यह न केवल ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथियों का आर्थिक शोषण है, बल्कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर बोझ है, क्योंकि माल परिवहन की लागत बढ़ने से महंगाई प्रभावित होती है।"

उन्होंने आगे जोर देते हुए कहा, "हरियाणा सरकार ने सितंबर 2025 में मानेसर-पलवल स्ट्रेच के लिए 48 करोड़ रुपये की मरम्मत योजना की घोषणा की थी, जिसमें अवैध कट्स बंद करना और गड्ढे भरना शामिल है, लेकिन अक्टूबर 2025 तक कोई ठोस प्रगति नहीं हुई है। मार्च 2025 में भी इसी स्ट्रेच को फेसलिफ्ट देने की बात हुई थी, लेकिन उच्च टोल वसूली लगातार जारी है जबकि रखरखाव नगण्य है। सोशल मीडिया पर चालकों की शिकायतें बाढ़ सी आई हुई हैं, जहां वे कह रहे हैं कि मुंबई एक्सप्रेसवे एग्जिट से पलवल तक सड़क नौ महीनों से जर्जर है और टोल वसूली बंद होनी चाहिए। यदि 15 दिनों के अंदर केएमपी की तत्काल मरम्मत नहीं की गई, टोल दरों को यथोचित रूप से कम नहीं किया गया और ठेकेदारों पर सख्त कार्रवाई नहीं हुई, तो "उफ्तत्सा" राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) राष्ट्रव्यापी हड़ताल और विरोध प्रदर्शन आयोजित करेगा। इसमें लाखों ट्रक चालक शामिल होंगे, जिससे देश की लॉजिस्टिक्स चेन ठप हो सकती है। सरकार और एनएचएआई इस चेतावनी को हल्के में न लें – हमारा संघर्ष न्यायपूर्ण, तथ्य-आधारित और अटल है।"

डॉ. यादव ने अपील की कि सभी ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी, परिवहन संघ और प्रभावित नागरिक इस मुद्दे पर एकजुट हों और अपनी आवाज बुलंद करें। मोर्चा इस मामले को विभिन्न मंचों और जनता के बीच ले जाने की तैयारी कर रहा है, साथ ही सड़क सुरक्षा अध्ययन के आधार पर और अधिक प्रमाणिक दस्तावेज जमा करेगा।

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

SCAN ME

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063

कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

आज मंगलवार को शुभ योग का संयोग, हनुमान की विशेष पूजा से दूर होंगे सारे कष्ट

मंगलवार के दिन अंजनी पुत्र हनुमानजी का व्रत रखकर पूजा अर्चना करने से सभी परेशानियों से मुक्ति मिलती है और जीवन के हर क्षेत्र में लाभ मिलता है. मंगलवार के दिन कई शुभ योग बन रहे हैं, इन शुभ योग में हनुमानजी की पूजा करने का विशेष फल प्राप्त होता है. आइए जानते हैं मंगलवार के दिन का महत्व और हनुमानजी की पूजा कैसे करें...

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि को मंगलवार को आडल योग और सिद्ध योग का संयोग पड़ रहा है, जिससे इस दिन का महत्व और भी बढ़ गया है. मंगलवार को रामभक्त हनुमानजी की पूजा अर्चना करने से सभी कष्ट व परेशानियों से मुक्ति मिलेगी और कुंडली में मंगल ग्रह की स्थिति मजबूत होती है. मंगलवार के दिन का व्रत रखकर हनुमानजी को चोला और सिंदूर अर्पित करने से साहस, बल, ज्ञान और शक्ति में वृद्धि होती है और भय, रोक, भूत-प्रेत जैसी नकारात्मक शक्तियों से छुटकारा मिलता है. आइए जानते हैं मंगलवार के दिन हनुमानजी की पूजा का महत्व और पूजा विधि.

मंगलवार 2025 का पंचांग

द्रिक पंचांग के अनुसार, अभिजीत मुहूर्त सुबह 11 बजकर 44 मिनट से शुरू होकर दोपहर 12 बजकर 30 मिनट तक रहेगा और राहुकाल का समय दोपहर 3 से शुरू होकर 4 बजकर 26 मिनट तक रहेगा. अष्टमी का समय 13 अक्टूबर दोपहर 12 बजकर 24 मिनट से शुरू होकर 14 अक्टूबर सुबह 11 बजकर 9 मिनट तक रहेगा. मंगलवार को कोई विशेष त्योहार या व्रत नहीं है, लेकिन मंगल ग्रह के नियंत्रक के लिए जातक मंगलवार का व्रत रख सकते हैं. इस दिन सूर्य कन्या राशि में और चंद्रमा कर्क राशि में रहेंगे. इस दिन सिद्ध योग और साध्य योग बन रहा है. साथ ही चंद्रमा पुनर्वसु नक्षत्र से होते हुए पुष्य नक्षत्र में संचार करेंगे.

हनुमानजी की पूजा का महत्व

स्कंद पुराण में उल्लेख मिलता है कि मंगलवार के दिन बजरंगबली का जन्म हुआ था, जिस वजह से इस दिन उनकी पूजा का महत्व और भी ज्यादा बढ़ जाता है. रामभक्त हनुमान को मंगल ग्रह के नियंत्रक के रूप में पूजा जाता है. मान्यता है कि इस दिन व्रत रखने और हनुमान जी की विधि-विधान से पूजा करने से जीवन के कष्ट, भय और चिंताएं दूर हो जाती हैं. साथ ही, मंगल ग्रह से संबंधित बाधाएं भी समाप्त होती हैं.

हनुमानजी की पूजा विधि

इस दिन विधि-विधान से पूजा करने के लिए ब्रह्म मुहूर्त में उठकर नित्य कर्म-स्नान आदि करने के बाद पूजा स्थल को साफ करें. फिर एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाएं और पूजा की सामग्री रखें और उस पर अंजनी पुत्र की प्रतिमा स्थापित करें. इसके बाद सिंदूर, चमेली का तेल, लाल फूल और प्रसाद चढ़ाएं. हनुमान चालीसा या सुंदरकांड का पाठ कर बजरंगबली की आरती करें. इसके बाद आरती का आचमन कर आसन को प्रणाम करके प्रसाद ग्रहण करें. शाम को भी हनुमान चालीसा या सुंदरकांड का पाठ करना शुभ माना जाता है. मान्यता है कि लाल रंग मंगल ग्रह का प्रतीक है. इस दिन लाल कपड़े पहनना और लाल रंग के फल, फूल और मिठाइयां अर्पित करना शुभ माना जाता है. इस पावन दिन पर हनुमान जी की आराधना कर जीवन में सुख-समृद्धि और शांति की कामना करें.

मदर पब्लिक स्कूल में बच्चों और विद्यालय प्रबंधन को दी गई यातायात नियमों की जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूं शहर. मदर पब्लिक स्कूल बदायूँ में यातायात के नियमों की जानकारी देते हुए टी.एस.आई. नासिर हुसैन के साथ में कांस्टेबल सचिन कांस्टेबल धीरेंद्र कांस्टेबल रमेश और बच्चों को भी जानकारी दी गई।

इस मौके पर मदर पब्लिक स्कूल की प्रधानाचार्य डॉ. दीपशिखा एवं एडवोकेट सैयद कासिम तथा शिवम और साथ ही स्कूल के समस्त ड्राइवरों को एकत्र कर यातायात के नियमों के बारे में जानकारी दी गई तथा यातायात के नियमों का पालन करने की शपथ दिलाई।

एक और मौत.... बदायूं में एक और भीषण सड़क हादसा....

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूं : एक और मौत.... ? अभी-अभी बदायूं में एक और भीषण सड़क हादसा.... बताया जा रहा है रोडवेज बस की टक्कर से बाइक सवार युवक काल के गाल में समा गया .... बताया जा रहा है बदायूं उझानी मार्ग पर बालाजी मंदिर के पास सड़क हादसा हुआ... रोडवेज बस ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी...एक बाइक सवार युवक की पर मौत हो गई..... ! घायल को मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है.... सिविल लाइन थाना क्षेत्र का मामला....

सनातन बोर्ड हुआ रजिस्टर्ड, घुसपैठ और बदलती जनसांख्यिकी देश के लिए खतरा

–माता–पिताओं के जागरूक हुए बिना नहीं रुकेगा लव जिहाद

–देश रक्षा के बाद रिटायर्ड सैनिक अब करेंगे समाज की रक्षा

परिवहन विशेष न्यूज

12–10–25 दिन रविवार को अखिल भारतीय सनातन बोर्ड की जिला स्तरीय बैठक का आयोजन दातागंज रोड स्थित पटेल गार्डन में हुआ।

सनातन बोर्ड अध्यक्ष श्री जितेंद्र कुमार साहू ने सभी कार्यकर्ताओं को हर्ष के साथ बताया कि संगठन का रजिस्ट्रेशन करा लिया गया है संगठन को अब कानूनी व वैधानिक मान्यता प्राप्त हो गई है

अब हिंदू समाज की आवाज बनकर जनता के कार्यों को प्रमुखता से कराया जाएगा

–लव जिहाद और धर्मांतरण जैसे विषयों पर प्रताड़ित हिंदू समाज को मिलेगी अब राहत

– संरक्षक श्री सत्यनारायण गुप्ता ने बताया कि आजादी से आज तक जिला बदायूं पर बाहरी नेताओं ने राज किया, जिससे बदायूं विकास कार्यों से पूरी तरह उपेक्षित रहा है बरेली मंडल के सभी जिलों में रेलवे जंक्शन बन चुका है लेकिन बदायूं आज तक उपेक्षित है, अब सनातन बोर्ड जिले में रेलवे जंक्शन बनाने की मांग पूरी ताकत से उठाएगा

–गौरखा विभाग से श्री विकेंद्र शर्मा ने बताया, कि गाय को माता मानने वाला हिंदू समाज गौ रक्षा के कार्य करने में निष्क्रिय है

सरकार द्वारा किए जा रहे हैं प्रयास काफी नहीं है ,सड़कों पर घूमते गौवंशो से आम जनता और किसानों को परेशानी होती है

–सैनिक कल्याण बोर्ड के प्रांतीय महासचिव श्री सत्यवीर सिंह ने बताया कि प्रताड़ित हिंदू समाज लंबे समय से सनातन बोर्ड के गठन की प्रतीक्षा में था –हिंदू समाज की समस्याओं के निराकरण के दृष्टि से सनातन बोर्ड का रजिस्ट्रेशन कराना एक ऐतिहासिक कदम है और जिले के सभी रिटायर्ड सैनिक समाज हित में सनातन बोर्ड के साथ कार्य करने को तत्पर रहेंगे

श्री रवि वाल्मीकि जी ने बताया कि बॉर्डर से हो रही घुसपैठ और जिलों में बदलती जनसांख्यिकी ,देश के लिए बड़ा खतरा है, समय रहते केंद्र सरकार को इस विषय पर आवश्यक कठोर कानून बनाना चाहिए,

–नारी शक्ति विभाग अध्यक्षा श्रीमती रचना संखधार जी ने लव जिहाद चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि माता-पिता का जागरुक ना होना एक मुख्य कारण है

– परिवार प्रबोधन के विषय पर बोलते हुए एडवोकेट श्री अश्वनी भारद्वाज ने मोबाइल फोन के अनावश्यक उपयोग पर चिंता व्यक्त करते हुए बताया की परिवार के पुरुष कम से कम रोजाना शाम के समय बच्चों के साथ भोजन करें और भारत देश के इतिहास और वीर योद्धाओं की कहानी उनको अवश्य सुनाएं

–संगठन मंत्री डॉ सुशील गुप्ता ने हिंदू समाज हित में कार्य करने की इच्छुक सभी कार्यकर्ताओं से सनातन बोर्ड से अति शीघ्र जुड़ने का आवाहन किया है।

वैदिक सनातन संस्कृति के परम उपासक थे सन्त प्रभुदत्त ब्रह्मचारी महाराज : भागवताचार्य गोपाल भैया महाराज

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। वंशीवट क्षेत्र स्थित संकीर्तन भवन में श्रीसंकीर्तन भवन धार्मिक न्यास ट्रस्ट के तत्वावधान में चल रहा ब्रह्मलीन संत प्रवर प्रभुदत्त ब्रह्मचारी महाराज का 136वां प्रादुर्भाव महोत्सव अत्यंत श्रद्धा व धूमधाम के साथ संपन्न हुआ।जिसके अंतर्गत सप्त दिवसीय श्रीभागवत चरित पारायण, फूल बंगला दर्शन, बधाई गायन, संतप्रवर प्रभुदत्त ब्रह्मचारी महाराज की प्रतिमा का पंचामृत से अभिषेक एवं सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा (वृहद भंडारा) आदि कार्यक्रम भी संपन्न हुए।

इस अवसर पर आयोजित संत-विद्वत सम्मेलन में धीर समीर आश्रम के अध्यक्ष श्रीमहंत मदन मोहन दास महाराज ने कहा कि गोलोकवासी संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी महाराज संत समाज के गौरव थे।वे ऐसे महापुरुष थे,जो भगवद आज्ञानुसार इस धरा पर मानव कल्याण के लिए अवतरित होते हैं और उन्ही के इच्छा से यहां से चले जाते हैं।ऐसे दिव्य संतों का दर्शन सदैव ही मंगलकारी होता है।

पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री एवं भागवताचार्य डॉ. अशोक शास्त्री ने कहा कि संत प्रवर प्रभुदत्त ब्रह्मचारी महाराज की गौ भक्ति, विप्र भक्ति व संत भक्ति प्रणम्य है।वे भगवद स्वरूप थे।वह धर्म व अध्यात्म जगत की बहुमूल्य निधि हैं।

भागवताचार्य गोपाल भैया महाराज व श्रीसंकीर्तन भवन धार्मिक न्यास ट्रस्ट के ट्रस्टी आचार्य विनय त्रिपाठी ने कहा कि हमारे सदगुरुदेव वैदिक सनातन संस्कृति के परम उपासक, राष्ट्र हित चिन्तक व गौभक्त संत थे। उन्होंने धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज के साथ रहकर गौहत्या आन्दोलन का नेतृव किया था।

"यूपी रत्न" डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं श्रीराम कथा मर्मज्ञ अशोक व्यास रामायणी ने कहा कि संत शिरोमणि प्रभुदत्त ब्रह्मचारी महाराज अत्यंत तपस्वी व सिद्ध संत थे।उन्होंने अपने तप व साधना की शक्ति से असंख्य व्यक्तियों का कल्याण कर उन्हें प्रभु भक्ति के मार्ग से जोड़ा।ऐसे संत कभी-कभार ही पृथ्वी पर अवतार लेते हैं।

इस अवसर पर प्रख्यात भागवताचार्य अनुराग कृष्ण शास्त्री (कन्हैया जी), मुकेश मोहन शास्त्री, पण्डित सुरेश चन्द्र शास्त्री, श्याम सुन्दर ब्रजवासी, आचार्य अंशुल पाराशर, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, प्रवीण त्रिपाठी, आदि के भी अपने विचार व्यक्त किए।संचालन डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने किया।

'आप' के दावों पर मंत्री आशीष सूद ने लगाई मुहर, भाजपा सरकार का सफाई अभियान महज नाटक था - अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली को कूड़े से आजादी दिलाने को लेकर भाजपा सरकार द्वारा चलाए गए अभियान की खुद भाजपा सरकार के मंत्री आशीष सूद ने ही पोल खोल दी है। सड़कों पर फैले कूड़े के ढेर देख कर आशीष सूद द्वारा नाराजगी जताने पर आम आदमी पार्टी के एमडीजी में नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने भाजपा को आड़े हाथ लिया है। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी लगातार भाजपा सरकार के अभियान को फोटो शूट और दिखावा करने का दावा कर रही थी और अब तो भाजपा के मंत्री ने ही उनके दावे पर मुहर लगाते हुए कहा है कि सरकार का सफाई अभियान महज एक नाटक था। मंत्री आशीष सूद का सड़कों पर कूड़े के ढेर देख सरकार के सफाई अभियान के प्रति असंतुष्टि जाहिर करना प्रशंसनीय है। मैने कई इलाकों का दौरा कर सड़कों पर पड़े कूड़े का ढेर दिखाया है लेकिन भाजपा मानने को तैयार ही नहीं थी।

अंकुश नारंग ने कहा कि मैं भाजपा मंत्री आशीष सूद की प्रशंसा करता हूं, जिन्होंने सड़कों पर फैले कूड़े को लेकर सच्चाई बयान की है। मैं अक्सर सदन, मीटिंग और प्रेस वार्ताओं में बताता था कि भाजपा का यह सफाई अभियान दिल्ली को कूड़े से आजादी नहीं, बल्कि कूड़े को आजादी देने वाला अभियान है। आशीष सूद ने भी सड़कों पर हर जगह कूड़े के ढेर देखे, जो वल्नरेबल पॉइंट्स में तब्दील हो चुके हैं, इसलिए उन्होंने स्पष्ट कहा कि वे इस सफाई अभियान से बिल्कुल संतुष्ट नहीं हैं। जो तस्वीरें जारी की गईं, वे महज फोटो ऑप्स थीं। साफ सड़कों पर कर्मठ सफाई कर्मचारियों के काम के बाद दोबारा सफाई का नाटक किया गया।

उन्होंने कहा कि आशीष सूद ने भी बता दिया कि दिल्ली की सफाई व्यवस्था से वे भी खुश नहीं हैं। भाजपा वालों का यह अभियान 1 अगस्त से 2 अक्टूबर तक चला, जिसमें एमसीडी ने भी हिस्सा लिया, लेकिन कहीं भी संतोषजनक परिणाम नहीं आए। न सड़कें साफ हुईं, बल्कि कूड़े के ढेर और बढ़ गए। वल्नरेबल पॉइंट्स में कूड़ा खूब भर गया। भाजपा सरकार ने न तो गाद निकाली, न एमसीडी नालों की सफाई की। यह महज एक आई-वॉश था, जिसे महापौर राजा इकबाल सिंह और स्टैंडिंग कमेटी चेयरमैन करना चाहते थे। वे दिल्ली की जनता को और दिल्ली सरकार को बेवकूफ बनाना चाहते थे।

अंकुश नारंग ने कहा कि आशीष सूद ने महापौर, स्टैंडिंग कमेटी चेयरमैन और नेता सदन को सही फटकार लगाई कि सिर्फ आई-वॉश न करें, गलत तस्वीरें न चलाएं। जबकि दिल्ली की हकीकत बिल्कुल अलग है और हर जगह कूड़ा ही कूड़ा पसरा है। जब भाजपा के अपने मंत्री मानते हैं कि दिल्ली की हर सड़क पर कूड़ा है, हर सड़क वल्नरेबल पॉइंट में तब्दील हो गई है, चाहे सेंट्रल जोन हो, साउथ जोन हो, वेस्ट जोन हो या महापौर का सिविल लाइन जोन हो, तो भाजपा को शर्म आनी चाहिए। उसे दिल्ली की जनता को धोखा नहीं देना चाहिए। जनता ने विश्वास के साथ सातों सांसद, 48 विधायक और एमसीडी में भी भाजपा को सत्ता सौंपी है।

उन्होंने कहा कि मैं अपने दौरे के दौरान मजलिस पार्क, निरंकारी ग्राउंड, कादीपुर, बुराड़ी, वजीराबाद, रामघाट सहित कई अन्य जगहों में कूड़े की तस्वीरें दिखाता रहा हूं। इनमें से कुछ महापौर राजा इकबाल सिंह का अपना इलाका है। बाकी जोनों की हालत इससे भी कहीं ज्यादा बदतर होगी। जब महापौर अपना इलाका, अपना क्षेत्र और अपना जोन साफ नहीं करा सकते, तो मुझे नहीं लगता कि वे दिल्ली को भी साफ करवा पाने में सक्षम हैं।

लायंस क्लब दिल्ली वेज का 'वन पॉज़िटिव मैसेज चैलेंज'

सुषमा रानी

लायंस क्लब दिल्ली वेज ने अपने चार्टर प्रेसिडेंट लायन डॉ. गौरव गुप्ता के नेतृत्व में एआईआईएमएस पावरग्रिड विश्राम सदन (भाऊराव देवरस सेवा न्यास), अंसारी नगर पश्चिम, नई दिल्ली में प्रेरणादायक कार्यक्रम 'वन पॉज़िटिव मैसेज चैलेंज' का आयोजन किया।

यह कार्यक्रम लायंस इंटरनेशनल के ग्लोबल सर्विस वीक ऑन मेंटल हेल्थ एंड वेल-बीइंग के अंतर्गत आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य समाज में सकारात्मकता, आशा और भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना था। इस पहल के माध्यम से प्रतिभागियों को एक सकारात्मक संदेश साझा करने के लिए प्रेरित किया गया, जिससे सामूहिक आशावाद और मानसिक सशक्तिकरण का वातावरण बन सके।

कार्यक्रम का नेतृत्व प्रोजेक्ट चेयरपर्सन लायन रामावतार किला ने किया, जिसमें लायंस क्लब के सदस्यों और विभिन्न क्षेत्रों से आए विशिष्ट अतिथियों ने सक्रिय भागीदारी की। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना और लोगों को अपने समुदायों में सकारात्मकता के दूत बनने के लिए प्रेरित करना था।

लायन संजय कुमार अग्रवाल, अध्यक्ष लायंस क्लब दिल्ली वेज — जो एक TEDx स्पीकर, लेखक और सोसाइटी फॉर मेंटल स्पेस साइकोलॉजी (नीदरलैंड्स) के इंडिया एम्बेसडर भी हैं — ने अपने संबोधन में कहा कि छोटे-छोटे सकारात्मक विचार और कर्म व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य और पारस्परिक संबंधों में बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।

कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों ने अपने दिल से निकले सकारात्मक संदेश साझा किए, जिससे यह भावना और प्रबल हुई कि एक आशा भरा संदेश कई दिलों में रोशनी जगा सकता है और समाज को अधिक स्वस्थ व खुशहाल बना सकता है।

साहित्यकार डॉ. गीतांजलि अरोड़ा को मिला अंतरराष्ट्रीय सम्मान

डॉ. शंभू पंवार

नई दिल्ली। प्रसिद्ध साहित्यकार, लेखिका एवं समाजसेविका डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा 'गीत' को हिंदी-उर्दू अदबी संगम संस्थान द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मान समारोह में "अंतरराष्ट्रीय साहित्यकार सम्मान" से अलंकृत किया गया।

विश्व मैत्री और देश की गंगा - जमुनी तहजीब को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह भव्य समारोह दिल्ली के प्रतिष्ठित ग़ालिब इंस्टीट्यूट में आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता यूएसए से पधारे प्रसिद्ध समाजसेवी डॉ. इंद्रजीत शर्मा ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थीं राजभाषा प्रमुख (पंजाब नेशनल बैंक, दिल्ली) श्रीमती मनीषा शर्मा, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में अंतरराष्ट्रीय ख्यातिनाम साहित्यकार डॉ. सविता चढ़ा, एमसीडी के संयुक्त निदेशक इंजीनियर ए.डब्ल्यू अंसारी एवं श्रीलंका से आईं कवयित्री सुश्री कौशल सुनानी उपस्थित रहीं।

अतिथियों ने डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा को उनके साहित्य, लेखन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मान स्वरूप स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र एवं सम्मान -पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

गीतांजलि काव्य मंच की राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में सक्रिय डॉ. अरोड़ा ने साहित्य, लेखन और सामाजिक सरोकारों के क्षेत्र में निरंतर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपको पूर्व में भी अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

डॉ. अरोड़ा को यह सम्मान मिलने पर धरा धाम प्रमुख एवं मानद कुलपति डॉ. सौरभ पाण्डेय, आकाशवाणी के संयुक्त निदेशक रामावतार बैरवा, वरिष्ठ साहित्यकार दीपशिखा श्रीवास्तव, वीणा अग्रवाल, वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार-विचारक डॉ. शंभू पंवार, सहित अनेक साहित्यिक संस्थाओं, साहित्यकारों एवं बुद्धिजीवियों ने हार्दिक शुभकामनाएं और बधाइयाँ प्रेषित की हैं।

"पत्रकार दीपावली मिलन""केशव पुरम व पश्चिमी विभाग" "दिल्ली प्रांत"

मुख्य संवाददाता

इंद्रप्रस्थ विश्व संवाद केंद्र द्वारा पत्रकार दीपावली मिलन कार्यक्रम का भव्य आयोजन सरस्वती बाल मंदिर राजौरी गार्डन में किया गया। केशव पुरम और पश्चिमी विभाग द्वारा आमंत्रित पत्रकार, सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर्स, लेखक व प्रकाशक बंधुओं व भगनियो ने बड़ी संख्या में अपनी शानदार उपस्थिति दर्ज कराई।

अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख आदरणीय नरेंद्र ठाकुर ने सबको दीपावली की शुभकामनाये देते हुए संघ शताब्दी वर्ष पर परंपरागत तरीके से हर्षोल्लास पूर्वक त्योहार मनाने की बात कही। स्व के भाव के साथ स्वदेशी द्वारा राष्ट्र निर्माण तथा विश्व के सामूहिक पर्यावरण के संरक्षण में सहभागिता व निरंतरता पर बल दिया। पंच परिवर्तन द्वारा समाज को स्वस्थ, स्वच्छ व समरस बनाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि भारतीय चिंतन व दर्शन हमेशा ही सभ्य संसार का मार्गदर्शक रहा है और आज इसे समझने को विश्व उतावला है।

प्रांत कार्यवाह अनिल ने सकारात्मक पत्रकारिता की बात कही जिसमें राष्ट्र प्रथम की भावना हो तथा समाज में सद्भाव बना रहे।

कार्यक्रम में इंद्रप्रस्थ विश्व संवाद केंद्र IVSK के अध्यक्ष अशोक और प्रांत प्रचार प्रमुख रितेश की भी गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का शुभारंभ CCRT के डिप्टी डायरेक्टर दिवाकर दास व साथियों द्वारा संगीतमय स्वागत गान से हुआ।कार्यक्रम के समापन में राष्ट्रगीत वन्देमातरम का गायन भी इन्ही के द्वारा हुआ।

संस्कार भारती से सुमनलता अपनी साथी बहनों के साथ रंगोली व अन्य सज्जा पक्ष बड़ी दक्षता से सम्भाला।संस्कार भारती से आये नवोदित कलाकारों द्वारा कार्यक्रम स्थल से बाहर एक पेंटिंग प्रदर्शनी भी लगाई गई,जिसमे लाइव पेंटिंग भी हुई।

अंत मे सभी ने साथ साथ, पुरानी दिल्ली के चाट-पकोड़ी व विभिन्न प्रकार के अन्य व्यंजनों का आनन्द लिया।

विभाग प्रचार प्रमुख संजीव और सुरेन्द्र द्वारा कार्यक्रम का कुशल संचालन किया गया।

लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ ही नहीं बल्कि अभिन्न अंग है मीडिया- डॉ विजय जौली

संगम विहार में भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ विजय जौली ने दक्षिणी दिल्ली पत्रकार संघ के पदाधिकारियों का किया सम्मान।

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: दक्षिणी दिल्ली के मंगल बाजार रोड, संगम विहार में भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ विजय जौली ने दक्षिणी दिल्ली पत्रकार संघ के पदाधिकारियों का दिवाली मिलन समारोह में स्वागत-सम्मान किया। इस मौक़े पर उन्होंने कहा कि दीपावली मिलन का कार्यक्रम साउथ दिल्ली पत्रकार संघ के साथ एक सफल आयोजन है।

बता दें कि दिवाली मिलन समारोह दिल्ली स्टडी ग्रुप द्वारा आयोजित किया गया।दिल्ली स्टडी ग्रुप एवं भाजपा के वरिष्ट नेता डॉ विजय जौली द्वारा अपनी टीम और साउथ दिल्ली पत्रकार संघ के साथ मनाया। उन्होंने मंगल बाजार रोड, संगम विहार कार्यालय पर दिवापली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में दिल्ली स्टडी ग्रुप के संयुक्त सचिव सुभाष नागर पूर्व प्रत्याशी सहित उनकी टीम भी मौजूद रही।

बता दें साउथ दिल्ली पत्रकार संघ को डॉ विजय जौली ने निमंत्रण पत्र भेजकर दीपावली मिलन समारोह के लिए आमंत्रित किया था,जिसको संगठन के अध्यक्ष राजनारायण मिश्रा ने स्वीकार किया और साउथ दिल्ली पत्रकार संघ की कार्यकारणी एवं सदस्यों के साथ दीपावली मिलन समारोह में पहुंचे। दिल्ली स्टडी ग्रुप द्वारा समारोह में पत्रकार को पटका और उपहार के साथ दीपावली मिलन की हार्दिक शुभकामनाएं दी गई।

इस अवसर पर डॉ विजय जौली ने कहा कि पत्रकारों की समाज में एक अहम भूमिका होती है जो सरकार एवं समाज के मुद्दों को जन-जन तक पहुंचाते है। अपनी बुलंद आवाज और कलम के साथ समाज को जागरूक करते हैं। उन्होंने संगठन को अपना समर्थन एवं सहयोग दिया और सभी पत्रकारों को दीवाली की अग्रिम शुभकामनाओं के साथ बधाई भी दी।

उन्होंने कहा कि हमें पूर्ण विश्वास है कि जिस उद्देश्य से यह संगठन बना है उन पर अमल करते हुए संगठन अध्यक्ष राजनारायण मिश्रा के नेतृत्व में दक्षिणी दिल्ली में अपनी एक पहचान बनाएगा और पत्रकारों के हितों की रक्षा करते हुए सभी को जोड़कर एकसूत्र में पिरोएगे ।

साथ ही सरकार एवं जनता की आवाज बनकर बुलंदी के साथ उनके मुद्दों को संगठन उठाते रहेगा और निष्पक्ष होकर पत्रकारिता का धर्म निभायेगे। इस मौक़े पर भाजपा के वरिष्ट नेता डॉ विजय जौली ने कहा कि मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ ही नहीं बल्कि अभिन्न अंग है।

दीपावली मिलन समारोह में भारी संख्या में साउथ दिल्ली पत्रकार संघ की मौजूदगी रही। इस अवसर पर अध्यक्ष राजनारायण मिश्रा ने डॉ विजय जौली का धन्यवाद किया कि उन्होंने दीपावली मिलन समारोह में पत्रकारों को सम्मान दिया और साथ ही सभी का हौसला भी बढ़ाया इसके लिए समस्त टीम की ओर से आभार एव धन्यवाद और विश्वास दिलाते है कि पत्रकारिता का धर्म निभाते हुए बुलंदी के साथ मुद्दों को उठाएंगे और जनता की आवाज बनकर दक्षिणी दिल्ली में कार्य करेंगे।

महासचिव अजीत कुमार ने कहा कि डॉ विजय जौली एक सुलझे हुए सामाजिक एवं राजनीतिक के अनुभवी नेता है। जिस प्रकार से उन्होंने साउथ दिल्ली पत्रकार संघ को मान सम्मान दिया उसके लिए उनकी पूरी टीम का हम धन्यवाद करते है और उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए उनको शुभकामनाओं के साथ दीपावली मिलन के सफल कार्यक्रम के लिए भी धन्यवाद करते है।

साउथ दिल्ली पत्रकार संघ को बने हुए अभी सिर्फ डेढ़ महीना ही हुआ है लेकिन जिस प्रकार से अध्यक्ष राजनारायण मिश्रा के नेतृत्व में संगठन मजबूती के साथ आगे बढ़ रहा है और पत्रकारों के हितों के लिए कार्य कर रहा है। उम्मीद है संगठन साउथ दिल्ली में अपनी एक पहचान बनाएगा और एकता का संदेश देते हुए पत्रकारों को एक सूत्र में पिरोने में अहम भूमिका निभाएगा।

साउथ दिल्ली पत्रकार संघ ने जिस प्रकार से दीवाली मिलन समारोह में अपनी एकता का परिचय दिया और संगठन के दिशा निर्देशों को पालन किया दर्शाता है कि संगठन एकजुटता के साथ आगे बढ़ रहा है और मजबूती के साथ दक्षिणी दिल्ली में अपनी पहचान बनाता हुआ नजर आ रहा है।

कार्यक्रम में पत्रकार संघ के अध्यक्ष राजनारायण मिश्रा के साथ आश मुहम्मद, बंसी लाल,रियासत अली, दीपक कुमार,गिरीश कुमार,अजीत कुमार, स्वतंत्रसिंह भुल्लर, बिना देवी,रमेश चंद मोहंती, शरद कुमार, साहिल संभव, कुन्दन,दीप सिलोड़ी, जितेंद्र कुमार, मनोज कुमार, महेश सुब्रह्मण्यम, अब्दुल वाजिद, मोहमद वसीम फ़रीज़,मनोज, अखिलेश गुप्ता, शमीम आलम,रविन्द्र कुमार,मनोज कुमार, सायना सैफी आदि मौजूद थे।

स्पेस मिशन–2025' का हुआ औपचारिक उद्घाटन

सुषमा रानी

नई दिल्ली: डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठान (कलाम का सदन, रामेश्वरम) द्वारा 'स्पेस मिशन–2025' का औपचारिक उद्घाटन किया गया। इसका उद्घाटन देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के ग्रांड नेफ्यू डॉ. एपीजेएम शेख सलीम ने किया। इस मौके पर तमाम वैज्ञानिक और गणमान्य लोग मौजूद रहे। ज्ञात हो कि तेरह अक्टूबर से पंद्रह अक्टूबर तक चलने वाले इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की 94वीं जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय संगोष्ठी "स्पेस मिशन–2025" में मुख्य अतिथि के रूप में 15 अक्टूबर को शामिल होंगी। यह तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यक्रम 13 से 15 अक्टूबर, 2025 तक एनसीयूआई सभागार एवं कन्वेंशन केंद्र, अगस्त क्रांति मार्ग, नई दिल्ली में आयोजित किया गया है।

इसरो वैज्ञानिकों, शिक्षविदों और राष्ट्रीय विशेषज्ञों के सहयोग से आयोजित इस संगोष्ठी का उद्देश्य डॉ. कलाम के वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के माध्यम से युवाओं को सशक्त बनाने के उनके आजीवन समर्पण को मनाना है, ताकि अंतरिक्ष वैज्ञानिकों और नवाचारकों की अगली पीढ़ी को प्रेरित किया जा सके। इस कार्यक्रम में पूरे भारत के विद्यालयों, इंजीनियरिंग महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों से एक हज़ार से अधिक छात्र एक साथ आए हैं, जो अपनी नवीन परियोजनाओं, शोध पत्रों और स्टेम मॉडलों का प्रदर्शन कर रहे हैं।

15 अक्टूबर यानि बुधवार को संसदीय कार्य मंत्रालय, मत्स्य पालन, पशुपालन व डेयरी मंत्रालय तथा सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के राज्य मंत्री डॉ. एल. मुरुगन, भारत सरकार की युवा कार्यक्रम एवं खेल राज्य मंत्री रक्षा निखिल खडसे के साथ मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, शिक्षा मंत्री आशीष सूद छात्रों से संवाद करेंगी और उन्हें विज्ञान, नवाचार और अनुसंधान में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित करेंगी।

आयोजकों ने कहा कि उनकी उपस्थिति से बहुत प्रेरणा मिलेगी और भारत के युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने की सरकार की प्रतिबद्धता को बल मिलेगा।

राष्ट्रीय परंपरा को जारी रखते हुए, माननीय राष्ट्रपति भी 15 अक्टूबर को राष्ट्रपति भवन में डॉ. कलाम के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करेंगी, जो उनकी जयंती को वैज्ञानिक प्रेरणा और राष्ट्रीय स्मरण के दिन के रूप में चिह्नित करेगा। आयोजकों ने कहा कि ₹स्पेस मिशन–2025₹ एक कार्यक्रम से कहीं अधिक है – यह एक आंदोलन है जिसका उद्देश्य तकनीकी रूप से उन्नत और आत्मनिर्भर भारत के डॉ. कलाम के स्वप्न को साकार करना, और भावी पीढ़ियों के मन में वैज्ञानिक भावना को प्रज्वलित करना है।

वेदांता दिल्ली हाफ मैराथन 2025 में ईगल स्पेशियली एबल्ड राइडर्स ने भाग लिया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। 12 अक्टूबर, 2025 को जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली में वेदांता द्वारा आयोजित दिल्ली हाफ मैराथन 2025 में ईगल स्पेशियली एबल्ड राइडर्स (कैनर इलेक्ट्रिक कनेक्शन द्वारा प्रायोजित) ने भाग लिया जिसमे मुख्य अतिथि श्रीमती मीनाक्षी लेखी (पूर्व विदेश और संस्कृति राज्य मंत्री,भारत सरकार) और समर्थनम ट्रस्ट फ़ॉर दडिसेबल्ड पर्सन के संस्थापक डॉ. महंतेश जी किवादासन्नावर ने दिव्यांगों का उत्साहवर्धन किया।

श्री आशीष अग्रवाल (प्रोपराइटर, कैनर इलेक्ट्रिक कनेक्शन) ने बताया कि ज्यादातर मामलों में आप देखेंगे कि अगर परिवार में कोई दिव्यांग व्यक्ति है, तो परिवार यात्रा या समारोह में भाग लेने के दौरान दिव्यांग व्यक्ति को अक्सर घर पर अकेला छोड़ दिया जाता है, हम इस धारणा को बदलना चाहते हैं कि दिव्यांग लोग बोझ हैं या किसी पर निर्भर हैं, अगर उन्हें मौका मिले को उनमे प्रतिभा की कोई कमी नही है।

ईगल स्पेशियली एबल्ड राइडर्स (कैनर इलेक्ट्रिक कनेक्शन द्वारा प्रायोजित) के दिव्यांग एक बार फिर समावेश सहयोगी भागीदार के रूप में शामिल होने पर गौरवान्वित महसूस कर रहे है। यह सिर्फ़एक मैराथन नही मैराथन से कहीं बढ़कर है, यह एक ऐसा आंदोलन है जहाँ विकलांग और गैर-विकलांग लोग बाधाओं को तोड़ने के लिए एक साथ दौड़ते हैं। ईगल स्पेशियली एबल्ड राइडर्स (कैनर इलेक्ट्रिक कनेक्शन द्वारा प्रायोजित) के 80 से ज्यादा दिव्यांगों को एक साथ आते देखा। वे दौड़े, हँसे, एक-दूसरे का साथ दिया और सबको याद दिलाया कि विकलांगता का मतलब अक्षमता नहीं है। जो एक मैराथन के रूप में शुरू होता है, वह अक्सर बहुत कुछ लेकर खत्म होता है: यादें, दोस्ती और समावेश की गहरी समझ।

ईगल स्पेशियली एबल्ड राइडर्स (कैनर इलेक्ट्रिक कनेक्शन द्वारा प्रायोजित) को कारोना की पहली और दूसरी खतरनाक लहर में भी दिव्यांगों की सहायता करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए स्टार स्पोर्ट्स, एनडीटीवी, न्यूज़18, समर्थ (हुंडई मोटर इंडिया लिमिटेड), डॉ. बत्रा पॉजिटिव हेल्थ अवार्ड द्वारा भी सम्मानित किया गया, नेपाल सरकार और रिपब्लिक ऑफ घाना (दक्षिण अफ्रीका) द्वारा मानवता के लिए अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी दिया जा चुका है।

दूसरों के जीवन में उत्साह लाएं, वही सच्ची खुशी: शलभ निगम

बालभारती स्कूल के विद्यार्थियों ने मूक-बधिर बच्चों संग साझा की खुशियाँ

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। 'प्रोजेक्ट हैपिनेस – 'शेयर एंड केयर के अंतर्गत, बालभारती स्कूल, बिलासपुर के विद्यार्थियों ने बिलासपुर स्थित 'सत्य साई हेल्पवे मूक-बधिर आवासीय विद्यालय एवं प्रशिक्षण केंद्र' का भ्रमण एवं निरीक्षण किया। इस गतिविधि का उद्देश्य विद्यार्थियों में सहानुभूति, संवेदनशीलता तथा सहयोग की भावना का विकास करना था।

भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने वहाँ के मूक-बधिर बच्चों से आत्मीयता के साथ भेंट की और उनकी भाषा को समझने का प्रयास किया। उन्होंने उनके साथ हँसी-खुशी समय बिताया तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी की। इस अवसर पर बालभारती स्कूल द्वारा निवासरत बच्चों को कंप्यूटर, प्रिंटर, स्कूल बैग, पानी की बोतलें, स्टेशनरी सामग्री तथा विभिन्न दैनिक उपयोग की वस्तुएँ स्नेहपूर्वक भेंट की गईं।

विद्यालय के प्राचार्य शलभ निगम स्वयं उपस्थित रहे और उन्होंने अपने कर-कमलों से बच्चों को प्रेमपूर्वक उपहार प्रदान किए। उन्होंने अपने उद्बोधन में वहाँ के बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि सच्ची खुशी तभी मिलती है जब हम दूसरों के जीवन में मुस्कान ला सकें। ऐसे अनुभव बच्चों के भीतर मानवीय संवेदनाओं और सेवा-भाव को प्रबल बनाते हैं।

इस कार्यक्रम में मूक-बधिर आवासीय विद्यालय की प्राचार्या ममता मिश्रा का भी पूर्ण सहयोग रहा, जिन्होंने अपने मार्गदर्शन और उत्साहवर्धन से कार्यक्रम को और अधिक सफल और भावनात्मक रूप से समृद्ध बनाया।बालभारती स्कूल प्रत्येक वर्ष ऐसे सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों के अंतर्गत इस प्रकार के सामाजिक और संवेदनशील गतिविधियाँ आयोजित करता है, जिससे विद्यार्थियों में सहानुभूति, सहयोग और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना प्रबल होती है।कार्यक्रम का समापन आपसी स्नेह, अपनत्व और सकारात्मक संदेशों के साथ हुआ, जिसने विद्यार्थियों के साथ-साथ मूक-बधिर बच्चों के हृदय पर भी गहरा प्रभाव छोड़ा।

विदेश भागी फर्स्ट फ्लाइट कोरियर से बकाया के इंतजार में दर्जनों कर्मचारियों की मौत : सरकार के खिलाफ रोष

सुनील बाजपेई

कानपुर। किये गये कार्य का वेतन, ग्रेच्युटी, क्षतिपूर्ति, नोटिस पे, अवकाश भुगतान, और चिकित्सा भुगतान व बोनस आदि न दिये जाने से मेसर्स फस्ट फ्लाईट कोरियर लिमिटेड के सैकड़ों कर्मचारी तिल तिलकर मरने को मजबूर हैं। यही नहीं अपने बकाया मिलने का इंतजार करते-करते दर्जनों कर्मचारी मौत का शिकार भी हो चुके हैं और बहुत से होने वाले भी हैं। इसीलिए अब हिंद मजदूर किसान पंचायत तब तक आंदोलन करेगी जब तक उनका बकाया नहीं मिल जाएगा।

यह चेतावनी यहां हिंद मजदूर किसान पंचायतके महासचिव वरिष्ठ श्रमिक नेता राकेश मणि पांडे ने देते हुए बताया कि परिप्रेक्ष्य में प्रधानमंत्री सहित सभी जिम्मेदार लोगों को दिये गये सैकड़ो पत्रों पर कोई कार्यवाही न करने और उनकी उदासीनता के चलते सैकड़ो कर्मचारियों की मृत्यु हो चुकी है और सैंकड़ों मृत्यु की कगार पर खड़े हैं।

शासन की लापरवाही से मालिकानों द्वारा विदेश भाग कर व्यापार करने फैन्चाईजी देने और भारत स्थिति चल अचल सम्पत्ति को बेचने पर सरकार द्वारा कोई कार्यवाही न अपनाये जाने के परिप्रेक्ष्य में ध्यानाकर्षण कर आक्रोश पत्र जारी करते हुए हिन्द मजदूर किसान पंचायत उत्तर प्रदेश के महामंत्री वरिष्ठ श्रमिक नेता राकेशमणि पाण्डेय ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन किए जाने की चेतावनी देते हुए बताया कि फस्ट फ्लाईट कोरियर लगभग 25 हजार से अधिक कर्मचारियों को अपने यहां नियुक्त करके पूरे भारत वर्ष में कोरियर का काम करती रही है। वह अचानक ही मालिकों द्वारा अपनी भारत स्थिति चल अचल सम्पत्ति को बेचकर व वह खुद फैन्चाइजी के माध्यम से बेचकर विदेश भाग गये हैं और अब विदेश में फस्ट फ्लाईट कोरियर का काम करते जा रहे हैं।

प्रधानमंत्री मंत्री अन्य जिम्मेदार लोगों को लिखे गए पत्र के मुताबिक सैकड़ों पत्रों पर कोई कार्यवाही नहीं की गयी न ही कोरियर के प्रबन्धन के विरूद्ध लुक आउट नोटिस ही जारी की गयी और न ही सरकार ने उसे भारत लाने की अबतक कोई कोशिश की है। जबकि उसपर कर्मचारियों के कार्य का वेतन ग्रेच्युटी क्षतिपूर्ति, बोनस, अवकाश भुगतान आदि का 15 हजार करोड़ से अधिक का बकाया शेष है।

श्रमिक नेता राकेश मणि पांडे ने बताया कि तमाम वादों में न्यायालय द्वारा यह अंकित कराने पर कि वर्तमान समय में फस्ट फ्लाईट कोरियर का देश में स्थिति किसी भी कार्यालय से कोई सूचना प्राप्त नहीं हो पा रही है और न ही पत्र रिसीव हो पा रहे हैं। ऐसी दशा में उसके खिलाफ तब तक कार्यवाही किये जाने का कोई औचित्य नहीं रह जाता है, जब तक उसका स्थायी पता व उनकी तरफ से कोई उपस्थित न हो जाये।

फर्स्ट फ्लाइट कोरियर के सैकड़ों कर्मचारियों के बकाए के लिए लगातार संघर्ष कर रहे वरिष्ठ श्रमिक राकेश मणि पांडेय ने यह भी बताया कि प्रधानमंत्री कार्यालय से विशेष सचिव द्वारा भी पत्र निर्गत किया गया पर वह ढांक के पात साबित हुए। इस संदर्भ में न्यायपालिका के भी निष्क्रिय और पंगु हो जाने की भी बात करते हुए वरिष्ठ श्रमिक नेता राकेश मणि पांडेय ने आरोप लगाया कि यह सरकार वास्तविक रूप से मजदूर और कर्मचारियों का पैसा हड़प जाने वाले कुख्यात मालिकों को संरक्षण देती है। साथ ही सवाल भी किया वि क्या भारत के फस्ट फ्लाईट कोरियर के मजदूर यह मान लें कि उनके हितों की रक्षा नहीं हो पायेगी और उनका भुगतान हड़प लिया जायेगा और वह ऐसे ही तिल तिल के मरते रहेंगे। उन्होंने बताया कि बेरोजगारी भत्ता जो राज्य कर्मचारी बीमा निगम से दिया जाता है। उसे भी राज्य कर्मचारी बीमा निगम द्वारा हड़प लिया गया है। और उनका भुगतान हड़प लिया जायेगा।

राकेश मणि पांडे ने कहा कि अगर सरकार सार्वजनिक घोषणा करें कि वह फर्स्ट फ्लाइट कोरियरों को न्याय नहीं दिला सकती। वह अक्षम और मजदूर विरोधी है तो फिर कर्मचारीगण किसी भी सामने अपनी स्थिति को बयां नहीं करेंगे और अपने सारे हितलाभों को भूल जायेंगे। और अगर ऐसा नहीं है तो फिर सरकार फस्ट फ्लाईट कोरियार के विरूद्ध देश विदेश में फैली चल अचत सम्पत्तियों को जब्त करने और उनके मालिकों को विदेश से पकडवा कर भारत लाने व विधि संगत प्राविधानों के तहत कार्यवाही करके दिखाये। इस सम्बन्ध में मेल व पंजीकृत डाक से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, जयशंकर प्रसाद, डा० मनसुख मंडापिया, केन्द्रीय श्रमायुक्त, केन्द्रीय निदेशक राज्य कर्मचारी बीमा निगम व श्रम सचिव भारत सरकार को भी भेजे जाने की जानकारी देते हुए हिंद मजदूर किसान पंचायत के महासचिव और देश के जाने-माने वरिष्ठ श्रमिक नेता राकेशमणि पाण्डेय ने यह चेतावनी भी दी कि यदि ऐसा नहीं किया जाता है तो पीड़ित कर्मचारी संसद मार्च, और अनशन, प्रदर्शन के साथ अपनी आंदोलन को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ले जायेंगे।

अखिल भारतीय ब्राह्मण हीरोज़ संगठन ने किया सम्मानित

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्लीः मेरठ। पं. दीनदयाल उपाध्याय मैनेजमेंट कॉलेज में अखिल भारतीय ब्राह्मण हीरोज़ संगठन ने एक सम्मान समारोह का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में ब्राह्मण समाज के 100 प्रतिभाशाली व्यक्तियों को समाज सेवा, शिक्षा, संस्कृति और अन्य क्षेत्रों में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेश कुमार शर्मा ने बताया कि अखिल भारतीय ब्राह्मण हीरोज़ संगठन 1998 से समाज उत्थान और एकता के लिए सक्रिय है। उन्होंने कहा कि इस समारोह का मुख्य उद्देश्य समाज की प्रतिभाओं को एक मंच प्रदान करना और युवाओं को समाज सेवा के लिए प्रेरित करना है।

समारोह में पूर्व विधायक राजेंद्र शर्मा, पूर्व मंत्री सुनील भराला, पूर्व जिला अध्यक्ष विमल शर्मा, भाजपा प्रवक्ता अवनीश त्यागी और वरिष्ठ पत्रकार मुकेश गोयल, दिनेश चन्द्रा, संदीप चौधरी, महेश शर्मा, पवन शर्मा, राजू शर्मा, सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने संगठन के प्रयासों की सराहना की और समाज के उत्थान के लिए एकजुट होकर कार्य करने का आह्वान किया। इस अवसर पर सम्मानित किए गए व्यक्तियों ने संगठन का आभार व्यक्त किया। उन्होंने समाज में एकता, शिक्षा और संस्कारों के प्रसार का संकल्प भी लिया।

155 विद्यार्थियों को बांटे स्वेटर, सरकारी स्कूल के छात्र-छात्राओं के चेहरों पर झलकी खुशी

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर : जिला मुख्यालय के अंतिम छोर पर बसे वीरों की देवभूमि कहे जाने वाले गांव धारौली की सामाजिक संस्था मां-मातृभूमि सेवा समिति द्वारा भाकली गांव के राजकीय आदर्श संस्कृति प्राथमिक पाठशाला के कक्षा एक से पांचवी तक के सभी 155 विद्यार्थियों को वस्त्र समर्पण सेवा कार्यक्रम में निःशुल्क स्वेटर वितरण की गई जिसे पाकर सभी विद्यार्थियों के चेहरे खुशी से खिल उठे। वस्त्र समर्पण सेवा कार्यक्रम में भाकली गांव के मास्टर सतीश यादव ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। मेडी-जेईई करियर इंस्टीट्यूट, कोसली की तरफ से हरिप्रसाद ने विशिष्ट अतिथि - 1 और सुधीर कुमार, प्रो. कोमल इलेक्ट्रिक स्टोर, भाकली विशिष्ट अतिथि - २ के रूप में कार्यक्रम में शामिल हुए। माननीय अभय सिंह, प्राचार्य, शहीद ज्ञान सिंह राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गांव भाकली ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

११वी बार रक्तदान कर चुके युद्धवीर सिंह लांबा, अध्यक्ष, मां-मातृभूमि सेवा समिति, वीरों की देवभूमि धारौली ने बताया कि 1.समाजसेवी व शिक्षाविद सुखबीर जाखड़, चेयरमैन, रिलायंस ग्रुप ऑफ स्कूल्स २.हरियाणा सरकार में जूनियर इंजीनियर अजय मलिक, खानपुर कलां, सोनीपत ३.शिक्षाविद धर्मेंद्र यादव, डायरेक्टर, मेडी-जेईई करियर इंस्टीट्यूट, कोसली 4.असिस्टेंट टैक्सेशन अफसर के पद पर कार्यरत संजीव घणघस, गांव जतई, भिवानी 5. समाजसेवी व 43 बार रक्तदान कर चुके रक्तदानी नितेश भौरिया, प्रो. अर्बन युवा रेडीमेड स्टोर, कोसली ६.मास्टर रोहित यादव प्रो. लेवी डिस्पोजल हाउस, कोसली 7.इंजीनियर अमित दांगी, गांव मदीना, रोहतक 8.भिवानी निवासी इंजीनियर अजय जांगड़ा, सरकारी बैंक में कार्यरत 9.पर्यावरण संरक्षण को समर्पित मंजीत सिंह, प्रो.श्री हंस बैग व स्टेशनरी हाउस, नत्थू राम काम्प्लेक्स, कोसली 10.कोसली स्टेशन में नाहड रोड पर सोनू मोटर वाइंडिंग सेंटर, प्रो. सोनू धारौली 11.डीपीई कुलवेन्द्र सिंह यादव, गांव मुमताजपुर, जिला रेवाड़ी १२.शिक्षा के साथ साथ सामाजिक सरोकार का दायित्व भी बेखूबी निभा रहे मास्टर श्री हरबीर मल्हान गिरधरपुर निवासी 13. समाजसेविका व रक्तदानी लक्ष्मी सिंह 14 .भारतीय सेना में कार्यरत फौजी जगदीश ग्रेवाल सासरोली 15.ब्रह्मशक्ति संजीवनी अस्पताल, बहादुरगढ़ और नव जीवन हॉस्पिटल मॉडल टाउन रोहतक के मैनेजर विक्रांत शर्मा 16.सुधीर कुमार, प्रो. कोमल इलेक्ट्रिक स्टोर, भाकली 17.शिक्षाविद मास्टर सतीश कुमार यादव, भाकली आदि ने अपनी ईमानदारी व मेहनत से कमाया नेक धन से वस्त्र समर्पण सेवा कार्यक्रम के आयोजन मे सहयोग देकर पुण्य कमाया।

विशाल कुमार, हेडमास्टर, राजकीय आदर्श संस्कृति प्राथमिक पाठशाला ने अपने सम्बोधन में मां मातृभूमि सेवा समिति, वीरों की देवभूमि धारौली के वस्त्र समर्पण सेवा कार्यक्रम को एक सराहनीय पहल बताया।

अटल बिहारी वाजपेयी की याद में स्वास्थ्य पर चर्चा : डॉ हृदयेश कुमार

परिवहन विशेष न्यूज

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार ने अटल बिहारी वाजपेयी की याद में तिरखा कॉलोनी शिव मंदिर परिसर बल्लबगढ़ फरीदाबाद में बताया कि अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी कवि, पत्रकार व एक प्रखर वक्ता थे। वे भारतीय जनसंघ के संस्थापकों में एक थे, और 1968 से 1973 तक उसके अध्यक्ष भी रहे। उन्होंने लम्बे समय तक राष्ट्रधर्म, पाञ्चजन्य (पत्र) और वीर अर्जुन आदि राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया और वे अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते थे। 13 अक्टूबर 1999 को उन्होंने लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की नई गठबंधन सरकार के प्रमुख के रूप में भारत के प्रधानमंत्री का पद ग्रहण किया। वे 1996 में बहुत कम समय के लिए प्रधानमंत्री बने थे।

उनकी याद में स्वास्थ्य पर विशेष चर्चा कर आप को अपने वास्तविक जीवन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए

पेट की सफाई उतनी ही ज़रूरी है जितनी आप अपने शरीर को बाहर से साफ रखते है डॉ हृदयेश कुमार

`खुद स्वास्थ्य रखने के लिए आपको खुद ही अपने खान पान पर ध्यान केंद्रित करना होगा अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट ने शिक्षा और स्वास्थ्य का बिगुल बजाया है इस लिए आप को समय समय पर जागरूक कर आपके स्वास्थ्य सेवाओं पर विशेष चर्चा कर रहे हैं

यदि शौच के दौरान आपका पेट अच्छी तरह से साफ़ नहीं होता तो समझ लीजिये आपको कब्ज की बीमारी हैं और तरल पदार्थो की कमी आपके शरीर में हो रही हैं। यदि कब्ज हो जाये तब कोई भी खुद को फ्रेश फील नहीं कर पाता हैं। एक बात ध्यान अवश्य रखिये यदि कब्ज होने पर उसको अनदेखा किया गया तब इसके परिणाम काफी घातक होते हैं यह किसी भी जटिल बीमारी का रूप ले लेता हैं।

कब्ज के होते ही पेट में अनेको व्याधिया आ जाती हैं उदाहरण के लिए कब्ज वाले रोगी को पेट दर्द की शिकायत रहती हैं, सुबह शौच करने में परेशानी आती हैं ,तथा मल का शरीर से पूरी तरह ना निकलना जैसी परेशानियो से सामना करना पड़ता है। वैसी तो कब्ज के लिए बहुत उपाय हैं पर कब्ज को जड़ से खत्म करने के लिए मात्र आर्युवैदिक उपाय ही कारगर साबित हुए हैं।

कब्ज का मुख्य कारण यह हैं की शरीर में पानी और दुसरे प्रकार के तरल पदार्थो की कमी हो गयी हैं। इन्ही तरल पदार्थो की कमी के चलते आंतो में मल सुख जता हैं तथा सुबह शौच क्रिया के दौरान बल प्रयोग करना पड़ता हैं। इसके चलते कब्ज रोगी को दिक्कत का सामना करना पड़ता हैं। दलिया, खिचड़ी जैसे और तरल पदार्थो को लेने की कब्ज रोगीयो को अक्सर सलाह दी जाती हैं,

गुड़ और गिलोय : गुड के साथ गिलोय का बारीक़ चूर्ण मिलाकर सोते समय 2 चम्मच लीजिये और ध्यान रखिये गुड तथा गिलोय का चूर्ण बराबर मात्र में मिक्स किया हो ,कब्ज एकदम ठीक होगा।

10 ग्राम सेंधा नमक, 10 ग्राम त्रिफला तथा 10 ग्राम अजवायन को मिलाकर कूट लीजिये और एक बारीक़ चूर्ण बना लीजिये। अब हर रोज हल्के गर्म पानी के साथ 3 से 5 ग्राम चूर्ण का सेवन कीजियेगा ,पुराणी से पुराणी कब्ज भी खत्म हो जाएगी।

हर रोज रात में हर्र को पीसकर बारीक चूर्ण बना लीजिए, इस चूर्ण को कुनकुने पानी के साथ पीजिए। कब्जा दूर होगा और पेट में गैस बनना बंद हो जाएगा। पका हुआ अमरूद और पपीता कब्जर के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं। अमरूद और पपीता को किसी भी समय खाया जा सकता है। किशमिश को पानी में कुछ देर तक डालकर गलाइए, इसके बाद किशमिश को पानी से निकालकर खा लीजिए। इससे कब्जि की शिकायत दूर होती है।

पालक : पालक का रस पीने से कब्ज की शिकायत दूर होती है, खाने में भी पालक की सब्जीा का प्रयोग करना चाहिए।

केन्द्रीय विद्यालय स्लाईट में 'विकसित भारत बिल्डाथॉन 2025' का लाइव प्रसारण

विद्यार्थियों ने नवाचार के माध्यम से जानी विकसित भारत निर्माण की दिशा

लोंगोवाल, 13 अक्टूबर (जगसीर सिंह)– शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं अटल इनोवेशन मिशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित "विकसित भारत बिल्डाथॉन 2025" का मेगा कार्यक्रम आज केन्द्रीय विद्यालय, स्लाईट लौंगोवाल में सीधा प्रसारित किया गया। कार्यक्रम का प्रसारण प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक किया गया, जिसमें विद्यालय के कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थियों और शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने यह जाना कि किस प्रकार नवीन विचारों को विकसित कर उन्हें नवाचार परियोजनाओं में बदला जा सकता है। इस आयोजन का उद्देश्य युवाओं को भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाने हेतु प्रेरित करना था। विद्यालय परिवार ने इस कार्यक्रम को अत्यंत ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी बताया। कार्यक्रम प्रभारी श्री आकाश हलदर, पीजीटी (रसायन शास्त्र) ने सभी शिक्षकों के सहयोग की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों में सृजनात्मकता और तकनीकी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करते हैं। विद्यालय के प्राचार्य श्री हरिहर यादव एवं वरिष्ठ पीजीटी श्रीमती अनिता रानी ने विद्यार्थियों की सहभागिता की प्रशंसा की तथा उन्हें नवाचार और तकनीकी प्रगति की दिशा में निरंतर प्रयासरत रहने का संदेश दिया।

हरे माधव वर्सी पर्व 2025- आस्था की धरा पर अवतरित दिव्यता का अनुभव-अमृत वर्षा क़ा आभास

हरे माधव सत्संग में श्रद्धा, सेवा, भक्ति और अनुशासन का अद्भुत संगम देखने को मिला जो एक आध्यात्मिक क्रांति जैसा था– **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर आध्यात्मिकता रूपी मिठास मेंडूबे भारत के मध्यप्रदेश की पावन धरा कटनी की शांत और पावन भूमि पर 9 और 10 अक्टूबर 2025 को ऐसा दृश्य उपस्थित हुआ जिसे शब्दों में बाँध पाना अपने आप में एक आध्यात्मिक साधना के समान है। हरे माधव सत्संग के वर्सी महोत्सव ने न केवल शहर बल्कि देश और विदेश के लाखों श्रद्धालुओं को एक सूत्र में पिरो दिया।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र व मेरे साथी मनोहर सुगानी सतना ने वहां की ग्राउंड रिपोर्टिंग की तो हमें इस दौरान श्रद्धा, सेवा, भक्ति और अनुशासन का अद्भुत संगम देखने को मिला। हमने स्वयंम इन दो दिवसीय सत्संग के दौरान ग्राउंड रिपोर्टिंग की, और यह अनुभव किसी साधारण धार्मिकआयोजन से कहीं अधिक एक आध्यात्मिक क्रांति जैसा था।

साथियों बात अगर हम भक्तों के अभूतपूर्व उत्साह की करें तो, हरे माधव दयाल, जिनकी करुणा और दया की गाथाएँ भक्तों के मुख से सहज ही फूट पड़ती हैं, उनके नाम का प्रभाव इस आयोजन में स्पष्ट रूप से झलकता दिखा।हर ओर "हरे माधव" का उच्चारण मानो वातावरण को पवित्र कर रहा था। भक्तों की आँखों में जो चमक थी, वह किसी बाहरी चमत्कार से नहीं बल्कि अंतर्मन में अनुभव की गई शांति और दयालुता की झिलमिल थी।इस सत्संग ने यह सिद्ध कर दियाकिआध्यात्मिकता तब ही सशक्त होती है जब उसमें मानवता की सुगंध हो।कटनी की इस पवित्र भूमि पर जैसे ही 9 अक्टूबर 2025 को सूर्योदय हुआ, हरे माधव दयाल के प्रति भक्ति की तरंगें पूरे शहर में फैल गईं, मानों बच्चे, महिलाएँ, बुजुर्ग और युवा सबकी एक ही चाह थी,र्दयाल के दर्शन और सत्संग का श्रवण।र्ऐसा लग रहा था मानो पूरा नगर ही भक्ति में रमा हुआ है।यह दृश्य केवल आँखों से नहीं, आत्मा से देखा जा सकता था।

साथियों बात अगर हम देश- विदेश से उमड़ा श्रद्धा का सागर, वैश्विक स्तरपर आध्यात्मिक एकता की करें तो इस वर्सी महोत्सव की सबसे उल्लेखनीय बात यह रही कि इसमें भारत के अनेक राज्यों से अनुमानतः हजारों लाखों भक्तों ने इस दो दिवसीय सत्संग का लाभउठाया। भक्तों की उपस्थिति इस बात का प्रमाण थी कि हरे माधव दयाल की शिक्षाएँ सीमाओं से परे जाकर मानवता को जोड़ रही हैं।जब मैंने ग्राउंड पर भक्तों से बात की, तो उन्होंने कहा "हम यहाँ किसी धर्म के अनुयायी बनकर नहीं, बल्कि प्रेम और शांति की तलाश में आए हैं। यहाँ जो अनुभव मिलता है, वह किसी भी किताब में नहीं।"इससे यह सिद्ध हुआ कि आज के वैश्विक युग में भी सच्ची आध्यात्मिकता वह है जो सभी जाति, भाषा और सीमाओं को मिटाकर मनुष्यता के सूत्र में जोड़ती है।

साथियों बात अगर हम सत्संग के पहले दिन 9 अक्टूबर 2025 अमृत वर्षा क़े प्रारंभ होने की करें तोपहलेदिन का आरंभ मंगल वंदना और "मेरे सतगुरां हम शरण तेरी आए " के भक्ति स्वर से हुआ। वातावरण में घुली शांति, भजन के मधुर सुर और आरती की लौ ने ऐसा माहौल रचा कि मानो पूरा ब्रह्मांड उसी क्षण स्थिर हो गया हो।मैंने मोबाइल कैमरे की लेंस से जब भक्तों के चेहरों को कैद किया, तो हर चेहरे पर संतोष, श्रद्धा और आनंद की अनोखी अभिव्यक्ति थी। पहले दिन का मुख्य आकर्षण बाबा ईश्वर शाह साहिब जी का "दयाल संदेश" यानें अमृत वर्षा था, जिसमें कलश करुणा, क्षमा और आत्मचिंतन के महत्व पर प्रकाश डाला गया। सत्संग पंडाल में गूँजती मधुर वाणी ने हजारों मनों को छू लिया। ऐसा लगा मानो हृदय के भीतर छिपी सभी थकान, चिंता और अशांति उसी क्षण विलीन हो गई हो।

साथियों बात अगर हम सत्संग के दूसरे व अंतिम दिन 10 अक्टूबर 2025 की करें तो मानो आकाश से उतरती दिव्यता पृथ्वी को नमन कर रही हो, सुबह 10 बजे से ही भक्तों का सत्संग स्थल पर पहुंचना शुरू गया था, यह सामूहिक श्रद्धा और अनुशासन का अनुपम उदाहरण था। बच्चे अपने हाथों में फूल और झंडे लिए, युवा सेवा में तत्पर, बुजुर्गों के चेहरे पर आत्मिक आनंद। यह सब देखकर लगा कि जब आस्था और अनुशासन एक साथ चलें तो समाज में कितनी सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है।बाबाजी का आगमन विशाल जुलूस के साथ हुआ एलईडी स्क्रीन पर बाबा माधव शाह बाबा नारायण शाह की अनेक महिमाओं लीलाओं का वर्णन साक्षात रूप से भक्तों को दिखाया गया जिससे भक्तों के अनेक प्रश्नों की जिज्ञासा दूर हुई उसके पश्चात बाबा जी ने स्वयं अपने मुख से सत्संग की अमृत वर्षा की जिससे भक्तजन भावविभोर हो उठे।

साथियों बात अगर हम सेवा के विविध रूप, व्यवस्थापन का अनुकरणीय उदाहरण की करें तो, यह मेरे लिए इस आयोजन का सबसे प्रेरणादायक पहलू था, इसकी उत्कृष्ट सेवा व्यवस्था। सत्संग परिसर में व्यवस्थापकों और स्वयंसेवकों ने जिस निष्ठा से सेवा दी, वह अपने आप में उदाहरण है, जिसकी मैं पूरी ग्राउंड रिपोर्टिंग कर मोबाइल कैमरे में सेवकिया।पंडाल सेवा- विशाल पंडालों में बैठने, धूप से बचाव, वेंटिलेशन, और व्यवस्था इतनी सुचारू थी कि अनुमानतः हजारो लाखों की भीड़ होने के बावजूद कोई अव्यवस्था नहीं दिखी।चरण पादुका सेवा- श्रद्धालुओं के लिए चरण पादुका स्थल पर विनम्र भाव से सेवा करते स्वयंसेवक विनम्रता की प्रतिमूर्ति प्रतीत हो रहे थे।जल सेवा-ठंडा, शुद्ध जल उपलब्ध कराने के लिए अनेक जल स्टॉल लगाए गए थे, जहाँ लगातार सेवा चल रही थी।खोया-पाया सेवाः इतने बड़े आयोजन में कोई वस्तु खो जाए, तो तुरंत सूचना मिल जाए, भंडारा यानी लंगर सेवा तथा बर्तन थालियां धोने की सेवा में मैंने देखा कि बड़े-बड़े अमीरों उच्च स्तरीय लोग, भक्तों द्वारा ग्रहण किए गए भोजन की थालियों को मांझकर फ़रि पानी में फिर धो रहे थे जो मुझे सबसे अनमोल सेवा लगी उनकी यह सेवा रेखांकित करने योग्य है।पुलिस विभाग और सुरक्षा व्यवस्था-कटनी पुलिस और सुरक्षा दल ने अनुकरणीय कार्य किया। भीड़ नियंत्रण से लेकर ट्रैफिक प्रबंधन तक हर पहलू पर बारीकी से ध्यान दिया गया।मेडिकल सेवा-24 घंटे संचालित मेडिकल कैंप में डॉक्टर और पैरामेडिकल स्टाफ हर समय मौजूद रहे।किसी भी आपात स्थिति के लिए एम्बुलेंस व्यवस्था भी तत्पर थी।स्टालों में एक झाड़ माँ के नाम, पर्यावरणीय पहल- इस आयोजन की विशेषता रही "एक झाड़ माँ के नाम" पहल, जिसके अंतर्गत प्रत्येक भक्त ने एक पौधा रोपने का संकल्प लिया। आध्यात्मिकता को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ने का यह संदेश अत्यंत प्रेरणादायक था। विशेष रूप से व्यवस्थापकों सेवादारियों की सेवाएं अभूतपूर्व अनुशासन के रूप में दिखाई दी सत्संग स्थल के बाजू में हेड ऑफिस बनी हुई थी जहां से व्यवस्थापकों की हर सेवा पर नजर थी ताकि भक्तों को कोई तकलीफ ना हो, इन सभी व्यवस्थाओं को देखकर लगा कि जब सेवा भावना और संगठन शक्ति साथ मिलती है, तो कोई भी आयोजनकितना अनुशासितऔर प्रेरणादायक बन सकता है।

साथियों बात अगर हम व्यवस्था में अनुशासन और तकनीक का सुंदर संगम की करें तो, मेरी ग्राउंड रिपोर्टिंग के दौरान मैंने पाया कि यह आयोजन केवल धार्मिक नहीं, बल्कि व्यवस्थापन का भी उत्कृष्ट उदाहरण था।आयोजकों ने आधुनिक तकनीक का भी प्रयोग किया था, सीसीटीवी निगरानी, एलईडी लाइव प्रसारण ताकि दूर बैठे भक्तों को भी स्पष्ट नजर आए, जैसी सुविधाएँ मौजूद थीं। इससे यह महोत्सव केवल एक भौतिक आयोजन नहीं रहा, बल्कि डिजिटल आध्यात्मिकता का भी एक युगीन उदाहरण बन गया।

साथियों बात अगर हम भक्तों के भाव, अनुभवों की झंकार की करें तो, जब मैंने कुछ श्रद्धालुओं से बातचीत की, तो हर किसी की आवाज़ में भक्ति और भावनाओं की गहराई झलक रही थी।दमोह निवासी एक महिला ने कहा, "हम हर वर्ष आते हैं, लेकिन इस बार जो दिव्यता और शांति महसूस हुई, वह पहले कभी नहीं हुई। यह सचमुच अमृत वर्षा थी। "कोल्हापुर से आए एक युवा भक्त ने कहा, "मैं तकनीकी क्षेत्र से हूँ, पर यहाँ आकर समझा कि असली 'कनेक्शन' ईश्वर से जुड़ाव है, न कि इंटरनेट से।"इन सरल वाक्यों में वह आध्यात्मिक सत्य छिपा है जो जीवन के हर क्षेत्र में संतुलन और सकारात्मकता का संदेश देता है।आध्यात्मिकता और समाजसेवा का संगम-हरे माधव सत्संग केवल उपदेश देने वाला मंच नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत सामाजिक आंदोलन भी है।इस महोत्सव के दौरान शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता के क्षेत्र में अनेक जनसेवा अभियानों कि हमें प्रेरणा मिली।हरे माधव परमार्थ सेवा समिति कटनी द्वारा गरीब परिवारों के लिए स्वास्थ्य सेवा बाबा माधव शाह चिकित्सालय मासिक अनाज वितरण साहित्य अनेकयोजनाओं का संचालन किया जाता है।यह देखकर लगा कि सच्ची भक्ति वही है जो समाज में परिवर्तन का माध्यम बने। आध्यात्मिकता तभी सार्थक है जब वह मानवता के कार्यों में उतरकर समाज को उन्नति की दिशा में ले जाए।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण से हरेमाधव सत्संग की प्रासंगिकता को समझने की करें तो, विश्व स्तर पर आज जब तनाव, हिंसा, युद्ध और आर्थिक प्रतिस्पर्धा का दौर चल रहा है, तब हरे माधव दयाल का संदेश, "दयालता ही मानवता का आधार है"अत्यंत प्रासंगिक हो उठता है। कटनी का यह आयोजन केवल धार्मिक भावनाओं का प्रदर्शन नहीं, बल्कि"वसुधैव कुटुंबकम्" के भारतीय आदर्श का जीवंत प्रमाण था।कोल्हापुर मुंबई सहित अनेक मेट्रोसिटी से आए श्रद्धालुओं ने कहा कि उन्हें यहाँ वह "मेडिटेशनल एनर्जी" मिली जो किसी भी मानसिकचिकित्सा से अधिक प्रभावशाली है।

साथियों बात अगर हम मेरी ग्राउंड रिपोर्टिंग करें तो, मुझे इसके लिए संस्था या व्यवस्थापकों नें कहा नहीं था मैंने स्वतः संज्ञान से ग्राउंड रिपोर्टर की आत्मानुभूति, शब्दों से परे एक साक्षात्कार-जब मैंने इनदो दिनों की रिपोर्टिंग पूरी की, तो महसूस किया कि वकालत क़े पेशे जैसे केवल तथ्य नहीं, बल्कि अनुभूति का भी माध्यम है। कैमरे में कैद दृश्य भले सीमित हों, पर हृदय में जो दृश्य अंकित हुए, वे जीवनभर अमिट रहेंगे।मैंने देखा कि किस प्रकार भक्त भक्ति में डूबकर सेवा करते हैं, किस तरह व्यवस्थापक दिन-रात बिना थके अपने कर्तव्यों में लगे रहे, और कैसे एक संत का सन्देश लाखों के जीवन में प्रकाश बन जाता है।यह रिपोर्ट केवल रिपोर्ट नहीं, एक साक्षात्कार है, आत्मा का, श्रद्धा का, और मानवता का।

महिलाओं की आज़ादी बनाम शासन की जिम्मेदारी

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का हालिया बयान कि "लड़कियों को रात में बाहर नहीं निकलना चाहिए," समाज की उस रूढ़िगत सोच को उजागर करता है जो अपराधी को छोड़कर पीड़िता को कठघरे में खड़ा करती है। दुर्गापुर मेडिकल कॉलेज में एक छात्रा के साथ हुए सामूहिक दुष्कर्म की दिल दहलाने वाली घटना के बाद यह बयान न केवल असंवेदनशील है, बल्कि यह उस पितृसत्तात्मक मानसिकता का आईना है जो महिलाओं की स्वतंत्रता को खतरा मानती है। एक प्रगतिशील समाज शासन से अपराध के खिलाफ कठोर कार्रवाई की उम्मीद करता है, न कि ऐसी सलाह की जो पीड़िता के जख्मों पर नमक छिड़के और उनकी आज़ादी को बेड़ियों में जकड़े। यह बयान न केवल पीड़िता के दर्द को गहराता है, बल्कि सवाल उठाता है: क्या शासन अपनी जिम्मेदारियों से मुँह मोड़ रहा है?

ममता बनर्जी का यह कहना कि "पुलिस हर घर के बाहर पहरा नहीं दे सकती," शायद उनकी सरकार की सीमाओं को दर्शाता है, मगर यह सवाल खड़ा करता है: यदि शासन ही सुरक्षा की गारंटी न दे, तो महिलाएँ किसके भरोसे जिएँ? सुरक्षा किसी भी लोकतंत्र का मूलभूत वादा है, न कि सरकार की दया। यह तर्क कि निजी मेडिकल कॉलेजों को अपनी छात्राओं, खासकर दूसरे राज्यों से आई लड़कियों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए, सही हो सकता है, लेकिन जब यह "रात में बाहर न निकलने" की शर्त के साथ आता है, तो यह अपराधियों को छूट देने और पीड़िताओं को कैद करने जैसा है। क्या महिलाओं की आज़ादी कुर्बान करना ही सुरक्षा का एकमात्र रास्ता है?

महिलाओं की सुरक्षा प्रशासनिक इच्छाशक्ति और कठोर कानून व्यवस्था पर टिकी है। अपराधियों के खिलाफ त्वरित और कड़ी कार्रवाई ही इस बुराई की जड़ काट सकती है। मगर जब सत्ता में बैठे लोग ही ऐसे बयान देते हैं, तो यह अपराधियों के हौसले बुलंद करता है। ममता बनर्जी ने अन्य राज्यों की घटनाओं का हवाला देकर समस्या को सामान्य बनाने की कोशिश की, जो न केवल जवाबदेही से पलायन है, बल्कि अपराध को छोटा दिखाने का प्रयास भी है। शासन का काम तुलना करना नहीं, बल्कि अपने क्षेत्र में न्याय और सुरक्षा सुनिश्चित करना है। दुर्गापुर की घटना केवल एक छात्रा पर नहीं, बल्कि उस तंत्र पर हमला है जो महिलाओं को सुरक्षित रखने में नाकाम रहा।

यह बयान उस पितृसत्तात्मक सोच का प्रतीक है जो महिलाओं की स्वतंत्रता को अपराध और अपराध को सामान्य मानता है। "रात में बाहर न निकलने" की सलाह महिलाओं की आज़ादी पर हमला है और उन्हें दोयम दर्जे का नागरिक ठहराती है। सच्चा बदलाव तभी आएगा जब शासन और समाज मिलकर यह सुनिश्चित करें कि हर लड़की, हर समय, हर जगह बिना डर के जी सके। सुरक्षा कंक्रीट की दीवारों से नहीं, बल्कि सशक्त कानून, त्वरित न्याय और अपराधियों को कठोर सजा से मिलती है।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के 2022 के आँकड़े चीख-चीखकर बताते हैं कि पश्चिम बंगाल में महिलाओं के खिलाफ अपराधों की दर राष्ट्रीय औसत से कहीं ऊँची है। बलात्कार, यौन उत्पीड़न और घरेलू हिंसा की घटनाएँ बेकाबू बढ़ रही हैं। ऐसे में ममता बनर्जी का बयान कि "लड़कियों को रात में बाहर नहीं निकलना चाहिए," न केवल असंवेदनशील है, बल्कि शासन की नाकामी को नंगा करता है। यदि सरकार यह कहे कि वह हर जगह सुरक्षा नहीं दे सकती, तो यह अपनी मूल जिम्मेदारी से पलायन है। कॉलेजों पर जिम्मेदारी डालना या सलाह देना काफी नहीं; जरूरत है ऐसी व्यवस्था की जो अपराधियों के मन में खौफ पैदा करे। इसके लिए पुलिस सुधार, त्वरित अदालती कार्रवाई और सामाजिक जागरूकता जैसे ठोस कदम अनिवार्य हैं।

2012 के दिल्ली निर्भया कांड के बाद बने कठोर कानूनों ने सजा को सख्त किया, लेकिन इनका असर तभी है जब इन्हें कड़ाई से लागू किया जाए। पश्चिम बंगाल को भी कानूनी ढाँचे को मजबूत करना होगा, पुलिस को संवेदनशील और जवाबदेह बनाना होगा, और स्कूलों-कॉलेजों से लेकर कार्यस्थलों तक जेंडर संवेदनशीलता को बढ़ावा देना होगा। तृणमूल कांग्रेस हमेशा महिलाओं के सशक्तीकरण की बात करती रही है, मगर ममता बनर्जी का यह बयान उनकी छवि और नीतियों को धूमिल करता है। यह उन लाखों महिलाओं के विश्वास को तोड़ता है जो उन्हें प्रगतिशील नेता मानती हैं।

दुर्गापुर की घटना ने साबित किया कि बयानबाजी और दोषारोपण से महिलाओं की सुरक्षा नहीं होगी। ममता बनर्जी को समझना होगा कि समाज तब सुरक्षित होगा जब अपराधियों को कठोर सजा मिले, न कि महिलाओं को बंधनों में बाँधा जाए। महिलाओं की स्वतंत्रता और सुरक्षा एक-दूसरे की पूरक हैं, विरोधी नहीं। जब तक यह सोच शासन और समाज में नहीं आएगी, ऐसी घटनाएँ रुकेंगी नहीं। समाज को यह भरोसा देना होगा कि हर महिला बिना डर के, अपनी मर्जी से जी सकती है।

ममता बनर्जी का यह बयान निराशाजनक होने के साथ-साथ उस सामाजिक और प्रशासनिक विफलता का प्रतीक है जो महिलाओं को उनकी आज़ादी और सम्मान से वंचित रखता है। सभ्य समाज तभी बनेगा जब शासन अपराधियों को कठघरे में लाए, न कि महिलाओं को घरों में कैद करने की सलाह दे। ममता जैसे नेताओं को साहसिक कदम उठाने होंगे, क्योंकि बदलाव की शुरुआत सत्ता के शीर्ष से होती है। यह समय खोखले बयानों का नहीं, बल्कि ऐसी कार्रवाई का है जो हर महिला को बिना डर के जीने की गारंटी दे।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

परंपरा को प्रगति से जोड़ता ग्रामीण पर्यटन

भारत के गाँवों की गलियों में उनकी परंपराएँ, संस्कृति और पीढ़ियों से चली आ रही अनगिनत कहानियाँ बसती हैं। भारत का सच्चा रूप शहरों की चमक में नहीं, बल्कि गाँवों की मिट्टी, उनके रंग-बिरंगे रीति-रिवाजों और प्राकृतिक सौंदर्य में झलकता है। ये गाँव न केवल सांस्कृतिक धरोहर के रक्षक हैं, बल्कि आर्थिक समृद्धि का एक अनछुआ खज़ाना भी हैं। ग्रामीण पर्यटन इस दिशा में एक प्रभावी और व्यावहारिक कदम है, जो आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक व सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा देता है।

ग्रामीण पर्यटन केवल पहाड़ों, नदियों या हरियाली तक सीमित नहीं है; यह एक जीवंत अनुभव है, जिसमें पर्यटक गाँव के दैनिक जीवन का हिस्सा बनते हैं। स्थानीय त्योहार, लोक नृत्य, हस्तशिल्प कार्यशालाएँ, पारंपरिक व्यंजन और ग्रामीणों के साथ संवाद पर्यटकों को एक अनूठा अनुभव देते हैं। उदाहरण के लिए, राजस्थान के कुम्भलगढ़ में कुंभलगढ़ महोत्सव स्थानीय कारीगरों को अपनी कला दिखाने का मंच देता है, जिससे उनकी आय बढ़ती है और पर्यटक राजस्थानी संस्कृति को गहराई से समझ पाते हैं। विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार, ग्रामीण पर्यटन वैश्विक पर्यटन उद्योग का १०% हिस्सा है और तेजी से बढ़ रहा है। भारत में पिछले दशक में ग्रामीण पर्यटन 15% की वार्षिक वृद्धि के साथ फल-फूल रहा है। यह आँकड़ा दर्शाता है कि ग्रामीण पर्यटन न केवल पर्यटकों को लुभाता है, बल्कि स्थानीय समुदायों के लिए आर्थिक अवसरों का द्वार भी खोलता है।

ग्रामीण पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाइयों तक ले जाता है। पर्यटक गाँवों में हस्तशिल्प, कपड़े, मसाले और स्थानीय व्यंजन खरीदते हैं, जबकि होमस्टे, गाइड सेवाएँ और परिवहन आय के अतिरिक्त स्रोत बनते हैं। एक अध्ययन के अनुसार, ग्रामीण पर्यटन से प्रेरित गाँवों में परिवारों की आय २५-३०% बढ़ी है। मिसाल के तौर पर, उत्तराखंड के मुनस्यारी में होमस्टे प्रोग्राम ने स्थानीय परिवारों की आय को दोगुना किया, जिससे कई परिवार अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा दे पाए। महिलाओं के लिए ग्रामीण पर्यटन विशेष रूप से सशक्तिकारी है। ग्रामीण भारत में महिलाएँ हस्तशिल्प, बुनाई और खाद्य प्रसंस्करण में माहिर हैं। मध्य प्रदेश के ओरछा में महिला समूहों द्वारा बनाए गए हस्तशिल्प उत्पाद डिजिटल प्लेटफॉर्म्स जैसे अमेजन और फ्लिपकार्ट पर बिक रहे हैं, जिससे उनकी आय 40% तक बढ़ी है। साथ ही, ग्रामीण पर्यटन युवाओं को शहरों की ओर पलायन से रोकता है, क्योंकि यह स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर पैदा करता है।

ग्रामीण पर्यटन भारत के गाँवों के लिए एक अनूठा अवसर है, जो सांस्कृतिक संरक्षण, आर्थिक सशक्तिकरण और सामाजिक एकता का आधार बन सकता है। यह न केवल स्थानीय परंपराओं और संस्कृति को जीवित रखता है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करता है। उदाहरण के लिए, गुजरात का रण उत्सव कच्छ की कला और संस्कृति को वैश्विक मंच पर ले जाता है, जहाँ लोकगीत, नृत्य और हस्तशिल्प पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इसी तरह, तमिलनाडु के चेट्टिनाड में पारंपरिक व्यंजनों और वास्तुकला ने युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़ने के साथ-साथ पर्यटकों का ध्यान खींचा है। ग्रामीण पर्यटन युवा पीढ़ी को उनकी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ता है। जब स्थानीय कला और परंपराएँ पर्यटकों द्वारा सराही जाती हैं, तो युवा इन्हें संरक्षित करने के लिए प्रेरित होते हैं। हालांकि, इस क्षेत्र में कई चुनौतियाँ हैं। अपर्याप्त आधारभूत संरचना, जैसे सड़क, स्वच्छ पानी और बिजली की कमी, पर्यटकों के लिए असुविधा का कारण बनती है। उदाहरण के लिए, हिमाचल प्रदेश के कुछ दूरस्थ गाँवों में सड़क मार्ग की कमी पर्यटन को सीमित करती है। साथ ही, स्थानीय समुदायों में जागरूकता और हॉस्पिटैलिटी प्रशिक्षण का अभाव भी एक बड़ी बाधा है।

इन चुनौतियों का समाधान सामुदायिक भागीदारी, सरकारी सहयोग और निजी निवेश से संभव है। भारत सरकार की "अतुल्य भारत" और "स्वदेश दर्शन" योजनाएँ आधारभूत संरचना और प्रशिक्षण को बढ़ावा दे रही हैं। स्थानीय युवाओं को हॉस्पिटैलिटी, गाइड प्रशिक्षण और डिजिटल मार्केटिंग में प्रशिक्षित करने से पर्यटन अनुभव बेहतर हो सकता है। साथ ही, सतत और पर्यावरण-अनुकूल पहल, जैसे सौर ऊर्जा, जैविक खेती और कचरा प्रबंधन, पर्यटकों को आकर्षित करने के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करते हैं। मेघालय का मावलिननॉन्ग गाँव, जिसे "एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव" कहा जाता है, इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। दूसरी चुनौती है स्थानीय समुदाय में जागरुकता और प्रशिक्षण की कमी। कई गाँवों में लोग पर्यटन के आर्थिक और सांस्कृतिक लाभों से अनजान हैं। इसके अलावा, हॉस्पिटैलिटी और पर्यटन प्रबंधन में प्रशिक्षण की कमी के कारण वे पर्यटकों को बेहतर अनुभव प्रदान करने में असमर्थ होते हैं।

इन चुनौतियों का समाधान सामुदायिक भागीदारी, सरकारी सहयोग और निजी निवेश के माध्यम से संभव है। स्थानीय युवाओं को हॉस्पिटैलिटी, गाइड प्रशिक्षण और डिजिटल मार्केटिंग में प्रशिक्षित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, भारत सरकार की "अतुल्य भारत" और "स्वदेश दर्शन" योजनाएँ ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आधारभूत संरचना और प्रशिक्षण पर ध्यान दे रही हैं। सतत और पर्यावरण-अनुकूल पर्यटन को प्राथमिकता देना भी महत्वपूर्ण है। गाँवों में सौर ऊर्जा, जैविक खेती और कचरा प्रबंधन जैसी पहलें पर्यटकों को आकर्षित करती हैं और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करती हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का उपयोग करके होमस्टे, हस्तशिल्प और स्थानीय व्यंजनों को वैश्विक बाजार तक पहुँचाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, मेघालय के मावलिननॉन्ग गाँव, जिसे "एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव" कहा जाता है, अपनी सतत पर्यटन नीतियों के कारण अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के बीच लोकप्रिय है।

ग्रामीण पर्यटन केवल आर्थिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह शहरी और ग्रामीण समुदायों के बीच एक सेतु भी है। जब शहरी पर्यटक गाँवों में आते हैं, तो वे न केवल प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते हैं, बल्कि स्थानीय जीवनशैली, परंपराओं और ज्ञान से भी परिचित होते हैं। यह अनुभव ग्रामीण समुदायों में आत्मविश्वास और सांस्कृतिक गर्व पैदा करता है। भविष्य में, ग्रामीण पर्यटन भारत के विकास का आधार बन सकता है। यह न केवल गाँवों की अर्थव्यवस्था को सशक्त करेगा, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक एकता को भी बढ़ावा देगा। यदि सही नीतियों और सामुदायिक सहयोग के साथ इसे लागू किया जाए, तो ग्रामीण पर्यटन भारत को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

ग्रामीण पर्यटन भारत के गाँवों के लिए एक सुनहरा अवसर है। यह न केवल आर्थिक विकास का साधन है, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक सशक्तिकरण का भी आधार है। हर गाँव की अपनी अनूठी कहानी है, और ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से ये कहानियाँ विश्व तक पहुँच सकती हैं। सरकार, समुदाय और निजी क्षेत्र के सहयोग से ग्रामीण पर्यटन भारत के विकास की नई दिशा बन सकता है, जो न केवल गाँवों को सशक्त करेगा, बल्कि पूरे देश को एक नई पहचान देगा। भविष्य में, ग्रामीण पर्यटन भारत के विकास का आधार बन सकता है। यह न केवल गाँवों की अर्थव्यवस्था को सशक्त करेगा, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक एकता को भी बढ़ावा देगा। सही नीतियों और सामुदायिक सहयोग के साथ, यह भारत को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। प्रत्येक गाँव की अपनी अनूठी कहानी है, और ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से ये कहानियाँ विश्व तक पहुँच सकती हैं, जो भारत को एक नई वैश्विक पहचान देगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

भारत और यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ के बीच ऐतिहासिक व्यापार समझौता

रामस्वरूप रावतसरे

भारत और यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (ईएफटीए) के बीच व्यापार और आर्थिक भागीदारी समझौता आधिकारिक तौर पर 1 अक्टूबर, 2025 से लागू हो गया है। इससे आइसलैंड, लिकटेंस्टीन, नॉर्वे और स्विट्जरलैंड के साथ आर्थिक सहयोग के एक नए युग की शुरुआत हुई है। 10 मार्च, 2024 को नई दिल्ली में इस समझौते पर हस्ताक्षर हुए थे।

जानकारी के अनुसार इस समझौते से अगले 15 वर्षों में भारत में 100 अरब डॉलर यानी 8 लाख 88 हजार 4 सौ करोड़ रुपए का निवेश होगा। साथ ही 10 लाख से ज्यादा सीधा रोजगार मिलेगा। इसके अलावा इससे जुड़े अप्रत्यक्ष रोजगार अलग होंगे। यह इन चार विकसित यूरोपीय देशों के साथ भारत का पहला मुक्त व्यापार समझौता है। वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच व्यापारिक समझौतों की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम माना जा रहा है।

चार यूरोपीय देशों, आइसलैंड, लिकटेंस्टीन, नॉर्वे और स्विट्जरलैंड का ये संगठन व्यापार के दृष्टिकोण से काफी अहम है। इसकी स्थापना 1960 में सदस्यों के बीच मुक्त व्यापार और आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। यूरोप में यूके और यूरोपीय संघ के बाद ईएफटीए अहम संगठन माना जाता है।

यह संगठन यूपोपीय संघ का हिस्सा नहीं हैं। चारों विकसित देश अपनी मजबूत अर्थव्यवस्थाओं, उच्च जीवन स्तर और इनोवेशन के लिए मशहूर हैं। इस समूह में मौजूद स्विट्जरलैंड पहले से ही भारत का प्रमुख व्यापारिक साझेदार है। उसके बाद नॉर्वे का स्थान आता है। इस समझौते से भारतीय वस्तुओं और सेवाओं को नया बाजार मिलेगा। साथ ही अत्याधुनिक तकनीक और निवेश से भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी। टीईपीए एक व्यापक और दूरदर्शी समझौता है। इसमें 14 अध्याय हैं, जो व्यापार के महत्वपूर्ण पहलुओं से जुड़े हैं। वस्तुओं के लिए बाज़ार तक पहुँच बनाना, व्यापार करना आसान बनाना, बेवजह की रुकावटों को दूर करना, पर्यावरण मानकों को मानना, व्यापार में तकनीकी बाधाएँ दूर करना, निवेश प्रोत्साहन, सेवाएँ, बौद्धिक संपदा अधिकार शामिल हैं।

किसी भी भारतीय मुक्त व्यापार समझौते में पहली बार ऐसा हुआ है कि समझौते में निवेश और रोजगार सृजन को बाध्यकारी बनाया गया है। ये 'आत्मनिर्भर भारत' की दिशा में अहम कदम है। इस समझौते का लक्ष्य अगले पंद्रह वर्षों में भारत में 100 अरब डॉलर यानी 8 लाख 88 हजार 4 सौ करोड़ रुपए का निवेश और दस लाख प्रत्यक्ष रोजगार सृजित करना है, जो इसे देश के आर्थिक इतिहास की सबसे दूरदर्शी व्यापारिक साझेदारियों में से एक बनाता है।

टीईपीए के मूल में एक मजबूत निवेश प्रक्रिया है। इसमें ईएफटीए देशों को शुरुआती 10 वर्षों के दौरान भारत में 50 अरब डॉलर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश करने और उसके बाद के पाँच वर्षों में 50 अरब डॉलर का अतिरिक्त निवेश करने की प्रतिबद्धता होगी। ये रकम अल्पकालिक पोर्टफोलियो निवेशों के बजाय विनिर्माण, इनोवेशन और अनुसंधान में दीर्घकालिक परियोजनाओं में लगाई जाएँगी।

इनसे भारत के प्रतिभाशाली लोगों को यूरोप के उन्नत तकनीकी नेटवर्क से जोड़कर दस लाख प्रत्यक्ष रोजगार सृजित होने का अनुमान बताया जा रहा है। इसे आसान बनाने के लिए, फरवरी 2025 में निवेशकों के लिए एक भारत-ईएफटीए डेस्क की स्थापना की गई है। जो नवीकरणीय ऊर्जा, विज्ञान, इंजीनियरिंग और डिजिटल बदलाव जैसे क्षेत्रों को प्राथमिकता देते हुए, छोटे और मध्यम आकार के उद्यमों को प्रोत्साहित करने के लिए संयुक्त उद्यमों और सहयोग को बढ़ावा देगा।

यह समझौता रणनीतिक रूप से टैरिफ को कम या पूरी तरह समाप्त करके संतुलित बाजार तक पहुँच को सुनिश्चित करेगा। ईएफटीए ने अपनी 92.2 प्रतिशत उत्पादों पर टैरिफ में छूट दी है, जिसमें भारत के 99.6 प्रतिशत निर्यात शामिल हैं, जिसमें सभी गैर-कृषि वस्तुएँ और प्रोसेस्ड कृषि उत्पाद शामिल हैं। बदले में, भारत ने अपनी 82.7 प्रतिशत टैरिफ पर रियायतें दी हैं, जिसमें ईएफटीए के 95.3 प्रतिशत निर्यात शामिल हैं।

जानकारों के अनुसार भारत ईएफटीए से 80 प्रतिशत से अधिक सोना आयात करता है, जहाँ प्रभावी शुल्क अपरिवर्तित रहते हैं। डेयरी, सोया, कोयला, फार्मास्यूटिकल्स, चिकित्सा उपकरण और कुछ खाद्य उत्पादों जैसे संवेदनशील घरेलू क्षेत्रों को या तो बाहर रखा गया है या पाँच से दस वर्षों में सिलसिलेवार तरीके से इन पर टैरिफ कटौती की जाएगी। इससे मेक इन इंडिया और उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन योजना जैसे कार्यक्रमों के तहत भारतीय उद्योगों को बदलाव के साथ- साथ प्रतिस्पर्धा के लिए पर्याप्त समय मिल रहा है।

इसकी एक प्रमुख विशेषता नर्सिंग, चार्टर्ड अकाउंटेंसी और वास्तुकला जैसे क्षेत्रों में पारस्परिक समझौतों का प्रावधान है। इससे कुशल पेशेवरों के लिए आने-जाने की सुविधा होगी। इसके अलावा, यह समझौता डिजिटल क्षेत्र के विकास में अहम भूमिका अदा करेगा। क्योंकि भारतीय टैलेंट को अस्थायी प्रवास के माध्यम से बाजार में प्रवेश करने का मौका मिलेगा। इससे सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में निर्यात को भी बढ़ावा मिलेगा।

हम कैसे खुश रहें! दूसरों को कैसे खुश रखें?

चंद्र मोहन

खुशी कोई एक निश्चित घटना नहीं है, बल्कि जीवन भर चलने वाली एक प्रक्रिया है..जीवन के हर पड़ाव पर खुशी के अलग-अलग कारण हो सकते हैं. यह व्यक्ति की अपनी सोच और अनुभवों पर निर्भर करती है.

इंसान तब सबसे ज्यादा खुश होता है जब वह अपने महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करता है, अपने प्रियजनों के साथ समय बिताता है, और समाज में योगदान देता है. खुशी एक व्यक्तिपरक भावना है और यह खुशी की परिभाषा पर निर्भर करती है; यह एक सार्वभौमिक सत्य नहीं है कि किस उम्र या परिस्थिति में हर कोई खुश होता है. उदाहरण के लिए, कुछ लोगों को वित्तीय स्थिरता में खुशी मिलती है, जबकि कुछ दूसरों के लिए दूसरों की मदद करने में आनंद पाते हैं.

खुशी के कुछ सामान्य कारण -

लक्ष्यों की प्राप्ति:
जब कोई व्यक्ति लंबे समय से मेहनत कर रहा होता है और अपने किसी उद्देश्य या लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है, तो उसे बहुत खुशी मिलती है.

सामाजिक जुड़ाव: परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताना, उनके साथ खुशी बांटना, और दूसरों के साथ अच्छे संबंध बनाना खुशी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है.

व्यक्तिगत विकास: अपनी कमजोरियों पर काबू पाना, नई चीजें सीखना, और जीवन के कठिन अनुभव से सीखकर आगे बढ़ना भी खुशी देता है.

समाज में योगदान:
दूसरों की मदद करना, किसी अच्छे काम को पूरा करना, और अपने आसपास एक सकारात्मक माहौल बनाना व्यक्ति को संतुष्टि और खुशी देता है.

जीवन की संतुष्टि: अपने जीवन से संतुष्ट होना और जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण रखना खुशी का एक बड़ा कारक है.

आत्म-देखभाल और शांति:
कुछ लोग अपने अकेलेपन का आनंद लेते हैं और शांत वातावरण में खुशी महसूस करते हैं. वे अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जैसे ध्यान और मेडिटेशन का अभ्यास.

खुश रहने के लिए कोई निश्चित उम्र नहीं है; खुशी एक मानसिक स्थिति है जो हर व्यक्ति के सोचने के तरीके और जीवन के नजरिए पर निर्भर करती है. शोध के अनुसार, जीवन में खुशी का स्तर 'यू-आकार' का होता है, जिसमें युवावस्था (लगभग 23 वर्ष) और बुढ़ापा (लगभग 69-70 वर्ष) में लोग अधिक खुश रहते हैं, जबकि मध्यम आयु (लगभग 40 से 50 वर्ष) में खुशी का स्तर घटता है.

विभिन्न अध्ययनों के अनुसार खुशी के चरम बिंदु

युवावस्था (लगभग 23 वर्ष):
इस उम्र में लोग अक्सर अपने जीवन को स्थिर करना शुरू करते हैं, करियर पर ध्यान देते हैं और स्वतंत्र महसूस करते हैं, जिससे उन्हें खुशी मिलती है.

अधेड़ उम्र में गिरावट:
30 से 50 की उम्र तक खुशी का स्तर घटता है और लोग अधिक चिंतित रहते हैं.

बुढ़ापे में फिर से वृद्धि (लगभग 69-70 वर्ष):
इस उम्र में लोग जीवन के अनुभव से संतुष्ट हो जाते हैं, भविष्य की चिंता कम करते हैं और वर्तमान पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं.

खुश रहने का सार -

मानसिकता और नजरिया:
खुशी उम्र की मोहताज नहीं है. यह आपकी सोचने की क्षमता और सकारात्मक दृष्टिकोण पर निर्भर करती है. आप छोटी-छोटी बातों में भी खुशियाँ ढूंढ सकते हैं.

वर्तमान में जीना:
वर्तमान क्षण को अपनाने और सराहना करने से हर उम्र में खुशी संभव है.

पूर्णतावाद छोड़ें:
अवास्तविक अपेक्षाओं को त्यागना और अपनी सभी खामियों के साथ खुद को स्वीकार करना एक अधिक संतुष्टिदायक जीवन की कुंजी है.

शौक और शौक:
उन गतिविधियों में शामिल होना जिनसे आपको आनंद मिलता है, तनाव को कम कर सकता है और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है.

खुश रहने के लिए सकारात्मक सोचें, नियमित व्यायाम करें, संतुलित आहार लें, पर्याप्त नींद लें, और परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताएं. अपने पसंदीदा काम करें, ध्यान व योग करें, प्रकृति में समय बिताएं, और दूसरों की मदद करें. अपनी तुलना दूसरों से न करें और खुद को समय दें.

सकारात्मक सोच और भावनात्मक कल्याण-

सकारात्मक सोच अपनाएं:
अपने विचारों को सकारात्मक बनाने का प्रयास करें, क्योंकि सोच जीवन और भावनाओं को दिशा देती है.

दूसरों से तुलना न करें:
दूसरों से अपनी तुलना करने से बचें, क्योंकि इससे आप दूसरों के मुकाबले खुद को कमतर महसूस कर सकते हैं.

खुद के साथ समय बिताएं:
अपने लिए 'मी-टाइम' निकालें और अपनी पसंदीदा गतिविधियों में समय बिताएं.

रचनात्मक और नई चीजें करें:
नई और रचनात्मक गतिविधियों में शामिल होने से आनंद और संतुष्टि मिलती है.

शारीरिक स्वास्थ्य -

नियमित व्यायाम करें:
शारीरिक स्वास्थ्य के लिए व्यायाम महत्वपूर्ण है, यहां तक कि 10 मिनट का व्यायाम भी फायदेमंद हो सकता है.

संतुलित और स्वस्थ आहार लें:
संतुलित आहार, जिसमें ताजे फल, सब्जियां, प्रोटीन और स्वस्थ वसा शामिल हों, शरीर और मन दोनों को ऊर्जावान रखता है.

पर्याप्त नींद लें:
अच्छी नींद मानसिक स्वास्थ्य और खुशी के लिए बहुत ज़रूरी है.

सामाजिक और भावनात्मक जुड़ाव

परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताएं: अपने प्रियजनों के साथ संबंध मजबूत बनाने से खुशी और समर्थन मिलता है.

दूसरों की मदद करें: दूसरों की मदद करने से संतुष्टि और खुशी मिलती है.

हंसे और मुस्कुराएं: हंसना और मुस्कुराना आपके मनोबल को बढ़ाता है और आसपास सकारात्मक ऊर्जा फैलाता है.

अन्य महत्वपूर्ण आदतें

योग और ध्यान करें:
योग और ध्यान मन की शांति बनाए रखने में मदद करते हैं.

प्रकृति के पास जाएं:
बाहर किसी हरे-भरे स्थान पर समय बिताना मानसिक सुकून देता है.

"हमारी खुशियाँ हमारे हाथ" कहने का मतलब है कि खुशी कोई बाहरी चीज़ नहीं है, बल्कि यह हमारे अपने विचारों, दृष्टिकोणों और कर्मों पर निर्भर करती है. हम अपनी परिस्थिति का सामना कैसे करते हैं, उसमें सकारात्मकता ढूंढते हैं या नहीं, और अपने जीवन को देखने का नजरिया बदलते हैं, इससे हमारी खुशी निर्धारित होती है.

इस विचार के मुख्य पहलू:

व्यक्तिगत जिम्मेदारी:
हम अपने जीवन के लिए खुद जिम्मेदार हैं और हमारी खुशी का नियंत्रण हमारे ही हाथ में है.

सकारात्मक दृष्टिकोण:
एक सकारात्मक दृष्टिकोण हमें मुश्किलों से निपटने और उनसे सीख लेने में मदद करता है, जिससे हम मजबूत बनते हैं.

आंतरिक स्रोत:
खुशी बाहर की चीजों या दूसरे लोगों से नहीं आती, बल्कि यह हमारे अंदर से आती है.

नजरिए में बदलाव:
अगर हम जीवन को देखने का अपना नजरिया बदलें, तो हमें वह खुशी मिल सकती है जिसकी हम तलाश कर रहे हैं.

आत्म-निर्भरता:
हमें दूसरों की राय या उनके हाथों में अपनी खुशी की चाबी सौंपने की बजाय, उसे खुद लेना चाहिए.

संक्षेप में, यह एक ऐसा विचार है जो हमें प्रेरित करता है कि हम अपनी खुशी के मालिक खुद हैं और उसे अपने विचारों और व्यवहार से बना सकते हैं.

किसी को खुश करने की शुरुआत बस वहां मौजूद रहने से होती है - सुनें, ठीक करने में जल्दबाजी न करें, और पूछें कि उन्हें वास्तव में क्या चाहिए. छोटी-छोटी बातें किसी को आपकी सोच से कहीं ज़्यादा खुश कर सकती हैं. एक प्यार भरा नोट, साथ में सैर, उनका पसंदीदा नाश्ता, या एक चेक-इन मैसेज वाकई किसी का दिन खुशनुमा बना सकता है।

जागरूकता और सुरक्षा: क्यों हैं मानक हमारे जीवन के प्रहरी

विश्व मानक दिवस, जो हर साल 14 अक्टूबर को मनाया जाता है, हमारे जीवन में व्यवस्था, सुरक्षा और विश्वास की नींव को रेखांकित करता है। यह महज़ एक औपचारिक उत्सव नहीं, बल्कि उन अदृश्य मानकों का सम्मान है जो आधुनिक समाज को एकजुट और समृद्ध बनाते हैं। मानक वे मज़बूत धागे हैं जो उद्योग, व्यापार, उपभोक्ता और पर्यावरण को एक सामंजस्यपूर्ण ढांचे में पिरोते हैं। ये तकनीकी दिशानिर्देशों से कहीं बढ़कर हैं; ये विश्वास, समानता और स्थिरता का आधार हैं। यह दिन हमें याद दिलाता है कि मानकों के अभाव में हमारा जीवन अव्यवस्था और असुरक्षा के भंवर में खो सकता है। चाहे बात रोज़मर्रा के उपकरणों की हो, स्वास्थ्य सेवाओं की, या पर्यावरण संरक्षण की, मानक हर कदम पर हमारा साथ देते हैं, हमें एक सुरक्षित, सुगम और टिकाऊ भविष्य की ओर ले जाते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय मानक दिवस, जो प्रत्येक वर्ष 14 अक्टूबर को मनाया जाता है, की शुरुआत 1970 में अंतर्राष्ट्रीय मानक संगठन (आईएसओ) द्वारा मानकों के वैश्विक महत्व को रेखांकित करने के लिए की गई थी। 1947 में स्थापित आईएसओ, आज विश्व स्तर पर मानकों के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाता है। इसके साथ ही अंतर्राष्ट्रीय इलेक्ट्रोटेक्निकल कमीशन (आईईसी) और अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (आईटीयू) जैसे संगठन भी तकनीकी नवाचार, वैश्विक व्यापार, उपभोक्ता सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने वाले मानकों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। ये मानक न केवल उद्योगों और समाज के लिए एक साझा मापदंड स्थापित करते हैं, बल्कि एक सुरक्षित, टिकाऊ और समृद्ध विश्व की नींव भी रखते हैं। अंतर्राष्ट्रीय मानक दिवस २०२५ की थीम "एक बेहतर विश्व के लिए हमारा साझा दृष्टिकोण" इस बात को रेखांकित करती है कि मानक केवल तकनीकी दिशानिर्देश नहीं, बल्कि एक ऐसी साझा दृष्टि हैं जो हमें नवाचार, समावेशिता और स्थिरता के माध्यम से एक बेहतर भविष्य की ओर ले जाती है।

मानकों का प्रभाव हमारे दैनिक जीवन में सर्वव्यापी है, फिर भी हम इसे अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं। सुबह जब आप अपने स्मार्टफोन को चार्ज करते हैं, तो वह चार्जर आईएसओ और आईईसी जैसे वैश्विक मानकों के अनुरूप होता है, जो न केवल आपके डिवाइस की सुरक्षा और कार्यक्षमता सुनिश्चित करता है, बल्कि आपको जोखिमों से भी बचाता है। इसी तरह, आपके घर की बिजली व्यवस्था, आपके द्वारा उपभोग किया जाने वाला भोजन, या आपके द्वारा संचालित वाहन—सभी अंतर्राष्ट्रीय मानकों की बदौलत सुरक्षित, विश्वसनीय और कुशल हैं। इन मानकों के अभाव में, तकनीकी खराबी से लेकर उपभोक्ताओं की जान को खतरा तक बढ़ सकता है। उदाहरण के लिए, आईएसओ २२००० जैसे खाद्य सुरक्षा मानक यह गारंटी देते हैं कि आपका भोजन न केवल स्वच्छ है, बल्कि स्वास्थ्य के लिए पूरी तरह सुरक्षित भी है।

मानकों का महत्व केवल उपभोक्ताओं तक सीमित नहीं है; ये वैश्विक व्यापार, अर्थव्यवस्था और सामाजिक कल्याण के लिए आधारशिला हैं। मानक अंतरराष्ट्रीय व्यापार को सरल और विश्वसनीय बनाते हैं, क्योंकि ये विभिन्न देशों के उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता को एकसमान करते हैं। उदाहरणस्वरूप, आईएसओ 9001 गुणवत्ता प्रबंधन मानक विश्व भर में लाखों संगठनों द्वारा अपनाया गया है, जो उनके उत्पादों और सेवाओं को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में विश्वसनीय बनाता है। इसी तरह, आईएसओ 14001 पर्यावरण प्रबंधन मानक कंपनियों को पर्यावरणीय प्रभाव कम करने और सतत विकास को बढ़ावा देने में सक्षम बनाता है। ये मानक न केवल पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देते हैं, बल्कि उपभोक्ताओं और निवेशकों के बीच संगठनों की साख को भी मजबूत करते हैं। मानकों के अभाव में, वैश्विक व्यापार में अविश्वास और अराजकता फैल सकती है, जो आर्थिक प्रगति को ठप कर सकती है।

डिजिटल युग में मानकों की प्रासंगिकता और भी गहन हो गई है। साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) जैसे क्षेत्रों में मानक पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए, आईएसओ/आईईसी २7001 सूचना सुरक्षा मानक संगठनों को डेटा उल्लंघनों और साइबर खतरों से बचाता है। आज, जब डेटा हमारी सबसे मूल्यवान संपत्ति है, ये मानक न केवल संगठनों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं, बल्कि उपभोक्ताओं का भरोसा भी कायम रखते हैं। इसके अतिरिक्त, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) और स्मार्ट सिटी जैसी तकनीकों में मानक उपकरणों और प्रणालियों के बीच तालमेल सुनिश्चित करते हैं। बिना मानकों के, तकनीकी प्रगति अव्यवस्थित और असुरक्षित हो सकती है, जिससे नवाचार की गति मंद पड़ सकती है।

मानकों का सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभाव भी गहरा है। आईएसओ 50001 जैसे ऊर्जा दक्षता मानक ऊर्जा खपत और कार्बन उत्सर्जन को कम करके जलवायु परिवर्तन से लड़ने में योगदान देते हैं। उदाहरण के लिए, ऊर्जा-कुशल उपकरण और भवन उपभोक्ताओं के बिजली बिल को कम करते हैं और पर्यावरणीय बोझ को हल्का करते हैं। इसी तरह, आईएसओ 13485 जैसे चिकित्सा उपकरण मानक मरीजों को सुरक्षित और प्रभावी उपचार सुनिश्चित करते हैं। ये मानक न केवल तकनीकी उत्कृष्टता को बढ़ावा देते हैं, बल्कि सामाजिक समानता और कल्याण को भी प्रोत्साहित करते हैं। संक्षेप में, मानक न केवल प्रगति के प्रहरी हैं, बल्कि एक सुरक्षित, टिकाऊ और समावेशी भविष्य के निर्माणकर्ता भी हैं।

विश्व मानक दिवस हमें मानकों के गतिशील और निरंतर विकसित होने वाले स्वरूप की याद दिलाता है। तकनीकी नवाचार और सामाजिक परिवर्तनों के साथ तालमेल बिठाने के लिए मानकों को समय के साथ अपडेट करना अनिवार्य है। उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तन और डिजिटल परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों ने नए मानकों के निर्माण को प्रेरित किया है। आईएसओ जैसे संगठन उभरती आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए नवीन मानक विकसित करते हैं, जिसमें तकनीकी विशेषज्ञों, नीति निर्माताओं, उद्योगपतियों और उपभोक्ताओं का सहयोग शामिल होता है। विश्व मानक दिवस इस सामूहिक प्रयास को प्रोत्साहित करता है और सभी हितधारकों को मानकों के निर्माण व कार्यान्वयन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करता है।

विश्व मानक दिवस यह स्पष्ट करता है कि मानक महज तकनीकी दस्तावेज नहीं, बल्कि हमारे समाज की रीढ़ हैं। वे हमें सुरक्षा, विश्वास और प्रगति का आधार प्रदान करते हैं। यह दिन हमें याद दिलाता है कि मानकों का पालन करना केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि एक अनमोल अवसर है—जो हमें बेहतर उत्पाद, उन्नत सेवाएँ और एक समृद्ध भविष्य की ओर ले जाता है। मानकों को अपनाकर हम न केवल अपने जीवन को सरल और सुरक्षित बनाते हैं, बल्कि एक ऐसी दुनिया का निर्माण करते हैं जो समावेशी, टिकाऊ और समृद्ध हो। 14 अक्टूबर का यह दिन हमें प्रेरणा देता है कि हम मानकों को न केवल अपनाएँ, बल्कि उनके विकास में योगदान दें और उन्हें अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाएँ।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

कपासः पर्यावरण लचीलापन के साथ समृद्धि बुनाई

विजय गर्ग

विश्व के सबसे बड़े कपास उत्पादकों में से एक भारत इस अवसर का नेतृत्व कर रहा है। पीढ़ियों से इस फसल ने देश भर की ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं और समुदायों को आकार देने के लिए लाखों छोटे किसानों का समर्थन किया है। आज, जबकि इस क्षेत्र को जलवायु परिवर्तनशीलता, भूमिगत जल की कमी और बाजार में उतार-चढ़ाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, भारत भर में कपास के खेतों में एक शांत क्रांति हो रही है।

कपास सिर्फ एक कपड़े से अधिक है; जो दुनिया भर में अर्थव्यवस्थाओं, पारिस्थितिकी प्रणालियों और मानव जीवन को एक साथ जोड़ता है विजय गार्ग कपास फसल ग्रामीण परिवारों के लिए पर्यावरणीय स्वास्थ्य और अधिक स्थिर, न्यायसंगत आजीविका सुनिश्चित कर सकती है। विजय गार्ग कपास सिर्फ एक कपड़े से अधिक है; यह एक ऐसा फाइबर है जो दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं, पारिस्थितिकी प्रणालियों और मानव जीवन को एक साथ जोड़ता है। कपड़ों से लेकर उन आजीविकाओं तक जो इसकी खेती पर निर्भर करती हैं, कपास वैश्विक व्यापार और ग्रामीण समृद्धि दोनों का केंद्र बना हुआ है। चूंकि दुनिया उगने और रहने के अधिक टिकाऊ तरीकों की तलाश कर रही है, कपास एक शक्तिशाली उदाहरण प्रदान करता है कि किसान इस परिवर्तन का नेतृत्व कैसे कर सकते हैं - पर्यावरण को संरक्षित करते हुए अधिक सुरक्षित और सार्थक आजीविका बना रहे हैं।

विश्व के सबसे बड़े कपास उत्पादकों में से एक भारत इस अवसर का नेतृत्व कर रहा है। पीढ़ियों से इस फसल ने देश भर की ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं और समुदायों को आकार देने के लिए लाखों छोटे किसानों का समर्थन किया है। आज, जबकि इस क्षेत्र को जलवायु परिवर्तनशीलता, भूमिगत जल की कमी और बाजार में उतार-चढ़ाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, भारत भर में कपास के खेतों में एक शांत क्रांति हो रही है।

स्थिरता अब कोई विकल्प नहीं है, बल्कि एक आवश्यकता है और विकास के लिए एक शक्तिशाली लीवर है। पूरे भारत में, किसानों की बढ़ती संख्या ऐसी प्रथाओं को अपना रही है जो कपास को अधिक उत्पादक और लचीला बनाती हैं। जैविक और पुनरुत्पादक खेती, फसल रोटेशन, इंटरक्राफ्टिंग और एकीकृत कीट प्रबंधन के उदाहरण उत्साहवर्धक परिणाम दिखा रहे हैं - मिट्टी का स्वास्थ्य सुधारना, पानी को बचाना और रासायनिक इनपुट पर निर्भरता कम करना। ये दृष्टिकोण क्षतिग्रस्त भूमि को बहाल कर रहे हैं, उत्पादन लागत कम कर रहे हैं और किसानों को अप्रत्याशित मौसम के पैटर्न से अनुकूल होने में मदद कर रहे हैं। अब चुनौती यह है कि इन सिद्ध प्रथाओं को बिखरे हुए सफलताओं से लेकर व्यापक स्वीकृति तक ले जाया जाए, ताकि जलवायु परिवर्तन के बावजूद कपास जीवित रहे। हालांकि, परिवर्तन खेत में नहीं रुक सकता। वास्तविक प्रभाव के लिए किसानों को मजबूत आवाज और बाजार तक अधिक निष्पक्ष पहुंच होनी चाहिए। आज, अधिकांश छोटे-छोटे कपास उत्पादक अभी भी मध्यस्थों की लंबी श्रृंखलाओं के माध्यम से बेचते हैं, जिससे उन्हें कम सौदेबाजी शक्ति और अंतिम मूल्य का न्यूनतम हिस्सा मिलता है।

आज, अधिकांश छोटे-छोटे कपास उत्पादक अभी भी मध्यस्थों की लंबी श्रृंखलाओं के माध्यम से बेचते हैं, जिससे उन्हें कम सौदेबाजी शक्ति और अंतिम मूल्य का न्यूनतम हिस्सा मिलता है। जबकि पूरे भारत में किसान सामूहिक और उत्पादक संगठनों के उदाहरण सामने आ रहे हैं, वे अभी भी कपास क्षेत्र का केवल एक अंश ही प्रतिनिधित्व करते हैं। इन मॉडलों का विस्तार यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि किसान अपने उत्पादों को एकत्रित कर सकें, गुणवत्ता में सुधार कर सकें और सीधे जिमर्स, कपड़ा इकाइयों और जिम्मेदार ब्रांडों से बातचीत कर सकें। जब छोटे किसान बेहतर ढंग से संगठित होते हैं और उन बाजारों से जुड़े रहते हैं जो टिकाऊ कपास को महत्व देते हैं, तो उन्हें न केवल अधिक आय मिलती है बल्कि उनकी स्थिरता भी बढ़ जाती है। यदि भारत के कपास किसानों को वास्तविक आर्थिक सशक्तिकरण में परिवर्तित किया जाए तो इन मार्गों का बड़े पैमाने पर निर्माण आवश्यक है।

आर्थिक परिवर्तनों के साथ ही सामाजिक परिवर्तन भी महत्वपूर्ण है। कृषि कार्यबल का एक बड़ा और अक्सर कम मान्यता प्राप्त हिस्सा बनने वाली महिलाओं को कपास की सफलता के लिए आवश्यक योगदानकर्ता माना जा रहा है। जब महिला किसानों को प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी और वित्तीय संसाधनों तक समान पहुंच मिलती है तो पूरे समुदाय लाभान्वित होते हैं। महिलाओं की भागीदारी को मजबूत करना और किसान सहकारी संस्थाओं और उत्पादक संगठनों का समर्थन करना ऐसी प्रणालियां बनाने में मदद करता है जहां ज्ञान, अवसर और लाभ अधिक समान रूप से साझा किए जाते हैं।

बेशक, चुनौतियां बनी हुई हैं। जलवायु तनाव, मिट्टी की उर्वरता और श्रम असमानताओं से कृषि समुदायों की लचीलापन का परीक्षण जारी है। फिर भी इनमें से कई समस्याओं के समाधान पहले ही मौजूद हैं; अब पैमाने की आवश्यकता है। जल की बचत करने और प्रभावी उपयोग को बढ़ावा देने, मिट्टी के स्वास्थ्य को बहाल करने तथा कामकाजी परिस्थितियों में सुधार लाने वाले सिद्ध प्रथाओं को स्थायी अंतर बनाने के लिए बहुत अधिक किसानों तक पहुंचना चाहिए। यही वह जगह है जहां सहयोग महत्वपूर्ण हो जाता है। नागरिक समाज के संगठनों, निगमों, सरकारी एजेंसियों और परोपकारी लोगों की किसान शिक्षा, जागरूकता और क्षमता निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

बेशक, चुनौतियां बनी हुई हैं। जलवायु तनाव, मिट्टी की उर्वरता और श्रम असमानताओं से कृषि समुदायों की लचीलापन का परीक्षण जारी है। फिर भी इनमें से कई समस्याओं के समाधान पहले ही मौजूद हैं; अब पैमाने की आवश्यकता है। जल की बचत करने और प्रभावी उपयोग को बढ़ावा देने, मिट्टी के स्वास्थ्य को बहाल करने तथा कामकाजी परिस्थितियों में सुधार लाने वाले सिद्ध प्रथाओं को स्थायी अंतर बनाने के लिए बहुत अधिक किसानों तक पहुंचना चाहिए। यही वह जगह है जहां सहयोग महत्वपूर्ण हो जाता है। नागरिक समाज के संगठनों, निगमों, सरकारी एजेंसियों और परोपकारी लोगों की किसान शिक्षा, जागरूकता और क्षमता निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

उत्साहवर्धक रूप से, सहयोग की यह बढ़ती पारिस्थितिकी तंत्र दर्शाता है कि कपास का भविष्य वास्तव में टिकाऊ हो सकता है - जहां उत्पादकता, पर्यावरणीय संतुलन और मानव कल्याण एक साथ आगे बढ़ते हैं। जब टिकाऊपन कपास की खेती, प्रसंस्करण और मूल्य निर्धारण के लिए केंद्रीय बन जाता है तो यह न केवल फसल को बचाता है बल्कि उन लाखों परिवारों को भी बचाता है जिनके जीवन इसके साथ जुड़े हुए हैं। कॉटन की कहानी हमेशा गहरी मानवीय रही है। यह उन हाथों की कहानी है जो बीज बोते हैं, चुनते हैं, घूमते हैं और बुनते हैं। टिकाऊपन को अपनाकर, भारत यह प्रदर्शित कर सकता है कि समय-समय पर स्थापित कृषि प्रथाएं और समकालीन दृष्टिकोण समुदायों तथा पर्यावरण दोनों की रक्षा के लिए कैसे एकजुट हो सकते हैं। दांव अधिक नहीं हो सकते, लेकिन संभावना भी नहीं। कपास दुनिया का सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला प्राकृतिक फाइबर है, और आज किए गए निर्णय - खेत से कपड़े तक - यह निर्धारित करेंगे कि क्या यह लाखों किसानों और उनके समुदायों की आजीविका का समर्थन करता रहेगा। भारत कपास को सतत विकास का मॉडल बनाने में अग्रणी बना सकता है, यह दिखाता है कि पारंपरिक फसल ग्रामीण परिवारों के लिए पर्यावरण स्वास्थ्य और अधिक स्थिर, न्यायसंगत आजीविका दोनों को कैसे सुरक्षित कर सकती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद, गली कौर चंद एमएचआर मलट

संपादकीय
चिंतन-मनन

ब्रह्मांड और उससे आगे

विजय गार्ग

ग्रह विज्ञान और भूभौतिकी गहरे परस्पर जुड़े हुए लेकिन अलग-अलग क्षेत्र हैं जो ब्रह्मांड की खोज करते हैं, विशेष रूप से ठोस शरीर। उनका संबंध उनके फोकस और सामान्य तरीकों से सारांशित किया जा सकता है। ग्रह विज्ञानः व्यापक अंतःविषय क्षेत्र ग्रह विज्ञान (या ग्रहविज्ञान) एक अंतर-अनुशासनात्मक क्षेत्र है जो हमारे सौर मंडल और उपग्रहों दोनों के भीतर ग्रह, चंद्रमा, क्षुद्रग्रह और धूमकेतुओं सहित आकाशगंगाओं का अध्ययन करने पर केंद्रित है।

फोकसः इसका उद्देश्य इन आकाशीय निकायों के गठन, संरचना, विकास और बातचीत को समझना है।

व्याप्तीः यह बहुत व्यापक है, जिसमें ग्रह भूविज्ञान (सतह की विशेषताएं और संरचना), ग्रह वायुमंडल, जीव विज्ञान (जीवन के लिए खोज) तथा महत्वपूर्ण रूप से ग्रह भौतिकी जैसे उप-अनुशासन शामिल हैं। भूभौतिक विज्ञानः भौतिकी का अनुप्रयोग भूभौतिकी पृथ्वी विज्ञान की एक शाखा है जो किसी आकाशीय शरीर की भौतिक प्रक्रियाओं और गुणों का अध्ययन करने के लिए भौतिकी के सिद्धांतों का उपयोग करती है।

फोकसः शास्त्रीय रूप से, यह पृथ्वी की आंतरिक संरचना, रचना, गतिशीलता (जैसे प्लेट टेक्टोनिक्स, भूकंपीय विज्ञान, ज्वालामुखीवाद) और उसके गुरुत्वाकर्षण और चुंबकीय क्षेत्रों का अध्ययन करता है।

व्याप्तीः आधुनिक विज्ञान में, परिभाषा अक्सर अन्य ग्रह निकायों की भौतिक प्रक्रियाओं और गुणों को शामिल करने के लिए विस्तारित होती है - यही वह जगह है जहां यह सीधे तौर पर ग्रह विज्ञान से मेल खाता है।

सामान्य भूमि दोनों विषयों के बीच सबसे मजबूत संबंध ग्रह भूभौतिक विज्ञान का उप-अनुशासन है।

साझा विषय वस्तुः ग्रहों और चंद्रमाओं (पृथ्वी के अलावा) की आंतरिक संरचना और गतिशीलता का अध्ययन करने के लिए ग्रह वैज्ञानिक भूभौतिक तकनीकों पर बहुत अधिक भरोसा करते हैं। उदाहरण के लिए, मंगल ग्रह का मूल या बृहस्पति के चंद्रमा यूरोपा का भूभौतिक अध्ययन शामिल है।

पद्धतिगत ओवरलैप

भूकंपीय विज्ञानः आंतरिक संरचना का मानचित्रण करने के लिए भूकंप की तरंगों का विश्लेषण करना (पृथ्वी पर और उदाहरण के लिए चंद्रमा और मंगल ग्रह पर उपयोग किया जाता है)।

गुरुत्वाकर्षणः द्रव्यमान और आंतरिक परतों के वितरण का अनुमान लगाने के लिए शरीर के गुरुत्वाकर्षक क्षेत्र का नक्शा बनाना।

चुंबकत्वः सौर हवाओं के विरुद्ध मूल गतिशीलता और सुरक्षा को समझने के लिए चुम्बकीय क्षेत्रों का अध्ययन करना।

भूगर्भीयः अन्य विश्वों पर मान्टल कन्वेक्शन और प्लेट टेक्टोनिक्स (या इसकी कमी) जैसे आंतरिक के दीर्घकालिक, बड़े पैमाने पर गतिशीलता का मॉडलिंग।

मौलिक सिद्धांतः चट्टान और बर्फ के शरीर की ठोस संरचना और प्रक्रियाओं को समझने के लिए दोनों क्षेत्रों में भौतिक विज्ञान, गणित और रसायनशास्त्र के बुनियादी कानून लागू होते हैं। मूलतः, ग्रह विज्ञान वह व्यापक अनुशासन है जो पृथ्वी से परे की दुनियाओं का अध्ययन करने के लिए भूभौतिकी सहित कई क्षेत्रों के उपकरणों और ज्ञान का उपयोग करता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद, गली कौर चंद एमएचआर

95 वर्षों में किसी भी भारतीय वैज्ञानिक को नोबेल पुरस्कार नहीं मिला है

विजय गर्ग

भारत में कार्यरत किसी भी वैज्ञानिक को भौतिकी, रसायन विज्ञान या चिकित्सा में नोबेल पुरस्कार जीते हुए 95 वर्ष हो चुके हैं। 1930 में, सी.वी. रमन को भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला, जो अब तक किसी भारतीय वैज्ञानिक को दिया जाने वाला एकमात्र सम्मान है। उसके बाद, हरगोबिंद खुराना (1968, चिकित्सा), सुमन्यम चंद्रशेखर (1983, भौतिकी), और वेंकटरमन रामकृष्णन (2009, रसायन विज्ञान) ने यह पुरस्कार जीता है, लेकिन वे सभी वे अपने काम के समय भारत से बाहर रह रहे थे और भारतीय नागरिक नहीं थे। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, भारत में वैज्ञानिक और अनुसंधान क्षमताओं के विकास में कई बाधाएँ हैं। बुनियादी अनुसंधान पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता, सरकारी धन कम है और नौकरशाही काम को धीमा कर देती है। निजी क्षेत्र में अनुसंधान के लिए प्रोत्साहन और अवसर सीमित हैं। विश्वविद्यालयों में अनुसंधान क्षमता कमज़ोर है, और जनसंख्या के सापेक्ष शोधकर्ताओं की संख्या विश्व औसत से पाँच गुना कम है। यही कारण है कि भारत में नोबेल पुरस्कार के लिए पात्र वैज्ञानिकों की संख्या बहुत कम है। भारत के कई वैज्ञानिकों को नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया है, लेकिन उन्हें कभी यह पुरस्कार नहीं मिला। मेघनाद साहा, होमी भाभा और सत्येंद्रनाथ बोस को भौतिकी में, जी.एन. रामचंद्रन और टी. शेषाद्रि को रसायन विज्ञान में, और उपेंद्रनाथ ब्रह्मचारी को चिकित्सा में नामांकित किया गया था। जगदीश चंद्र बोस और के.एस. कृष्णन जैसे वैज्ञानिकों को उनके महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद भौतिकी में नोबेल पुरस्कार से वंचित कर दिया गया था। ई.सी.जी. सुदर्शन को 1979 और 2005 में दो बार भौतिकी में नोबेल पुरस्कार से वंचित किया गया था। सी.एन.आर. राव के ठोस-अवस्था रसायन विज्ञान में योगदान को भी नोबेल-योग्य माना गया था, लेकिन उन्हें अभी तक यह सम्मान नहीं मिला है। वैज्ञानिक पुरस्कारों में संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप का दबदबा है। उत्तरी अमेरिका और यूरोप के बाहर केवल नौ देशों के शोधकर्ताओं ने विज्ञान में नोबेल पुरस्कार जीते हैं। 21 पुरस्कारों के साथ, जापान के पास एशिया में सबसे अधिक पुरस्कार हैं। अमेरिका और यूरोप में, मजबूत अनुसंधान बुनियादी ढांचे, वित्तीय सहायता और बेहतर पारिस्थितिकी तंत्र के कारण वहां के वैज्ञानिकों को नोबेल पुरस्कार मिले हैं। पुरस्कार प्रणाली ही एकमात्र कारण नहीं है कि भारतीय वैज्ञानिकों को मान्यता नहीं मिल रही है। अनुसंधान निधि, बुनियादी ढाँचे और सरकारी सहायता की कमी ने वैज्ञानिकों को अपने काम को पूरी तरह से विकसित करने से रोक दिया है। भविष्य में, भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा नोबेल पुरस्कार जीतना मुख्यतः उनकी व्यक्तिगत प्रतिभा और सरलता पर निर्भर करेगा, न कि प्रणालीगत समर्थन पर।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

त्योहार हैं तो क्या खाइए! पर इस तरह....

विजय गर्ग

कई बार चाहकर भी हम त्योहार व शादी के सीजन में अपने खाने-पीने अथवा डाइट के प्रति सचेत नहीं रह पाते हैं। इधर-उधर आने-जाने या मेहमानवाजी और फेस्टिवल सीजन में सभी का दैनिक रुटीन थोड़ा डिस्टर्ब होने लगता है, इसलिए शारीरिक व मानसिक तौर पर अनहेल्दी व अनफिट महसूस करने लगते हैं। कुछ बातों पर गौर कर खाने-पीने का भरपूर मजा लेते हुए भी स्वस्थ और फिट रहा जा सकता है।

कई बार चाहकर भी हम त्योहार व शादी के सीजन में अपने खाने-पीने अथवा डाइट के प्रति सचेत नहीं रह पाते हैं। इधर-उधर आने-जाने या मेहमानवाजी और फेस्टिवल सीजन में सभी का दैनिक रुटीन थोड़ा डिस्टर्ब होने लगता है, इसलिए शारीरिक व मानसिक तौर पर अनहेल्दी व अनफिट महसूस करने लगते हैं। कुछ बातों पर गौर कर खाने-पीने का भरपूर मजा लेते हुए भी स्वस्थ और फिट रहा जा सकता है। आइए जानें कैसे... ?

त्योहार या घर में कोई कार्यक्रम हो, ऐसे में ब्रेकफास्ट-लंच और डिनर तीनों समय ही यदि कैलोरीयुक्त तला-भुना गरिष्ठ खाना परोसा जा रहा हो तो आवश्यक है कि स्वयं पर कंट्रोल रखें। एक ही समय घी-तेल से बने खाद्य-पदार्थों का आनंद लें, बाकी समय हैल्दी फूड (अनाज व अनाज से बने खाद्य-पदार्थ) और कुछ हल्का-फुल्का स्नैक्स या फल और सब्जियों का जूस ही लें।

त्योहार के समय घरों में अधिकतर लड्डू व बर्फी बनाए जाते हैं। इनमें सूखे मेवों-घी का इस्तेमाल अधिक होता है। यदि चाहें तो मिठाई जी भरकर खाएं। बस, इनको सेहतमंद बनाने के लिए काजू-बादाम व अन्य सूखे मेवे भी बारीक काटकर 1-2 चम्मच घी का प्रयोग कर भून लें। तापमान कम ही रखें, ताकि जलें नहीं और फिर आपस में सबको मिलाएं।

घर में खाने-खिलाने के लिए, जो भी नाश्ता अथवा नमकीन खाद्य-पदार्थ बनाएं। उनमें तेल, शक्कर और मसालों की मात्रा कम हो। नमकीन या कुछ हल्के-फुल्के स्नैक्स कम चिकनाई में तैयार हों। पोहा-मुरमुरे-भुने चने-कॉर्नफ्लेक्स, तिल, मखाने व गुड़ का उपयोग किया जा सकता है। जब वह तैयार हो जाएं तो कुछ समय के लिए टिशू पेपर पर रखकर छोड़ दें, ताकि अतिरिक्त वसा सोख ली जाए।

परंपरागत नाश्ते की बजाय कुछ अलग तरह के व्यंजन बनाकर मेहमानों को परोसें तो ज्यादा अच्छा रहेगा। मसलन, वेजिटेबल इडली, खमण ढोकला या अंकुरित दालों को मिलाकर चटपटी चाट, भेलपूरी व इसके अलावा फ्रूट चाट बनाकर भी खिला सकते हैं।

यदि एक-दो बार कहीं बाहर खाना जरूरी हो तो ब्रेकफास्ट में तला हुआ या फिर अधिक वसायुक्त ना खाकर दलिया-कॉर्नफ्लेक्स, पोहा या उपमा खाएं। इसी तरह लंच या डिनर में एक समय सुपाच्य खाना खाएं। सलाद, फल व पेय पदार्थों का अधिक सेवन करें।

खाली कक्षा का भूत क्यों दिख रहा है

विजय गर्ग

"खाली कक्षाओं का भूत" प्राथमिक स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालयों तक शैक्षिक संस्थानों में छात्रों की नामांकन और उपस्थिति में काफी कमी के बारे में बढ़ती चिंता और संभावित खतरे को संदर्भित करता है। यह घटना जनसांख्यिकीय बदलावों, महामारी के बाद परिवर्तनों, आर्थिक दबाव और विकासशील शैक्षिक प्राथमिकताओं के जटिल मिश्रण से प्रेरित है। खाली कक्षाओं के प्राथमिक कारण 1। जनसांख्यिकीय कारक और नामांकन में कमी कई क्षेत्रों में, विशेष रूप से विकसित देशों में सबसे बुनियादी कारण छात्र जनसंख्या की गिरावट है

जन्म दरें गिर रही हैंः पिछले दशक में कम जन्म दरों का मतलब है कि स्कूल प्रणाली (विशेषकर K-12) में कम बच्चे प्रवेश कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप छोटे समूह होते हैं।

प्रवासन पैटर्नः घरेलू प्रवास (परिवार उच्च लागत वाले शहरी/तटीय क्षेत्रों से दूर चले जाते हैं) और अंतर्राष्ट्रीय आव्रजन में परिवर्तन छात्रों के असमान वितरण का कारण बन सकते हैं, जिससे कुछ जिलों में तीव्र गिरावट आ सकती है।

अंतर्राष्ट्रीय छात्र पूल में कमीः भू-राजनीतिक और नीतिगत परिवर्तन, विशेष रूप से उच्च शिक्षा में, अंतरराष्ट्रीय छात्रों की संख्या को कम कर सकते हैं, जिससे विश्वविद्यालय के नामांकन और वित्त पर प्रभाव पड़ सकता है।

पुरानी अनुपस्थिति और छात्र निष्क्रियता यह उन छात्रों को संदर्भित करता है जो नामांकित होते हैं, लेकिन अक्सर कक्षाओं से चूक जाते हैं, एक समस्या जिसे महामारी द्वारा अक्सर बढ़ाया जाता है

महामारी के बाद शिफ्टः वर्चुअल लर्निंग की विस्तारित अवधि ने कक्षाओं को सामान्य बनाया और कई छात्रों में दिनचर्या और अनुशासन का अभाव पैदा किया।

व्याख्यानों में मूल्य की कमीः छात्रों, विशेष रूप से उच्च शिक्षा में, ऑनलाइन सामग्री (रेकॉर्ड किए गए व्याख्यान, डिजिटल संसाधन) तक पहुंचने की तुलना में व्याख्यान को अप्रभावी, पुरानी या कम कुशल मान सकते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य और तनावः छात्रों की चिंता, अवसाद और स्कूल समुदाय से जुड़ने की कमी के कारण पुरानी अनुपस्थिति की दर अधिक हो सकती है।

शैक्षिक विकल्पों में परिवर्तन परिवार पारंपरिक सार्वजनिक शिक्षा के विकल्पों की खोज कर रहे हैं

होमस्कूलिंग का उदयः अधिक परिवार अपने बच्चों को घर पर शिक्षित करना चुन रहे हैं, अक्सर अधिक व्यक्तिगत या लचीले पाठ्यक्रम की तलाश कर रहे हैं।

निजी स्कूलों में स्थानांतरणः कुछ क्षेत्रों में, परिवारों ने अपने बच्चों को सार्वजनिक विद्यालयों से वापस ले लिया - विशेष रूप से महामारी के कारण बंद होने के दौरान या तुरंत बाद - और उन्हें निजी संस्थानों में नामांकित कर दिया, जो अक्सर पहले व्यक्तिगत शिक्षा पर लौटते थे।

वैकल्पिक शिक्षण पथः ऑनलाइन प्रमाणपत्र, ट्रेड स्कूल और गैर-डिग्री मार्गों की अधिक स्वीकृति, विशेष रूप से उच्च शिक्षा में, पारंपरिक कॉलेज नामांकन के साथ प्रतिस्पर्धा करती है।

वित्तीय और परिचालन चुनौतियां कई स्कूलों के लिए, खाली कक्षाएं सीधे वित्तीय परेशानी में बदल जाती हैं

वित्तपोषण में कटौतीः स्कूल की धनराशि अक्सर छात्र नामांकन से जुड़ी होती है; कम छात्रों का मतलब राज्य/स्थानीय राजस्व कम होता है, जिससे जिलों को कार्यक्रम (कला, वैकल्पिक, मानसिक स्वास्थ्य) काटने, कर्मचारियों को बर्खास्त करने या यहां तक कि स्कूल बंद करने के लिए मजबूर किया जाता है।

उच्च शिक्षक टर्नओवरः कम गुणवत्ता वाले, अपर्याप्त संसाधनों या खराब प्रशासन वाले स्कूल अक्सर उच्च शिक्षकों के कारोबार से जूझते हैं, जिससे माता-पिता का आत्मविश्वास और नामांकन अधिक कमजोर हो जाता है।

शिक्षा की लागतः उच्च शिक्षण, विशेष रूप से उच्च शिक्षा में, निवेश पर अनिश्चित वापसी के साथ मिलकर कुछ संभावित छात्रों को नामांकन पूरी तरह से स्थगित करने या छोड़ने का कारण बनता है। "भूत" एक चिंता है क्योंकि ये खाली कमरे शिक्षा प्रणाली के भीतर गहरी, संरचनात्मक चुनौतियों का संकेत देते हैं, जिससे स्कूल बंद हो जाते हैं, शिक्षण की गुणवत्ता कम होती है और कार्यबल और समाज पर दीर्घकालिक नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद, गली कौर चंद एमएचआर मलट

"गुरुहीन स्कूल, अधूरा भविष्य- शिक्षा व्यवस्था पर संकट की दस्तक"

हरियाणा के सरकारी स्कूलों में 12,000 से अधिक शिक्षक पद रिक्त हैं, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता बुरी तरह प्रभावित हो रही है। नूंह जैसे जिलों में एक शिक्षक पर 100 से अधिक बच्चों का बोझ है। सरकार की धीमी भर्ती प्रक्रिया और असमान पदस्थापन इस संकट को गहरा कर रहे हैं। शिक्षा नीति 2020 के अनुसार हर बच्चे को समान व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अधिकार है। इसके लिए सरकार को त्वरित, पारदर्शी और स्थायी भर्ती नीति लागू करनी चाहिए ताकि हर कक्षा में शिक्षक और हर बच्चे के जीवन में ज्ञान का उजाला हो।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

हरियाणा की शिक्षा व्यवस्था इस समय एक गहरे संकट से गुजर रही है। सरकारी स्कूलों में शिक्षकों की भारी कमी ने न केवल पढ़ाई की गुणवत्ता को प्रभावित किया है, बल्कि बच्चों के भविष्य पर भी गंभीर प्रश्नचिह्न खड़ा कर दिया है। हाल ही में आई रिपोर्टों के अनुसार प्रदेश में 12,000 से अधिक शिक्षक पद रिक्त हैं। यह संख्या केवल एक प्रशासनिक आँकड़ा नहीं, बल्कि उन हजारों बच्चों की उम्मीदों का प्रतीक है जो अपने जीवन की दिशा तय करने के लिए इन स्कूलों पर निर्भर हैं। स्थिति इतनी भयावह है कि कुछ जिलों में एक-एक शिक्षक पर 100 से अधिक बच्चों की जिम्मेदारी आ चुकी है।

हरियाणा जैसे शिक्षित और विकसित राज्य में यह स्थिति बेहद चिंताजनक है। एक ओर सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्य पूरे करने की बात करती है, वहीं दूसरी ओर स्कूलों में ब्लैकबोर्ड तक खाली हैं। शिक्षक समाज की नींव होते हैं, वे केवल पढ़ाई नहीं कराते बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। जब इन स्कूलों में गुरुजी ही न हों, तो बच्चों का मनोबल, सीखने की क्षमता और भविष्य सभी खतरे में पड़ जाते हैं।

सरकारी आंकड़े बताते हैं कि राज्य के विभिन्न विभागों में शिक्षकों की भर्ती प्रक्रिया वर्षों से अधर में लटकी हुई है। बार-बार घोषणाएँ होती हैं, पदों का विज्ञापन निकलता है, लेकिन या तो चयन प्रक्रिया धीमी रहती है या फिर नियुक्तियाँ समय पर नहीं हो पातीं। नतीजा यह है कि हजारों स्कूल ऐसे हैं जहाँ या तो एक ही शिक्षक पूरी जिम्मेदारी उठा रहा है, या फिर अस्थायी आधार पर 'गेस्ट टीचर' व्यवस्था से काम चलाया जा रहा है। यह स्थिति बच्चों के हित में नहीं है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्पष्ट रूप से कहा गया था कि एक शिक्षक पर अधिकतम 30-35 विद्यार्थियों से अधिक का बोझ नहीं होना चाहिए। ऐसा इसलिए ताकि शिक्षक व्यक्तिगत ध्यान दे सकें और सीखने की प्रक्रिया को सार्थक बनाया जा सके। मगर नूंह, पलवल, महेंद्रगढ़ जैसे जिलों में यह अनुपात 1:100 तक पहुँच गया है। यह केवल एक शैक्षणिक समस्या नहीं बल्कि सामाजिक असमानता की कहानी भी कहता है। क्योंकि सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे वही हैं जिनके माता-पिता निजी शिक्षा का खर्च नहीं उठा सकते। इस वर्ग के लिए सरकारी स्कूल ही एकमात्र आशा हैं, और जब इन स्कूलों की दशा ऐसी हो जाए, तो समाज का भविष्य ही संकट में पड़ जाता है।

सरकार ने वर्ष 2024 में 14,295 नए पदों पर भर्ती की घोषणा की थी। लेकिन जिस गति से प्रक्रिया आगे बढ़ रही है, उसे देखकर लगता है कि यह लक्ष्य 2025 के अंत तक भी पूरा नहीं हो पाएगा। शिक्षकों की भर्ती के लिए लंबी प्रक्रिया, कोर्ट के केस, दस्तावेज़ी जाँच, रिजर्वेशन विवाद, और विभागीय सुस्ती — सब मिलकर स्थिति को और जटिल बना रहे हैं। वहीं दूसरी ओर, जो शिक्षक सेवानिवृत्त हो रहे हैं, उनकी जगह तुरंत नई नियुक्ति नहीं की जा रही। इसका अर्थ यह हुआ कि रिक्तियों की संख्या समय के साथ बढ़ती ही जा रही है।

हरियाणा के कुछ जिलों में हालात इतने खराब हैं कि स्कूलों में एक ही शिक्षक हिंदी, गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन सब कुछ पढ़ा रहा है। नतीजतन, बच्चों की समझ कमजोर होती जा रही है। शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में पास करवाना नहीं बल्कि सोचने, समझने और समाज में योगदान देने की क्षमता विकसित करना होता है। लेकिन ऐसी परिस्थितियों में बच्चों को केवल औपचारिक शिक्षा मिल रही है, वास्तविक ज्ञान नहीं।

शिक्षक केवल एक नौकरी नहीं, बल्कि समाज के विकास की रीढ़ हैं। उनके बिना कोई भी नीति, कोई भी योजना सफल नहीं हो सकती। शिक्षक का होना ही विद्यालय की आत्मा का होना है। जब शिक्षकों की कमी होती है, तो स्कूल भवन तो रह जाते हैं, लेकिन शिक्षा का सार कहीं खो जाता है।

सरकारी स्कूलों में बच्चों की संख्या लगातार घट रही है क्योंकि अभिभावक अब निजी स्कूलों की ओर झुक रहे हैं। लेकिन निजी स्कूल हर वर्ग के लिए सुलभ नहीं। ग्रामीण इलाकों में तो कई बार सरकारी स्कूल ही शिक्षा का एकमात्र माध्यम हैं। जब यहाँ संसाधन नहीं, शिक्षक नहीं और सुविधाएँ नहीं, तो शिक्षा केवल एक दिखावा बनकर रह जाती है।

राज्य सरकार ने कई बार दावा किया है कि शिक्षकों की भर्ती जल्द पूरी की जाएगी, लेकिन जमीनी स्तर पर बदलाव न के बराबर है। शिक्षा विभाग की फाइलें कार्यालयों में घूमती रहती हैं जबकि स्कूलों में बच्चे बिना पढ़ाई के दिन बिताते हैं। शिक्षा के इस संकट को दूर करने के लिए केवल घोषणाएँ काफी नहीं होंगी, बल्कि ठोस कार्ययोजना बनानी होगी।

सबसे पहले तो यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि हर विद्यालय में विषयवार पर्याप्त संख्या में शिक्षक हों। साथ ही, जो पद लंबे समय से रिक्त हैं, उन्हें अस्थायी नहीं बल्कि स्थायी भर्ती के माध्यम से भरा जाए। गेस्ट टीचर व्यवस्था एक अस्थायी उपाय थी, लेकिन अब यह स्थायी समाधान बन गई है, जो कि शिक्षा की गुणवत्ता के लिए नुकसानदायक है।

दूसरा, शिक्षकों के स्थानांतरण और पदस्थापन में पारदर्शिता लाई जाए। कई बार होता यह है कि कुछ स्कूलों में शिक्षक अधिक होते हैं जबकि कुछ स्कूलों में एक भी नहीं। यह असमान वितरण भी एक बड़ी समस्या है। डिजिटल तकनीक की मदद से इस स्थिति को संतुलित किया जा सकता है।

तीसरा, शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जो शिक्षक सेवा में हैं, उन्हें समय-समय पर नई शिक्षण तकनीकों और पद्धतियों का प्रशिक्षण मिले ताकि वे बच्चों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली से जोड़ सकें।

सरकार को यह समझना होगा कि शिक्षा खर्च नहीं बल्कि निवेश है। जब राज्य शिक्षा पर ध्यान देता है, तभी उसका सामाजिक और आर्थिक विकास संभव होता है। यदि बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिलेगी, तो आने वाले वर्षों में यह कमी देश की उत्पादकता, नवाचार और सामाजिक सद्भाव पर सीधा असर डालेगी।

हरियाणा ने कई क्षेत्रों में प्रगति की है — उद्योग, खेल, कृषि और प्रशासन में राज्य की पहचान बनी है। लेकिन शिक्षा में यह कमी उस छवि को धूमिल कर रही है। हर बच्चा तभी सक्षम नागरिक बनेगा जब उसे बचपन से उचित मार्गदर्शन और शिक्षा मिलेगी। स्कूलों में शिक्षकों की कमी केवल एक प्रशासनिक गलती नहीं बल्कि एक नैतिक जिम्मेदारी का उल्लंघन भी है।

शिक्षक ही वह कड़ी हैं जो समाज और ज्ञान को जोड़ती है। जिस दिन हम इस कड़ी को कमजोर कर देंगे, उसी दिन समाज में अंधकार फैलने लगेगा। बच्चे जब बिना शिक्षक के स्कूल जाते हैं, तो यह केवल एक शैक्षणिक विफलता नहीं बल्कि राष्ट्र की असफलता भी है।

अब समय आ गया है कि सरकार शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दे। केवल भवन बनाना, स्मार्ट क्लास लगाना या किताबें बांटना पर्याप्त नहीं है। इन सबका अर्थ तभी है जब हर कक्षा में शिक्षक खड़ा हो, बच्चों की आँखों में सवाल हों और उन सवालों के जवाब देने वाला कोई गुरु मौजूद हो।

शिक्षा के प्रति लापरवाही का सबसे बड़ा नुकसान आने वाली पीढ़ी भुगतेगी। एक शिक्षक की अनुपस्थिति का अर्थ है सैकड़ों बच्चों की क्षमता का अधूरा रह जाना। इसीलिए यह केवल एक विभागीय मसला नहीं, बल्कि समाज का प्रश्न है।

यदि हरियाणा को वास्तव में 'शिक्षा राज्य' बनाना है तो सबसे पहले शिक्षकों की कमी को दूर करना होगा। सरकार को चाहिए कि वह भर्ती प्रक्रिया को पारदर्शी, त्वरित और निष्पक्ष बनाए। साथ ही, शिक्षकों को उनके योगदान के अनुरूप सम्मान और प्रोत्साहन मिले।

हरियाणा के शिक्षा मंत्री से लेकर प्रशासनिक अधिकारियों तक सभी को इस मुद्दे की गंभीरता को समझना चाहिए। यदि शिक्षा पर निवेश नहीं किया गया, तो भविष्य में यह सबसे बड़ी सामाजिक चुनौती बन जाएगी। स्कूलों में ब्लैकबोर्ड खाली हैं, लेकिन इससे भी ज्यादा खाली हैं बच्चों के सपने, जो शिक्षक के बिना अधूरे हैं।

शिक्षक केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि समाज के विचारों, संस्कारों और भविष्य का निर्माणकर्ता है। हरियाणा में शिक्षकों की कमी ने यह साबित कर दिया है कि शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ कमजोर हो चुकी है। अब जरूरत है कि सरकार और समाज दोनों मिलकर इस दिशा में ठोस कदम उठाएं। हर बच्चे का अधिकार है कि उसे शिक्षित किया जाए, और यह अधिकार तभी पूरा होगा जब हर स्कूल में शिक्षक मौजूद हो।

घुसपैठिए सिर्फ राजनीतिक मुद्दा नहीं हैं

राजेश कुमार पासी

देश के गृह मंत्री अमित शाह नरेंद्र मोहन स्मृति व्याख्यान और साहित्य सृजन पुरस्कार समारोह में लोगों को संबोधित कर रहे थे। वैसे यह एक बौद्धिक कार्यक्रम था लेकिन गृह मंत्री होने की हैसियत से उन्होंने देश में बढ़ती घुसपैठ की समस्या को वहां उठा दिया। उन्होंने कहा कि देश में मुस्लिम आबादी में बढ़ोतरी बांग्लादेश और पाकिस्तान से हो रही घुसपैठ का नतीजा है। उन्होंने आगे कहा कि हम घुसपैठियों की पहचान कर उन्हें देश से बाहर निकालने की प्रक्रिया जारी रखेंगे। मतदान का अधिकार सिर्फ उन लोगों को मिलना चाहिए जो इस देश के नागरिक हैं। उन्होंने कहा कि घुसपैठ को राजनीति की नजर से नहीं देखना चाहिए और न ही ऐसे लोगों को राजनीतिक संरक्षण मिलना चाहिए। उनका कहना है कि अगर दुनिया का हर व्यक्ति बिना रोक-टोक यहां आने लगे तो हमारा देश धर्मशाला बन जाएगा।

इसके अलावा जनगणना के आंकड़ों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों से हिन्दू आबादी घट रही है, जबकि मुस्लिम आबादी तेजी से बढ़ी है। उन्होंने कहा कि 1951 में देश में हिन्दू आबादी 84% थी और मुसलमान 9.8% थे। 2011 तक हिन्दू घटकर 79% रह गए जबकि मुसलमानों की जनसंख्या बढ़कर 14.2% हो गई। उन्होंने बताया कि अब मुस्लिम आबादी लगभग 14.6% तक पहुंच चुकी है और इसकी बड़ी वजह घुसपैठ में बढ़ोतरी है। देखा जाए तो अमित शाह ने घुसपैठ के मुद्दे को पहली बार नहीं उठाया है, वो विभिन्न मंचों से इस मुद्दे को उठाते रहे हैं। गृह मंत्री होने के कारण इस पर कार्यवाही करना भी उनकी जिम्मेदारी है। इस पर वो कई बार जवाब दे चुके हैं कि सीमा को पूरी तरह से सील करना संभव नहीं है, इसलिए घुसपैठिए देश में आ रहे हैं। उन्होंने वादा किया है कि वो बांग्लादेश की सीमा को पूरी तरह से सील करने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन इसमें राज्य सरकारों का सहयोग नहीं मिल रहा है। इसकी वजह यह है कि जमीन का अधिग्रहण करना राज्य सरकारों का काम है लेकिन कई राज्य सरकारें इस काम में केंद्र का सहयोग नहीं कर रही हैं।

भारत में हर मुद्दे पर राजनीति होती है. इसी तरह घुसपैठ का मुद्दा भी राजनीतिक हो गया है। कुछ ऐसे मुद्दे होते हैं जो कभी खत्म नहीं होते। ये मुद्दे पिछले 78 सालों से चलते आ रहे हैं। जो भी विपक्ष में होता है, वो सत्ता पक्ष के खिलाफ उन मुद्दों को उठाता है। मंहगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार ऐसे ही मुद्दे हैं जो हर चुनाव में विपक्ष का हथियार बनते हैं फिर चाहे सत्ता में कोई भी हो। इसकी वजह यह है कि ये मुद्दे कभी खत्म होने वाले नहीं हैं। भारत में 1971 से घुसपैठ की समस्या शुरू हुई थी, जब पाकिस्तानी सेना के जुल्मों से डर कर बांग्लादेशियों ने भारत में शरण लेना शुरू किया। तब से लेकर आज तक यह घुसपैठ जारी है और अब पाकिस्तानी और रोहिंग्या भी इस घुसपैठ का हिस्सा बन गए हैं। उपरोक्त तीन मुद्दों की तरह घुसपैठ भी अब एक ऐसा मुद्दा बन गया है, जो कभी खत्म होने वाला नहीं है। इसमें बदलाव यह आया है कि भाजपा ने इसे बड़ा मुद्दा बना दिया है। विपक्ष को इस मुद्दे पर बचाव करने की जरूरत नहीं थी लेकिन घुसपैठिए उसके वोट बैंक बन चुके हैं इसलिए वो इस मुद्दे का बचाव कर रहा है। आक्रमण ही सर्वश्रेष्ठ रक्षा नीति है, इस पर चलते हुए विपक्ष घुसपैठ न रोक पाने की विफलता के लिए केंद्र की भाजपा सरकार को घेर रहा है।

विपक्ष का बड़ा आरोप यह है कि जब पिछले 11 सालों से भाजपा केंद्र सरकार में है तो वो घुसपैठ को क्यों नहीं रोक पाई है। इसके अलावा विपक्ष का कहना है कि सरकार को बताना चाहिए कि वो अब तक कितने घुसपैठियों को देश से बाहर निकाल सकी है। विपक्ष का कहना है कि भाजपा मुख्य मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए घुसपैठ का मुद्दा लेकर आई है। सवाल यह है कि क्या घुसपैठ कोई समस्या नहीं है, ये सिर्फ भाजपा का एक राजनीतिक मुद्दा है? क्या देश को इस मुद्दे की अनदेखी कर देनी चाहिए और दूसरे मुद्दों पर ध्यान देना चाहिए। सवाल यह भी है कि भाजपा चुनाव के समय घुसपैठ का मुद्दा क्यों ले आती है। विपक्ष भी भाजपा पर आरोप लगाता है कि भाजपा हर चुनाव में घुसपैठ का मुद्दा ले आती है। विपक्ष के लिए भी सवाल है कि वो इस मुद्दे से भागना क्यों चाहता है और इस मुद्दे पर चर्चा से डरता क्यों है।

विपक्ष कुछ भी कहे लेकिन आज घुसपैठिये भारत का नहीं बल्कि पूरी दुनिया का मुद्दा बन चुके हैं। पूरा यूरोप, अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और कई देश इस समस्या से जूझ रहे हैं। यूरोप सहित कई देश तो शरणार्थियों से परेशान हैं क्योंकि उनके कारण वहां सामाजिक सद्भाव बिगड़ रहा है। ये शरणार्थी उन देशों की कानून-व्यवस्था के लिए बड़ी समस्या बन गए हैं और उनकी डेमोग्राफी भी तेजी से बदल रही है। जो समस्या उन देशों में शरणार्थियों के कारण पैदा हो रही है, वही समस्या भारत में घुसपैठियों की वजह से पैदा हो रही है। भारत के सीमावर्ती राज्यों सहित पूरे पूर्वोत्तर और पूर्वी राज्यों की डेमोग्राफी में घुसपैठियों की वजह से बड़ा बदलाव आ रहा है। ये घुसपैठिए भविष्य में भारत की सुरक्षा व्यवस्था के लिए बड़ा खतरा बन सकते हैं। अमित शाह ने घुसपैठ की समस्या को सिर्फ राजनीतिक कारणों से नहीं उठाया है, वो इसकी गंभीरता की ओर इशारा कर रहे हैं। विपक्ष घुसपैठियों के मुद्दे को भटकाने के लिए इसे मुस्लिम समाज से जोड़ देता है। कई राज्यों में बांग्लादेशियों के खिलाफ चल रही कार्यवाही को टीएमसी प्रमुख ममता बनर्जी ने बांग्ला भाषियों के खिलाफ कार्यवाही बता दिया है।

वास्तव में पूरा विपक्ष घुसपैठियों का समर्थक है, क्योंकि ये विपक्ष का बड़ा वोट बैंक बन चुके हैं। घुसपैठ की समस्या लगभग 50 साल पुरानी है। विपक्ष देश को एक गंभीर बीमारी देकर गया है और अब वो लाइलाज हो चुकी है। अब वो राजनीति कर रहा है कि सरकार इस समस्या का समाधान नहीं कर पा रही है जबकि वो अभी भी सरकार के काम में रोड़े अटका रहा है। जो घुसपैठिए पिछले 50 सालों से देश में रह रहे हैं, उन्हें निकालना लगभग असंभव काम है। इसकी वजह यह है कि उनके पास भारतीय नागरिक होने के सारे दस्तावेज आ चुके हैं। वो अब इस देश की मुस्लिम आबादी में इस तरह से समायोजित हो चुके हैं कि उन्हें अलग कर पाना संभव नहीं है। सरकार सिर्फ पिछले 10-15 साल पहले आए कुछ घुसपैठियों के खिलाफ कार्यवाही कर सकती है। यह भी आसान नहीं है क्योंकि इस काम में उसे विपक्षी दलों की सरकारों का सहयोग मिलना बहुत मुश्किल है। भारत सरकार को यह भी पता नहीं है कि भारत में कितने लोग घुसपैठ करके रह रहे हैं। विपक्ष भी यही सवाल सरकार से पूछता रहता है कि देश में घुसपैठियों की संख्या क्या है। विपक्ष को अंदाजा है कि घुसपैठियों के खिलाफ कार्यवाही करना आसान नहीं है, इसलिए वो सरकार को ही घेरने की कोशिश में लगा रहता है।

भाजपा इस मुद्दे को राजनीतिक रंग देकर हिन्दुत्व की राजनीति कर रही है, यहां से विपक्ष की समस्या शुरू होती है। अमित शाह बांग्लादेश और पाकिस्तान के हिन्दुओं को घुसपैठिया नहीं मानते हैं बल्कि सीएए के माध्यम से उन्हें नागरिकता देने का प्रावधान भी कर दिया गया है। भाजपा बांग्लादेशी और रोहिंग्या मुस्लिमों की घुसपैठ को मुद्दा बना रही है ताकि विपक्ष को राष्ट्र विरोधी और हिन्दू विरोधी साबित किया जा सके। विपक्ष ने जब एसआइआर का विरोध किया तो भाजपा ने इसे घुसपैठियों को बचाने की मुहिम घोषित कर दिया। वास्तव में सच भी यही है कि विपक्ष घुसपैठियों का वोट कटने से डरा हुआ है। वो नहीं चाहता कि घुसपैठियों का वोट कट जाए क्योंकि ये सारे वोट उसके खाते में जाते हैं। बंगाल में एसआइआर का विरोध ममता बनर्जी इसलिए कर रही हैं क्योंकि उन्हें घुसपैठियों के वोट कटने का डर सता रहा है। अमित शाह भी कहते हैं कि घुसपैठियों को रोकना मुश्किल है लेकिन समस्या यह है कि कुछ राज्य इन घुसपैठियों को शरण दे रहे हैं। कई मामलों में यह सच सामने आया है कि कई राज्यों में घुसपैठियों को भारत का नागरिक बनाने के लिए जरूरी दस्तावेज तैयार किए जा रहे हैं। भारत में आने के कुछ ही दिनों बाद इनके पास आधार कार्ड, राशन कार्ड और वोटर कार्ड आ जाता है। जब इनके पास दस्तावेज आ जाते हैं तो ये लोग भारत के दूसरे राज्यों में चले जाते हैं। पुलिस के लिए भी इनको घुसपैठिया साबित करना मुश्किल होता है। एक पूरा इकोसिस्टम घुसपैठियों की मदद के लिए भारत में काम कर रहा है।

"मां" को समर्पित सन्निधि संगोष्ठी' एवं रिपोर्ताज का लोकार्पण

डॉ.शंभू पंवार

नई दिल्ली। राजघाट स्थित गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा के सभागार में काकासाहेब कालेलकर एवं विष्णु प्रभाकर की स्मृति को समर्पित 'सन्निधि संगोष्ठी' में "मां" विषय पर केंद्रित रचनाओं के काव्यपाठ का भव्य आयोजन हुआ। संगोष्ठी' की अध्यक्षता अंतरराष्ट्रीय ख्यातिनाम लेखिका, साहित्यकार डॉ. सविता चड्ढा ने की, वहीं वर्ल्ड रिकॉर्ड धारक एवं अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार डॉ. शंभू पंवार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ साहित्यकार एवं कुशल संचालक प्रसून लतांत ने किया।कार्यक्रम का शुभारंभ प्रसून लतांत ने मां के प्रतीक स्वरूप वरिष्ठ साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर की सहधर्मिणी श्रीमती सुशीला प्रभाकर एवं लेखक कुमार सुबोध की माताजी श्रीमती सत्यवती शर्मा के चित्रों पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया। सभागार में उपस्थित सभी जनों ने अपनी-अपनी माताओं को स्मरण करते हुए भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी।सन्निधि संगोष्ठी" की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए संचालक लतांत ने अवगत कराया कि "सन्निधि संगोष्ठी" की स्थापना गांधी जी द्वारा मुंबई में की गई थी, जिसे बाद में काकासाहेब कालेलकर दिल्ली लाए। तत्पश्चात अतुल विष्णु प्रभाकर, श्रीमती अनुराधा अतुल प्रभाकर तथा कुमार सुबोध द्वारा मंचासीन विभूतियों का अंगवस्त्र और उपहार प्रदान कर सम्मान किया गया।

कुमार सुबोध की रिपोर्ताज' का हुआ लोकार्पण

इस अवसर पर लेखक कुमार सुबोध की नवीन पुस्तक 'रिपोर्ताज' का लोकार्पण अतिथि डॉ. सविता चड्ढा, डॉ. शंभू पंवार, एवं डॉ.कल्पना पाण्डेय 'नवग्रह', अतुल विष्णु प्रभाकर, समाजसेवी प्रसून लतांत, लेखक कुमार सुबोध, अधिवक्ता प्रदीप शर्मा के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ।लेखक कुमार सुबोध ने अपनी पुस्तक रिपोर्ताज' की चर्चा करते हुए बताया कि यह पुस्तक पिछले सवा वर्ष में राजधानी दिल्ली - एनसीआर के साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आयोजनों की रिपोर्टों का संकलन है, जिसे उन्होंने अपनी माताजी को समर्पित किया है।

कार्यक्रम की अध्यक्ष

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ.सविता चड्ढा ने 'रिपोर्ताज' को पत्रकारिता के क्षेत्र में अभिनव और उपयोगी योगदान बताते हुए कहा मैंने पत्रकारिता पर कई पुस्तकें लिखीं, किंतु 'रिपोर्ताज' जैसी पुस्तक पहली बार देखी है। यह न केवल रिपोर्टिंग का उत्कृष्ट उदाहरण है बल्कि शोधार्थियों के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध होगी।"

उन्होंने कहा कि लेखक ने अपनी माताजी की स्मृति में इस पुस्तक का लोकार्पण कर भावनात्मक दृष्टि से इसे और भी सार्थक बना दिया है।

तत्पश्चात, उन्होंने अपनी मौलिक रचना 'मां' का काव्यपाठ कर सभी को भावविभोर कर दिया।

विशिष्ट अतिथि डॉ.शंभू पंवार ने अपने उद्बोधन में मां की महिमा का वर्णन करते हुए कहा — मां जन्म देती है, संस्कार देती है और जीवन का अर्थ सिखाती है। वह केवल व्यक्ति नहीं, एक संस्था है, जो समय और मृत्यु दोनों से परे है। आज का यह आयोजन उन सभी माताओं को नमन है जिन्होंने अपने त्याग, प्रेम और करुणा से हमारे जीवन को अर्थ दिया।"इस अवसर पर काव्यपाठ के सत्र में मां को समर्पित संगोष्ठी में भावनाओं से ओतप्रोत देश भर से आए कवि-कवयित्रियों ने 'मां' विषय पर अपनी मौलिक रचनाएं प्रस्तुत कीं। सभागार ममतामयी भावनाओं से गूंज उठा। श्रोताओं की तालियों और "वाह-वाह" के उद्गारों से पूरा वातावरण भावविभोर हो उठा।

*** अतुल विष्णु प्रभाकर हुए भावुक***

समापन चरण में अतुल विष्णु प्रभाकर ने अपने माता-पिता से जुड़ी स्मृतियों को साझा करते हुए कहा कि "मां का आशीर्वाद सदैव हमारे जीवन में साथ रहता है।" उन्होंने बताया कि कठिन न्यायिक परिस्थितियों में भी माताजी के आशीर्वाद से उनका घर बचा रहा। इस प्रसंग को साझा करते हुए वे कुछ क्षणों के लिए भावुक हो उठे। इस अवसर पर डॉ. कविता मल्होत्रा, डॉ. संदीप तोमर, श्री सुरेन्द्र अरोड़ा, डॉ.गीतांजलि अरोड़ा 'गीत', डॉ. जितेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ. कल्पना पाण्डेय 'नवग्रह', डॉ. अंजू खरबंदा, प्रेम बरेलवी, प्रेम शर्मा 'प्रेम', केदारनाथ 'मसीहा', इरफान राठी, फिरोज़ सैफी सहित अनेक साहित्यप्रेमी उपस्थित रहे।अंत में अतुल विष्णु प्रभाकर ने देश के विभिन्न शहरों से पधारे सभी विद्वतजनों, साहित्यकारों एवं आगंतुकों के प्रति आभार प्रकट किया।

संगोष्ठी का यह ममतामयी आयोजन संवेदना, संस्कार और साहित्य की त्रिवेणी के रूप में यादगार बन गया।

झारखंड के जेलों में कैदियों के लिए नगदी के बदले ऑनलाइन सिस्टम लागू

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। झारखंड की जेलों में अब कैदियों को नगदी (तरल धन) लेनदेन की सुविधा नहीं मिलेगी। झारखंड सरकार ने जेलों में ऑनलाइन बैंकिंग सिस्टम लागू करने की दिशा में कदम बढ़ा दिया है। इस पहल का उद्देश्य है कि कैदियों तक पैसा पहुंचाने में भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी पर अंकुश लगाया जा सके। जेल आईजी सुदर्शन प्रसाद मंडल ने बताया कि अब कैदियों के लिए ऑनलाइन कैश ट्रांसफर सिस्टम शुरू किया जाएगा। इसके लिए पूरी प्रक्रिया तैयार कर ली गई है।

जेल आईजी ने बताया कि हर कैदी का एक अलग ऑनलाइन खाता बनाया जाएगा। कैदी के परिचित या परिजन घर बैठे ऑनलाइन पैसा भेज सकेंगे। यह पैसा सीधे कैदी के खाते में जमा होगा। कैदी इस पैसे का उपयोग जेल कैंटीन से अपनी जरूरत का सामान खरीदने में कर सकेंगे। अब जेल के अंदर नकद पैसे के प्रवेश पर पूरी तरह रोक होगी। अक्सर यह शिकायतें मिलती थीं कि कैदियों तक नकद पैसा पहुंचाने के लिए मुलाकाती या परिजन को जेलकर्मियों को रिश्वत देनी पड़ती थी। इस नई प्रणाली से इस तरह की अनुचित प्रथाओं पर रोक लगेगी और व्यवस्था अधिक पारदर्शी और सुरक्षित बनेगी। जेल प्रशासन का मानना है कि यह कदम न केवल कैदियों की सुविधा बढ़ाएगा, बल्कि जेल प्रबंधन में पारदर्शिता लाने की दिशा में भी एक बड़ा सुधार साबित होगा।

हजारीबाग जिले में नक्सल विरोधी सर्च आपरेशन के दौरान भारी मात्रा में हथियार बरामद

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। झारखंड के हजारीबाग जिले की पुलिस को नक्सल विरोधी अभियान में बड़ी सफलता मिली है। जिला पुलिस और सीआरपीएफ की संयुक्त टीम ने सोमवार को हजारीबाग-बोकारो जिले के सीमावर्ती जंगलों में सर्च ऑपरेशन के दौरान भारी मात्रा में हथियार और सामग्रियां बरामद की हैं।

बरामद वस्तुओं में दो एसएलआर राइफल, मैगजीन, बड़ी संख्या में कारतूस, पिट्ठू बैग, वर्दी, दस्तावेज और अन्य नक्सली सामान शामिल हैं। हजारीबाग के एसपी को गुप्त सूचना मिली थी कि नक्सलियों का एक दस्ता सीमावर्ती इलाके में सक्रिय है और किसी बड़ी घटना को अंजाम देने की साजिश रच रहा है।

सूचना के आधार पर पुलिस ने अभियान की रूपरेखा तैयार की और सुबह तड़के बलों को जंगल की ओर रवाना किया गया। सर्च ऑपरेशन के दौरान जंगल के एक गुप्त ठिकाने से नक्सलियों द्वारा छिपाई गई हथियारों की खेप और विस्फोटक सामग्री बरामद हुई। छापेमारी की भनक मिलते ही नक्सली मौके से भाग निकले।

इससे पहले सितंबर महीने में इसी इलाके में पुलिस और सुरक्षा बलों के संयुक्त ऑपरेशन में सोमवार सुबह एक करोड़ के इनामी माओवादी नक्सली सहदेव सोरेन उर्फ प्रवेश सहित कुल तीन नक्सली मारे गए थे। यह मुठभेड़ जिले के बरकट्ठा-गोरहर थाना क्षेत्र के जंगल में हुई थी।

भाकपा माओवादी संगठन हाल में पुलिस मुठभेड़ की घटनाओं में अपने कई साथियों के मारे जाने के विरोध में 8 अक्टूबर से 14 अक्टूबर तक प्रतिरोध सप्ताह मना रहा है। इस दौरान हिंसा फैलाने की उनके मंसूबों की खुफिया रिपोर्ट के आधार पर झारखंड पुलिस मुख्यालय ने सभी नक्सल प्रभावित जिलों को अलर्ट कर रखा है।

शाम तक सौ हायवा पहुंचा अवैध बालू उठाने जागोरडीह, एन जी टी आदेश को ठेंगा

लोगों ने प्रशासन को बताया था कौन और कैसे लेते है बालू से रोकड़ा

के के परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला। सोमवार शाम छह बजे तक ईचागढ़ थाने के जरगोडी बालू घाट में 100 से ऊपर हाईवा अवैध बालू लेने पहुंचे हुए है, यह नित्य की सच्चाई है यहां। यह आलम है एन जी टी के उस सख्त आदेश का जिसे स्थानीय परिदृश्य में किस कदर उपेक्षित किया जाता साफ परिलक्षित है! इलाके के विभिन्न स्थानों से तकरीबन 200 हायवा अवैध बालू लेकर नगरों में, दुसरे राज्यों में नियमित जाता हैं। जिससे सरकारी खजाने को नित्य भारी भरकम चुना लग रहा है। यह तस्करी ईचागढ़ थाने के दो मुन्सी में से एक नये मुंशी द्वारा अंजाम दिया जाता रहा है। बताया जाता है कि सभी बालू माफिया और गाड़ी ओनर उक्त दिलेर मुन्सी को लेकर चलते। ऊंची पहुंच वाले इन तस्करों के हाईवा वाहन के ड्राइवर तथा गरीब ट्रेक्टर चालक- खलासियों के बीच शुक्रवार को थाने समीप हाथापाई भी हुई है, पुलिस हस्तक्षेप से मामला शांत हुआ है। जो प्रशासन द्वारा जांच का विषय था पर मामले की गंभीरता या पोल न खूल जाए, बाद में ट्रेक्टर को रोक में ढील दी गयी। बताया जाता है कि हाईवा मे अवैध बालू परिवहन के एवज में गाड़ी निकालने के बाद या निकालने से पहले एक मोटी रकम प्रति ट्रिप थाने को देना होता है। उल्लेखनीय है कि कुछ दिन पूर्व उपायुक्त के समक्ष इलाके के लोगों ने इस बात की जानकारी उन्हें दी थी, जहां उपायुक्त सरायकेला खरसावां नितीश कुमार सिंह ने एस पी को ऐन वक्त पर ध्यान देने को कहा था। पर नतीजा ढाक के तीन पात निकला।

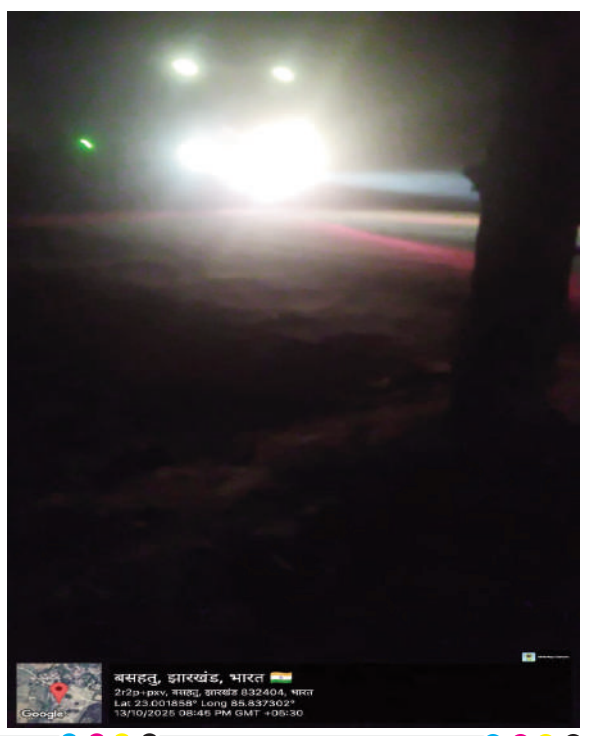

पंजाब सरकार ने निभाया वादा, सिर्फ़ 30 दिनों में सबसे ज़्यादा मुआवजा देकर रचा इतिहास

अजनाला (अमृतसर), 13 अक्टूबर (साहिल बेरी)

सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में एक नया मील का पत्थर स्थापित करते हुए, पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने बाढ़ पीड़ितों को मुआवजा वितरित करने के लिए अपनी निर्धारित 45 दिनों की समय सीमा के बावजूद 30 दिनों के भीतर इस सबसे अधिक प्रभावित जिले के 631 लाभार्थियों को 5.70 करोड़ रुपए के चेक वितरित किए।

बाढ़ पीड़ितों को मुआवजा वितरित करने के लिए आयोजित समारोह में सभा को संबोधित करते हुए, मुख्यमंत्री ने कहा कि 11 सितंबर को उन्होंने घोषणा की थी कि विशेष गिरदावरी करवाने के बाद 45 दिनों के भीतर मुआवजा वितरण शुरू कर दिया जाएगा। भगवंत सिंह मान ने कहा कि हालांकि 45 दिनों की यह समय सीमा 28 अक्टूबर को समाप्त हो रही है, लेकिन राज्य सरकार ने अपनी अथक कोशिशों के माध्यम से समय से पहले ही मुआवजा वितरण शुरू कर दिया है। उन्होंने इस कार्य के लिए मेहनत करने वाले राजस्व विभाग के अधिकारियों और जिला प्रशासन का धन्यवाद किया।

मुख्यमंत्री ने बाढ़ पीड़ितों के प्रति तहेदिल से हमदर्दी जताते हुए कहा कि इस प्राकृतिक आपदा के कारण पंजाब के कई जिलों में जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ। उन्होंने कहा कि परमात्मा की कृपा से पंजाब इस आपदा से उबरने में कामयाब रहा। उन्होंने कहा कि कोई अन्य राज्य इस तरह की आपदा से इस तरह नहीं निकला, जैसा कि पंजाब की यह पवित्र धरती निकली। भगवंत सिंह मान ने कहा कि राज्य सरकार देश और विदेश में बैठे हर उस व्यक्ति की ऋणी है, जिसने इन मुश्किल समय में लोगों का दुख साझा किया और उनकी ओर मदद का हाथ बढ़ाया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बाढ़ के कारण केवल पंजाब के किसानों को ही नुकसान नहीं हुआ, बल्कि पूरे देश को नुकसान हुआ क्योंकि पंजाब देश के खाद्य भंडार में सबसे अधिक योगदान देता है। उन्होंने कहा कि यह बहुत गर्व और संतुष्टि की बात है कि हमारे किसानों की कड़ी मेहनत के कारण देश में कोई भूखा नहीं सोता। भगवंत सिंह मान ने कहा कि पंजाब के सैनिक देश की सीमाओं की रक्षा के लिए अपनी जान न्योछावर करते हैं और पंजाब के किसान देश की खाद्य सुरक्षा की रक्षा करते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पंजाबी हमेशा से अपने मेहनती स्वभाव के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने कहा कि भले ही यह संकट गंभीर था, लेकिन हमारा हौसला इससे भी मजबूत था। उन्होंने कहा कि खास तौर पर माझा क्षेत्र के लोगों को सबसे पहले मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं क्योंकि भारत-पाकिस्तान तनाव के दौरान वे लगातार खतरे के माहौल में रहते हैं और दूसरा, उन्हें बाढ़ के कारण नुकसान का सामना करना पड़ता है। भगवंत सिंह मान ने कहा कि लोगों की मदद के लिए राज्य सरकार ने मिशन चढ़दी कला की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि चढ़दी कला का मतलब मुश्किल समय में भी हौसला बनाए रखना और अंधेरे में भी उम्मीद की किरण जगाए रखना है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए मिशन चढ़दी कला में योगदान देने के लिए उन्होंने विश्व भर के समाजसेवियों से अपील की थी। उन्होंने कहा कि दानी सज्जन रंगला पंजाब पोर्टल के माध्यम से बड़ी संख्या में उदारता से योगदान दे रहे हैं। भगवंत सिंह मान ने कहा कि आज गुरु की नगरी अमृतसर से बाढ़ पीड़ितों को मुआवजा वितरण की शुरुआत हुई है।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि अमृतसर जिले में बाढ़ के कारण 198 गांव प्रभावित हुए और विशेष गिरदावरी की रिपोर्ट के अनुसार 59,793 एकड़ से अधिक क्षेत्र में फसलें नष्ट हुईं। उन्होंने कहा कि 958 मकान पूरी तरह बर्बाद हो गए और 3,711 मकानों को आंशिक नुकसान हुआ। उन्होंने कहा कि 307 पशुओं का भी नुकसान हुआ। भगवंत सिंह मान ने कहा कि समय पर मुआवजा वितरण और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए पहली बार गिरदावरी ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से की गई।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बाढ़ के दौरान अमृतसर जिले में 10 लोगों की जान गई और प्रत्येक पीड़ित परिवार को मुआवजे के रूप में पहले ही चार लाख रुपये दे दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि जिले के 669 प्रभावित व्यक्तियों को फसलों, मकानों और पशुओं के नुकसान के लिए कुल छह करोड़ रुपये और सात लाख रुपये का मुआवजा दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि बाकी बचे लाभार्थियों को भी जल्द ही उनके बैंक खातों में मुआवजा मिल जाएगा।

वर्ल्ड ऐड्स डे पर राउरकेला विधि कॉलेज के प्रधानाध्यापक द्वारा सम्मानित हुए जगन्नाथ घासी

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला : राउरकेला विधि कॉलेज के विद्यार्थी जगन्नाथ घासी को प्रधानाध्यापक बिभू रंजन पटनायक ने वर्ल्ड एड्स डे में आयोजित ब्लड डोनेशन कैंप में सक्रिय भूमिका निभाने हेतु श्री जगन्नाथ घासी को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। कॉलेज प्रबंधन के ओर से प्रोफेसर सम्पादिका मोहन्ती, प्रोफेसर प्रज्ञा परमिता पंडा व अन्य उपस्थित थे।

वहीं अन्य विद्यार्थियों ने भी उनके इस सामाजिक सरोकार के उद्देश्य से किए गए इस पुण्य कार्य हेतु उन्हें बधाई दी। इस मौक़े पर अन्य मौजूदगी के रूप मे डॉ राजकुमार यादव, शर्मिष्ठा मोहन्ति, अनमोल केरकेट्टा, इंद्रजीत बिरुआ, पुष्पा राज, श्रुती सेठी, राहुल दास व अन्य मौजूद थे।

नगर निगम अमृतसर के मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने शहर के लोगों को दिया दिवाली का तोहफा तोहफा

अमृतसर 13 अक्टूबर (साहिल बेरी)

दिवाली के मौके पर किसी भी तरह की अप्रिय घटना को रोकने और शहर के लोगों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए फायर ब्रिगेड को छह और नई गाड़ियां दी हैं । इन गाड़ियों का उद्घाटन करते हुए, मेयर जितेंद्र सिंह भाटिया ने कहा कि वे गुरु नगरी अमृतसर की बेहतरी और यहां के लोगों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि दिवाली के मौके पर आतिशबाजी के कारण आग लगने की घटनाएं आम से ज़्यादा होती हैं। इसके साथ ही कई बार जान-माल का नुकसान भी हो जाता है।

मेयर भाटिया ने कहा कि इस नुकसान को रोकने के लिए नगर निगम अमृतसर द्वारा पहले ही प्रयास किए जा चुके हैं, जिसके तहत निगम ने फायर ब्रिगेड को छह और गाड़ियां दी हैं, जिससे अब फायर ब्रिगेड के पास 20 गाड़ियां हो गई हैं । उन्होंने बताया कि आज फायर ब्रिगेड को जो छह नई गाड़ियां दी गई हैं, उनमें तीन बड़े फायर टेंडर, एक छोटा फायर टेंडर, एक छोटा फायर टेंडर कम रेस्क्यू वाहन और एक अन्य सुरक्षा गाड़ी उपलब्ध कराई गई है। उन्होंने कहा कि नगर निगम अमृतसर का फायर ब्रिगेड विभाग अटारी बॉर्डर से लेकर ब्यास और डेरा बाबा नानक तक लोगों की सेवा कर रहा है। उन्होंने कहा कि शहर में कूड़े की समस्या का भी जल्द ही समाधान किया जा रहा है और आने वाले दिनों में अमृतसर शहर चमकता हुआ दिखाई देगा, जिसके लिए स्थानीय लोगों को भी नगर निगम का सहयोग करना चाहिए । उन्होंने कहा कि बीते दिन 41 करोड़ की लागत से श्री हरमंदिर साहिब जाने वाली चार प्रमुख सड़कों को विरासत की शक्ल देने का नया काम शुरू किया गया है, इसके अलावा शहर की सड़कों की मरम्मत भी कराई जा रही है।

झारखंड के पलामू मे अनोखे तरीके से मना वन्य जीव सप्ताह शिकारियों ने मां केशरचंडी के समक्ष डाला आग्नेयास्त्र

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची। झारखंड के पलामू टाइगर रिजर्व के 53 वर्षों के इतिहास में पहली बार वन्य प्राणी सप्ताह कोऐतिहासिक रूप दिया गया. इसका फायदा ये हुआ कि जंगल और वन्य जीवों के संरक्षण का संदेश सीधे स्थानीय लोगों के दिलों तक पहुंचा. इस बार वन विभाग ने ग्रामीणों की आस्था और परंपरा को जोड़कर इस कार्यक्रम को यादगार बना दिया. वन्य प्राणी सप्ताह के दौरान ग्रामीणों ने केशराचंडी और वन देवी की पूजा अर्चना में भाग लेकर न केवल अपने आराध्य देवी के प्रति भक्ति दिखाई, बल्कि जंगल और जानवरों की सुरक्षा के लिए देशी बंदूकें, गुलेल और अन्य पारंपरिक हथियारों को समर्पित कर समर्पण का संदेश दिया. इसके साथ ही तय किया गया कि हर साल 2 से 8 अक्टूबर तक केशराचंडी और वन देवी की पूजा अर्चना जारी रहेगी.

पहले वन्य प्राणी सप्ताह केवल स्कूल-कॉलेज के बच्चों तक सीमित होता था, लेकिन इस बार इसके दायरे को बढ़ा दिया गया. जादू का खेल, प्रवचन कथा और महायज्ञ का आयोजन किया गया. 18 किलोमीटर दूर डोमाखाड़ से गारू पूजा स्थल तक कलश यात्रा निकाली गई. प्रवचन कथाओं में भगवान श्रीराम की मदद करने वाले बंदर, हनुमान और भालू सहित अन्य जंगली जीवों का उदाहरण पेश कर राम की महिमा और देवी मां दुर्गा, मां काली का वन्य प्राणियों से प्रेम दर्शाया गया. इससे ग्रामीणों में न केवल जागरूकता आई, बल्कि शिकारियों के मन में भी बदलाव आया. वन विभाग के अधिकारियों की सूझबूझ और योजनाओं के चलते पूरे 10 दिनों तक उत्सव का माहौल बना रहा.

पलामू टाइगर रिजर्व के घने जंगलों में रहने वाले लोग पहले से ही केशराचंडी देवी और वन देवी की पूजा करते रहे हैं. इस बार वन विभाग ने स्थानीय बैगा समुदाय के माध्यम से देवी की स्थापना और पूजा अर्चना कराई, जिससे ग्रामीणों का विश्वास और जुड़ाव बढ़ा. मान्यता है कि केशराचंडी की पूजा से बाघ सहित अन्य जंगली जानवरों की सुरक्षा सुनिश्चित होती है.

पलामू टाइगर रिजर्व के डिप्टी डायरेक्टर कुमार आशीष और रेंजर उमेश कुमार दुबे ने बताया कि इस बार वन्य प्राणी सप्ताह को अनोखे रूप में प्रस्तुत किया गया. स्थानीय पंचायत, जनप्रतिनिधि और बुद्धिजीवियों के सहयोग से यह कार्यक्रम सफल हुआ. उमेश कुमार ने कहा, "स्थानीय परंपराओं और अनुष्ठानों को जोड़कर ही जंगल और वन्य जीवों के संरक्षण में जनता का भरपूर सहयोग मिल सकता है."

भुवनेश्वर में एक ही दिन में चार बड़ी घटनाएं, दो हत्याएं, हॉस्टल में सेंधमारी, मारपीट और डकैती

मनोरंजन सासमल , वरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: असुरक्षित राजधानी। एक ही दिन में चार बड़ी वारदातें। दो हत्याएँ, एक हॉस्टल पर हमला और एक डकैती। भुवनेश्वर एम्स के एक सोसिंग कर्मचारी की हत्या कर दी गई है। माना जा रहा है कि हत्या पारिवारिक विवाद के चलते हुई। पुलिस गिरफ्तार किए गए तीनों लोगों से पूछताछ कर रही है।गोलीबारी की घटना की वैज्ञानिक जाँच चल रही है। पुलिस आयुक्त सुरेश देवदत्त सिंह ने बताया कि अवैध बंदूक कहाँ से आई, इसकी जाँच की जा रही है। मृतक सुधांशु खुंटिया का घर खंडगिरी थाना क्षेत्र के सरकंतारा गाँव में है। वह एम्स में आउटसोर्स कर्मचारी थे। वह लैब असिस्टेंट के पद पर कार्यरत थे। सुधांशु की कथित तौर पर ज़मीन विवाद में हत्या कर दी गई। सुधांशु के बड़े बेटे ने अपने रिश्तेदारों पर हत्या का आरोप लगाया है। आज ड्यूटी जाते समय एक बदमाश ने उनका पीछा करके गोली मार दी। उन्होंने तीन राउंड फायरिंग की और भाग गए। लेकिन पुलिस ने घटनास्थल से चार राउंड गोलियां बरामद की हैं।

नुआपाड़ा उपचुनाव अधिसूचना: 11 नवंबर को मतदान, 14 को नतीजे

मनोरंजन सासमल , वरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: ओडिशा के मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने नुआपाड़ा उपचुनाव के लिए विधिवत अधिसूचना जारी कर दी है। आज से नामांकन दाखिल करने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। उम्मीदवार 20 अक्टूबर तक नामांकन दाखिल कर सकते हैं। नामांकन पत्रों की जाँच 22 अक्टूबर को होगी। इसी तरह, नामांकन पत्रों की जाँच 22 अक्टूबर को होगी और नामांकन वापस लेने की अंतिम तिथि 24 अक्टूबर है।मतदान 11 नवंबर को होगा और 14 तारीख को मतों की गिनती और परिणाम घोषित किए जाएँगे। मुख्य चुनाव अधिकारी ने बताया है कि नुआपाड़ा उपचुनाव की सभी प्रक्रियाएँ 16 तारीख तक पूरी कर ली जाएँगी।

ओडिया मेडिकल छात्रा से बलात्कार की घटना मे ओडिशा से दो सदस्यीय टीम दुर्गापुर में

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : देश भर में सनसनी मचाने वाली उड़िया मेडिकल छात्रा के साथ बलात्कार की घटना के बाद पश्चिम बंगाल पुलिस ने जाँच तेज़ कर दी है। पुलिस ने दुर्गापुर में घटनास्थल की जाँच के बाद चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। दूसरे आरोपी की तलाश जारी है, जो फेरारा में है।

पश्चिम बंगाल के दुर्गापुर में एक ओडिया छात्रा के साथ बलात्कार करने वालों ने छात्रा को घसीटकर सुनसान जगह पर ले जाकर क्रूरता की सारी हदें पार कर दीं। आरोपियों के खिलाफ सबूत मिलने के बाद पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया है। अदालत में पेशी के बाद पुलिस ने आरोपी को 10 दिन की रिमांड पर लिया है। अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए जगह-जगह छापेमारी जारी है।

आरोपियों को गिरफ्तार करने के बाद पुलिस ने घटनास्थल पर जाकर जाँच की। आसनसोल दुर्गापुर पुलिस आयुक्तालय ने घटनास्थल का दौरा किया और उस दिन घटनास्थल पर क्या हुआ था? घटनास्थल पर कितने लोग थे? पश्चिम बंगाल पुलिस ने जाँच की कि क्या उस समय कुछ लोगों के मोबाइल फोन चालू थे। वैज्ञानिक टीम ने भी घटनास्थल से जानकारी एकत्र की है।

पश्चिम बंगाल पुलिस ने इस घटना की जाँच तेज कर दी है और पीड़िता का परिवार पूरी तरह से सदमे में है। पीड़िता के पिता ने कहा है कि वह लड़की को इलाज के लिए ओडिशा ले जाएँगे। ओडिशा सरकार की एक टीम सहयोग के लिए वहाँ पहुँच गई है।

शिकायत के अनुसार, छात्रा अपने एक दोस्त के साथ कैंपस के बाहर टहल रही थी, तभी कुछ बदमाशों ने उसका पीछा किया। जब सहेली डरकर भाग गई तो बदमाशों ने छात्रा को एकांत स्थान पर खींच लिया और उसके साथ दुष्कर्म किया।ओडिशा से दो सदस्यीय उच्चस्तरीय टीम पश्चिम बंगाल के दुर्गापुर पहुँची। मुख्यमंत्री के निर्देश पर बालासोर के एडीएम और एडिशनल एसपी पहुँचे। आसनसोल-दुर्गापुर पुलिस कमिश्नर कार्यालय में चर्चा हुई। पीड़िता के पिता और कुछ अन्य सहयोगी भी मौजूद रहे। इस बीच, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने दुर्गापुर की घटना पर अलग राय दी है।उन्होंने कहा कि किसी भी लड़की को रात में बाहर नहीं निकलने देना चाहिए। दुर्गापुर में ओडिशा की एक मेडिकल छात्रा के साथ हुए सामूहिक बलात्कार की घटना पर राजनीति गरमाने के बाद मुख्यमंत्री ममता बनर्जी नाराज़ हैं। उन्होंने दूसरे राज्यों में हो रही सामूहिक बलात्कार की घटनाओं का ज़िक्र तो किया, लेकिन अपनी गलती मानने को तैयार नहीं हैं। ममता ने कहा कि आप मुझे बताइए कि तीन हफ़्ते पहले ओडिशा के एक समुद्र तट पर तीन लड़कियों के साथ बलात्कार हुआ था। उन्होंने पूछा कि ओडिशा सरकार ने क्या कार्रवाई की। उन्होंने कहा, अगर बंगाल में महिलाओं के साथ कुछ होता है, तो हम इसे सामान्य घटना नहीं मानते।

उनकी बातों से साफ़ है कि उन्होंने ओडिशा के बारे में भ्रामक जानकारी दी है। उन्होंने कहा, बाहर से पश्चिम बंगाल में पढ़ाई करने आने वाली छात्राओं को रात में बाहर नहीं निकलने देना चाहिए।

पलामू स्वास्थ्य विभाग के बीपीएम पांच हजार लेते एससीबी के हत्थे चढ़ा

कार्तिक कुमार परिच्छा स्टेट हेड - झारखंड

रांची। पलामू एससीबी की टीम ने लातेहार में रिश्वतखोरी के खिलाफ एक बड़ी कार्रवाई की है. जिसमें सदर प्रखंड स्वास्थ केंद्र में पदस्थापित बीपीएम अजय भारती को सोमवार को पांच हजार रुपए घूस लेते रंगे हाथ गिरफ्तार कर किया गया. आरोपी द्वारा एक एएनएम से रिश्वत की मांग की जा रही थी. एएनएम की शिकायत पर ही एसीबी की टीम ने कार्रवाई करते हुए आरोपी को रंगेहाथों गिरफ्तार कर लिया. एसीबी की टीम आरोपी को गिरफ्तार कर पलामू ले गई है.

दरअसल, लातेहार प्रखंड स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत एक एएनएम का कॉन्ट्रैक्ट रेगुलर करने के बदले प्रभारी बीपीएम अजय भारती द्वारा 10 हजार रुपए रिश्वत की मांग की जा रही थी. रिश्वत नहीं देने के कारण उनका फाइल अटका हुआ था. परेशान होकर एएनएम ने इसकी शिकायत पलामू एंटी क्राइम ब्यूरो की टीम से की.

इसकी शिकायत मिलने के बाद एंटी क्राइम ब्यूरो विभाग द्वारा अपने स्तर से पूरे मामले की छानबीन गयी तो पाया कि एएनएम के द्वारा लगाया जा रहा आप पूरी तरह सत्य हैं. इसके बाद एसीबी की टीम ने आरोपी बीपीएम को रंगेहाथ गिरफ्तार करने की योजना तैयार की.

इसके तहत एएनएम आरोपी बीपीएम से मिली फाइल बढ़ाने की गुहार लगाने लगी. प्रभारी बीपीएम ने कम से कम 5 हजार रुपये तत्काल देने और शेष राशि काम होने के बाद देने की बात कही. सूचक ने इसकी जानकारी एसीबी को दी. इसके बाद सोमवार को एसीबी की टीम ने सूचक को पैसे देकर आरोपी के पास भेजा. आरोपी बीपीएम ने जैसे ही रिश्वत के पैसे लिए वैसे ही एसीबी की टीम ने उसे रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया. बाद में आरोपी को निगरानी की टीम अपने साथ उसके घर ले गई और घर की भी छानबीन की. पूरी कागजी प्रक्रिया करने के बाद आरोपी को गिरफ्तार कर अपने साथ पलामू ले गई।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023